...व-विचार-माला — क्र. का दर्व

भावेश-विचार

१

नागपुर प्रकाशन, नागपुर।

आवेश-विचार

मूल मराठी लेखक
स्व. ज्योर्तिविद ह्. ने. काटवे

संशोधित हिन्दी अनुवाद

८ जानेवारी
१९७०

मूल्य
चार रुपये

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर-१

प्रकाशक :
अशोक दिगंबर घुमाळ, बी. कॉम.
नागपुर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर–१.

मुद्रक :
ल. म. पटले,
रामेश्वर प्रिंटिंग प्रेस,
सीताबर्डी, नागपूर–१

अनुक्रमणिका

अद्वितीय अमूल्य ग्रंथ

अध्यात्म-ज्योतिषविचार

लेखकः—ज्योतिषशास्त्रज्ञ कै. ह. ने. काटवे

दैवज्ञराज्य ज्योतिषी
पं. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी
ज्योतिषाचार्य—ज्योतिर्रत्न
सामुद्रिक शास्त्री

दैवज्ञ—भवन
नरसिंहगढ़
(मध्यप्रदेश)

पुस्तक अध्यात्मिक ज्योतिष विचार का अवलोकन किया, जिसमें १८ परिच्छेद हैं—उनमें वेदान्त और ज्योतिष का पूर्ण समन्वय तथा सव ग्रहोंका, राशियोंका द्वादश भावोंपर जो वेदान्त पक्ष पक्ष दर्शाया है वहुतही गहन विषय है। साथही षटचक्र के साथ ग्रहोंका लक्ष चित्रपट पर अच्छे रुपमें समझाया है। पूर्व-जन्मका संशोधन कर वडे २ महात्माओंकी कुंडली पर अच्छा दिग्दर्शन कराया है। लेखक महाशयने वड़े परिश्रम के साथ अनुभवी ज्योतिष विद्याके आधारसे वेदान्त को घटाया है। यह वड़े चमत्कारकी वातोंका अनुभव ज्योतिषीयों तथा जनताको इस पुस्तक से लेना चाहिये। यह ग्रंथ ज्ञानप्राप्ति और ग्रहों तथा भावोंके फल कहनेमें निरालाही देख पड़ता है। लेखक को सहर्ष धन्यवाद। आशा है की हिन्दी जगतमें अध्यात्मिक ज्योतिष विचार पुस्तक का स्वागत होगा।

पं. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी

भावेश-विचार

प्रकरण १

भावेश का स्वरूप

जातकशास्त्र में जन्मकुण्डली से फलादेश बतलाने के जो प्रकार कहे गये हैं उन में भावेश–फल भी एक है। मोटे तौर पर भावेशफल में यह बताया जाता है कि एक भाव का स्वामी दूसरे किसी भाव में होने पर क्या फल देता है। उदाहरणार्थ–लग्न का स्वामी पंचम या भाग्य स्थान में हो तो शुभ फल देता है।

भावेशफल के सम्बन्ध में कुछ बातें विचार करने योग्य हैं। भावेश याने भाव का स्वामी यह अर्थ है। यह शुभ ग्रह हो या पाप ग्रह हो तो उसके फल समान मिलेंगे या भिन्न मिलेंगे ? उदाहरणार्थ–लग्नेश धन-स्थान में हो तो कुटुम्ब का सुख मिलता है, सुख से भोजन होता है, लेन देन के व्यवहार में कुशलता प्राप्त होती है, धन का संग्रह होता है ये फल बताये गये हैं। लग्नेश शुभ ग्रह या पापग्रह हो तो इस फल में क्या कोई अन्तर पडेगा ? एक कुण्डली में वृश्चिक लग्न है तथा धनस्थान में धनु में मंगल है। दूसरी कुण्डली में मकर लग्न है तथा धनस्थान में कुम्भ में (स्वगृह में) शनि है। तीसरी कुण्डली में तुला लग्न है तथा धनस्थान में वृश्चिक में शुक्र है। क्या इन तीनों लग्नेशों के फल समान मिलेंगे ? यह भी विचारणीय है कि उपर्युक्त कुंडलियों में मंगल, शनि तथा शुक्र के धनस्थान में होने के विशेष फल मिलेंगे या नही ? इसी तरह मंगल धनु में शनि कुम्भ में तथा शुक्र वृश्चिक में होने के अपने विशिष्ट फल देंगे या नही ? या केवल लग्नेश धनस्थान में हैं इसी पर से फल देखे जायेंगे ?

दूसरी विचारणीय बात यह है कि रवि तथा चन्द्र को छोडकर शेष ग्रहों को दो–दो राशियों का स्वामी बताया गया है। मंगल मेष व

वृश्चिक का, बुध मिथुन व कन्या का, गुरु धनु व मीन का, शुक्र वृषभ व तुला का तथा शनि मकर व कुम्भ का स्वामी कहा गया है। इस कारण एक ग्रह दो स्थानों का स्वामी होता है। वृश्चिक लग्न हो तो मंगल लग्नेश भी है तथा षष्टेश भी है। यह यदि धनस्थान में हो तो ऊपर लग्नेश धनस्थान में होने के जो शुभ फल बताये हैं उनके साथ षष्ठेश धनस्थान में होने के जो अशुभ फल बतलाये हैं–कि पैतृक जायदाद के बारे में झगडे. परिवार में झगडे, स्वभाव झगडालू होना, लडकों द्वारा धन का अपहरण, सुख से भोजन न मिलना ये षष्ठेश धनस्थान में होने के फल हैं–वे भी बतलाना चाहिये या नही ?

वराहमिहिर आदि पुराने लेखकोंने (जो सन १२०० के पहले हुए हैं) भावेशों के फल नही बतलाये हैं। पहले अरब ज्योतिषियों ने तीसरी शताब्दी में दिनवर्ष पद्धति तथा भावेशों के फल इजिप्त व ग्रीस के ज्योतिषियों में प्रचारित किये। हमारे देश में यवनजातक में इस का पहले वर्णन मिलता है। तदनन्तर लोमेशसंहिता, मानसागरी, केरल-जातक. शुक्रजातक, शुकफक्किका, जातकपारिजात, जातकालंकार आदि में भावेशफल बताये गये हैं। आधुनिक समय में स्व. श्री नवाथेजी के सुलभजातक में इस विषय की कुछ चर्चा मिलती है।

साधारणतः लग्न आदि बारह भावों में कुण्डली में जो राशि हो उसी के स्वामी को उस भाव का भावेश समझा जाता है। इस मान्यता के अनुसार जैसे जैसे राशियां बदलें वैसे वैसे भावेश भी बदलते हैं। किन्तु प्राचीन आचार्य भाव और राशि को एक ही नही समझते। उन के अनुसार भाव का अर्थ है आकाश के निश्चित विभाग। तथा इन विभागों के स्वामी भी निश्चित हैं। प्रथम भाव रवि का है। दूसरे भाव का स्वामी गुरु तथा तीसरे भाव का स्वामी मंगल है। चौथे भाव पर चन्द्र व बुध का अधिकार है। पांचवे भाव का स्वामी गुरु है। षष्ठ भाव शनि व मंगल के तथा सप्तम भाव शुक्र के अधिकार में है। अष्टम

भावेश शनि, नवमेश रवि व गुरु हैं। दशम भाव पर गुरु, रवि, बुध व शनि का अधिकार है। लाभेश गुरु व व्ययेश शनि है। इस में शुक्र व चन्द्र का एक एक, बुध व मंगल के दो-दो, रवि के तीन, शनि के चार तथा गुरु के पांच भाव होते हैं। नवाथेजी के सुलभजातक में लग्नेश रवि, धनेश गुरु, तृतीयेश मंगल, सुखेश चन्द्र, पुत्रेश गुरु, षष्ठेश मंगल, सप्तमेश शुक्र, अष्टमेश शनि, नवमेश गुरु, दशमेश बुध, लाभेश गुरु तथा व्ययेश शनि बतलाया है। इसमें एक भाव का एक ही स्वामी बतलाया है-पुरानी पद्धति से एक एक भाव पर कई ग्रहों का अधिकार माना जाता था। इस पद्धति में बुध, रवि, चन्द्र व शुक्र एक एक भाव के, मंगल व शनि दो-दो भावों के तथा गुरु चार भावों का स्वामी होता है। वस्तुतः ये जो ग्रह भावेश बतलाये हैं इन्हीं का फल देखना चाहिये। उस भाव में उदित राशि के स्वामी को भावेश मान कर फल देखना उपयोगी नही होता। उदाहरणार्थ-लग्नेश रवि बतलाया है, अतः लग्नेश पंचम भाव में होने के जो फल हैं वे रवि के पचमस्थान में होने पर ही मिलेंगे। ये फल हैं-अभिमानी होना, सन्तान का सुख मध्यम मिलना, पहली सन्तान की मृत्यु, क्रोधी स्वभाव तथा राजकार्य में प्रवेश होना। यदि लग्न में तुला राशि उदित हो तो प्रचलित रीति के अनुसार शुक्र लग्नेश होगा, वह पंचम में हो तो उपर्युक्त फल बताने पडेंगे जिनका अनुभव नही आता। अतः वर्तमान पद्धति में जो भावों में उदित राशियों के स्वामियों को भावेश समझकर फल बताये जाते हैं इस में संशोधन करना चाहिये। तथा ऊपर जो प्रत्येक भाव के निश्चित भावेश बताये हैं उनकी स्थिति के अनुसार फल देखना चाहिये। किन्तु ज्यादातर ज्योतिषशास्त्रकर्ताओंने राशियों के स्वामी को ही भावेश समझकर फल बतलाये हैं। अतः इनमें जैसे राशियाँ बदलती हैं, वैसे फलोंमें भी फर्क होता है। आगे हमने पुराने लेखकों के फलवर्णनों पर हमारे विचार दिये हैं उसमें इसका विवरण देने का प्रयास किया गया है।

प्रकरण २

भावेश फल की उपयोगिता

प्राचीन समय में कुण्डली में बारह राशियों में जैसे ग्रह हों उसके अनुसार फल बताये जाते थे। इस प्रकार के फलादेश में कई बार अधूरापन दिखनेसे भावेशों के फलों का विचार शुरू हुआ। उस प्राचीन समय में ग्रहों के फलों के बारे में विशेष संशोधन नही हुआ था। प्रत्येक आचार्यने अपने अपने विचार बताये थे। अतः उनकी उपयोगिता के बारे में विचार करना आवश्यक है। स्व. श्री नवाथेजीने अपने सुलभ-जातक में भावेशफल के विषय में निम्नलिखित विचार प्रकट किये हैं— किसी भाव के प्रारंभ में कोई ग्रह हो या उस भाव के मध्य में वह ग्रह हो तो उस भाव का फल मुख्यतः उसी ग्रह पर अवलंबित होगा। ऐसे समय भावेश के फल का विशेष महत्व नही होता। किसी भाव में स्थित ग्रह उत्तम फल देनेवाला हो तथा उस भाव का स्वामी (भावेश) अशुभ फल देनेवाला हो तो भावेश के अशुभ फल का अनुभव नही आयेगा—भावस्थित ग्रह का अच्छा फल ही मिलेगा। इसी प्रकार भावेश शुभ फल देनेवाला हो किन्तु भाव में स्थित ग्रह अशुभ फल देनेवाले हों तो भावेश के शुभ फल न मिल कर भावस्थित ग्रह के अशुभ फल ही मिलेंगे। उदाहरणार्थ, मेष लग्न हो तो मंगल लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेष भी है तथा लग्न वृश्चिक होने पर मंगल लग्नेश होने के साथ साथ षष्ठेश भी होता है। अब साधारणतः लग्नेश के फल शुभ तथा षष्ठेश व अष्टमेष के फल अशुभ माने गये हैं। अतः ऐसी स्थिति में मंगल के फल कैसे निश्चित करेंगे यह सोचना चाहिए। तत्त्व की दृष्टि से षष्ठेश शत्रुत्व, असफलता व रोगों का कारक है। तथा अष्टमेष अकस्मात तथा बिना वारिस का धन देनेवाला होता है। लग्नेश से आत्मा, मन, बल, रूप, आयु आदि का फल निश्चित होगा। अतः लग्नेश ही षष्ठेश हो तो लग्नेश के बल, रूप, आयु आदि फलों में

षष्ठेश के रोग, असफलता आदि फलों का मिश्रण होगा। ग्रह की स्वाभाविक शक्ति शुभ व अशुभ दो स्थानों का स्वामित्व मिलने पर बांटी जायेगी। अतः उसके फलों में कुछ कमी हो जायेगी। इस प्रकार भावेश का फल ग्रहों के योग फल से कम दर्जे का है। इस वक्तव्य के अनुसार नवाथेजी भावेश फल को विशेष महत्व नही देते। उन्होंने जैसे मंगल में शुभ-अशुभ दोनों स्थानों का स्वामित्व वतलाया है उसी प्रकार शुक्र भी दो-दो स्थानों का स्वामी होता है–तुला लग्न होने पर लग्नेश–अष्टमेष तथा वृषभ लग्न होने पर लग्नेश–षष्ठेश होता है। अतः इस के फल भी मिले-जुले बताने पड़ेंगे। किन्तु बुध जब मिथुन लग्न का स्वामी हो तव चतुर्थेश होता है तथा कन्या लग्न का स्वामी हो तब दशमेश होता है–यहां दोनों स्थानों का स्वामित्व शुभ है, इसका समुचित विचार नवाथेजी के वक्तव्य में नही पाया जाता। कई बार ऐसा अनुभव आता है कि किसी भाव में प्रबल ग्रह होने पर भी उनका फल नही मिलता; अपितु उस भाव के भावेश का ही फल मिलता है। इस के उदाहरण के लिए एक 'क्ष' की जन्मकुण्डली देखिए–जन्म ता. १६–४–१९०२ सुवह ८–२३ इष्ट घटी ६–५० लग्न १–२५–७–४२।
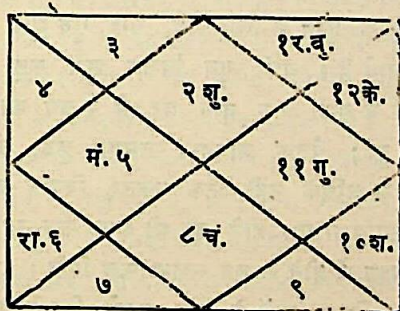
जातकचन्द्रिका कुण्डली के अनुसार वृषभ लग्न के लिए गुरु, शुक्र व चन्द्र अशुभ हैं क्यों कि गुरु अष्टमेश व लाभेश है, शुक्र षष्ठेश है तथा चन्द्र

तृतीयेश है। इसी प्रकार शनि नवमेश–दशमेश तथा रवि चतुर्थेश होने से शुभ है। मंगल व बुध का शुभाशुभत्व इस ग्रन्थकारने नही बताया है। इस जातकचन्द्रिका में बारहों लग्नों के लिए कौनसा ग्रह शुभ है या कौनसा अशुभ यह इसी बात से तय किया है कि वह कौनसे भाव का स्वामी है। उपरलिखित कुण्डली में गुरु दशम में है। यह अच्छा ग्रह माना गया है। किन्तु इस व्यक्ति को गुरु के अच्छे फल नही मिले–उसके पिता की मृत्यु बचपन में हुई, कोई भी नौकरी स्थिरता से नही हो सकी, पैतृक जायदाद नष्ट हुई व स्वयं कमा नही सका। इस प्रकार गुरु दशमस्थान में होने का कोई शुभ फल नही मिला। अपितु अष्टमेश व लाभेश होने से उसके अशुभ फल ही मिले। अर्थात भावस्थ ग्रहफल से भावेश ग्रहफल अधिक प्रभावी रहा।

दूसरा उदाहरण–क्ष–जन्म ता. २०–४–१९०९ रात्रि ९–१० अक्षांश २१–५४ रेखांश ७९–१३। लग्न वृश्चिक, लग्न में केतु, द्वितीय में हर्शल, मकर में मंगल, मीन में शनि, षष्ठ में रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र, सप्तम में राहु, दशम में गुरु वक्री, तथा अष्टम में नेपच्यून है। जातकचन्द्रिका में वृश्चिक लग्न के लिए रवि, चन्द्र, गुरु शुभ तथा बुध, शुक्र, शनि अशुभ बताये हैं। वक्री गुरु विशेष शुभ कहा गया है। इस कुण्डली में दशम में वक्री गुरु होने पर भी २ वर्ष की अवस्था में ही पिता की मृत्यु हुई; पैतृक जायदाद समाप्त हुई, नौकरी या धंधा दो-तीन महीने से अधिक नही टिक सकता, विवाह नही हो पाया। यहां भी दशम भाव में गुरु होने पर भी शुभ फल नही मिले। किन्तु दशमेश रवि षष्ठ में होने से सब अशुभ फल मिले। इस प्रकार कई कुण्डलियों में भावस्थित ग्रहों के फल अच्छे दिखने पर भी विरुद्ध अनुभव आता है क्यों कि वहां भावेश अशुभ स्थान में अशुभ फल देनेवाला होता है। इस प्रकार कई कुण्डलियों की उलझने भावेश के विचार से सुलझती है। अतः भावेश–फल–विचार की उपयोगिता विशेष है।

प्रकरण ३

लग्नेश के फल

प्राचीन ग्रन्थों में भावेशों के जो फल दिये हैं उन्हें अब क्रमशः बतायेंगे। इनमें भावेश शुभ ग्रह है या पापग्रह है इसका विचार किये विना ही फल लिखे हैं। दोनों प्रकार के ग्रहों के फल समान होते हैं या भिन्न होते हैं इसका कुछ विवेचन हमने प्रत्येक प्रसंग में संक्षेप में बताया है।

लग्नेश-लग्न में

लोमेशसंहिता-लग्नेशे लग्नगे पुंसः सुदेहः स्वभुजाक्रमी। मनस्वी चातिचांचल्यो द्विभार्यः परगामी वा ॥ लग्नेश लग्न में हो तो शरीर अच्छा होता है, अपने प्रयत्न से प्रगति होती है, वहुत चंचल स्वभाव रहता है, इसकी दों स्त्रियां होती हैं अथवा परस्त्री से संबंध रहता है। मानसागरी-लग्नाधिपतिर्लग्ने नीरोगं दीर्घजीविनं कुरुते। अतिबलमुवनेशं वा भूलाभसमन्वितं जातम् ॥ यह नीरोग, दीर्घायु, बहुत बलवान, राजा तथा भूमि प्राप्त करनेवाला होता है। यवनजातक-तनुपतिस्तनुगो मदनानुगो गतरुजं कुरुते बहुजीवितम्। अतिवलो नृपतेः कुलमन्त्रिणं सुखविलासयुतं सधनं सदा ॥ यह निरोग, दीर्घायु, वहुत बलवान, राजा का मन्त्री, सुखी व विलासी तथा धनवान होता है। गर्गसंहिता-लग्नाधिपतिर्लग्ने निरोगं दीर्घजीवितं कुरुते। वलवन्तं दृढगात्रं रूपयुतं वहुप्रतिष्ठितं चैव ॥ यह सुन्दर, प्रतिष्ठित, वलवान, मजबूत अगवाला दीर्घायु, निरोग होता है। नवाथेजी-यह सुन्दर, बलवान, कुल की उन्नति करनेवाला, अपने प्रयत्न से प्रगति करनेवाला, तथा विजयी होता है।

हमारे विचार-कौनसा ग्रह लग्नेश है यह देखकर उपर्युक्त फलों का वर्गीकरण इस प्रकार करना चाहिये-रवि-पराक्रमी, स्वयं के प्रयत्न से प्रगति करनेवाला, वलवान, भूमि प्राप्त करनेवाला, दो पत्नियों का

पति; चन्द्र-बहुत चंचल; मंगल-दो पत्नियां, बलवान (मेष में) सुन्दर (वृश्चिक में), विजयी; बुध-रूपवान व बलवान; गुरु-निरोग, दीर्घायु, कुल का नेता, प्रतिष्ठित; शुक्र-परस्त्री से संबंध, सुखविलास, धन, सौन्दर्य; शनि-दीर्घायु ,दो पत्नियों का पति।

लग्नेश धनस्थान में

लोमेशसंहिता-लग्नेशे द्वितीये लाभे स लाभी पण्डितो नरः। सुशीलो। धर्मविन्मानी बहुदारगुणैर्युतः ॥ लग्नेश धनस्थान या लाभस्थान में हो तो वह मनुष्य कई प्रकार से लाभ प्राप्त करता है, पण्डित, अच्छा आचरण करनेवाला, धर्म का जानकार, अभिमानी, बहुत स्त्रियों से युक्त होता है। मानसागरी-लग्नपतिर्धनभवने धनवन्तं विपुलजीविनं स्थूलम् अतिबलमवनीशं वा भूलाभं वा सुधर्मरतं कुरुते ॥ यह धनवान, दीर्घायु, मोटा, बहुत बलवान, राजा जैसा, भूमि प्राप्त करनेवाला तथा धर्म के अनुसार चलनेवाला होता है। गर्गसंहिता-इस में मानसागरी जैसा ही श्लोक है, केवल स्थान-प्रधानमीशं अर्थात अपने गांव में मुख्य अधिकारी होना इतना फल अधिक बताया है। यवनजातक-तनूपतिर्धनभागवतो भवेत् धनयुतं पृथुदीर्घशरीरिणम्। विलघुजीवितमन्त्रकुटुम्बिनं विविध-धर्मयुतं कुरुते नरम् ॥ यह धनवान, ऊंचा तथा मोटा, दीर्घायु, कुल का प्रमुख, कई प्रकार से धार्मिक आचरण करनेवाला होता है। नवाथेजी-धन का संग्रह करनेवाला, लेनदेन में कुशल, कुटुम्बसुख प्राप्त करनेवाला, सुस्वादु अन्न खानेवाला होता है। मोघेजी-इसे धन की चिन्ता रहती है।

हमारे विचार-ग्रहों के अनुसार उपर्युक्त फलों का वर्गीकरण इस प्रकार होता है-रवि-पण्डित, मानी धन के लिए चिन्तित, सुस्वादु अन्न खानेवाला; चन्द्र-धार्मिक; मंगल-बहुत स्त्रियों से संबंध, राजा जैसा वैभव; बुध-लेनदेन में कुशल; गुरु-मोटा, धन के लिए चिन्तित, ऊंचा; शुक्र-लाभ, कुटुम्ब का सुख; शनि-दीर्घायु, जमीन मिलना, कुल में प्रमुखता, धन का संग्रह, बहुत स्त्रियों से संबंध।

लग्नेश तृतीय में

लोमेशसंहिता-लग्नेशे सहजे षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी। सर्वसंपद्युतो मानी द्विभार्यो मतिमान् सुखी ।। लग्नेश तृतीय या षष्ठ स्थान में हो तो वह मनुष्य सिंह जैसा पराक्रमी, धनवान, अभिमानी, बुद्धिमान, सुखी तथा दो पत्नियों का पति होता है। यवनजातक-तनुपतिः सहजे सहजप्रदो भवति मित्रयुतोपि पराक्रमम्। बलहतश्चस दानपवित्रता शुभवचः शुभदृष्टिवशान्नृणाम् ।। तृतीय में लग्नेश होने से भाई तथा मित्र प्राप्त होते हैं, पराक्रमी होता है। यह बलहीन ग्रह हो तो गन्दा रहनसहन होता है तथा इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो बोलने में अच्छा होता है। मानसागरी-सहजगतो लग्नपतिः सद्बन्धुप्रवरमित्र-परिकलितम्। धर्मरतंदातारं शूरं सबलं करोति नरम् ।। यह अच्छे भाइयों तथा उत्तम मित्रों से युक्त, धार्मिक, दान देनेवाला, बलवान, शूर होता है। नवाथेजी-यह स्वतन्त्र प्रवृत्ति का, कर्तृत्व से संपन्न, आग्रही, साहसी, सैनिकी प्रवृत्ति का होता है, इसे भाइयों से सुख मिलता है। मोघेजी-यह बहुत पराक्रमी तथा संपन्न होता है, यदि लग्नेश नीच में हो तो परस्त्रियों से संपर्क होता है। (लग्नेश तृतीय में नीच में होना सिंह लग्न तथा कुम्भ लग्न के लिए ही संभव है, अन्यत्र नही)।

हमारे विचार-कौनसा ग्रह लग्नेश होकर तृतीय में है यह देखकर इन फलों का वर्गीकरण इस प्रकार करना चाहिये-रवि-पराक्रमी, संपन्न, मानी, बुद्धिमान; चन्द्र-मित्रयुक्त; मंगल-रवि के समान (विशेष कर वृश्चिक लग्न होने पर यह अनुभव आता है); बुध-बुद्धिमान, भाई तथा मित्रों से युक्त; गुरु-धार्मिक, बुध के समान; शुक्र-सुखी, दो स्त्रियों से विवाह; शनि-रवि के समान (यह अनुभव कुम्भ लग्न हो तो अधिक आता है)।

लग्नेश चतुर्थ में

लोमेश संहिता–लग्नेशे दशमे तुर्ये पितृमातृसुखान्वितः । बहुभ्रातृयुतः कामी गुणसौन्दर्यसंयुतः ।। लग्नेश दशम या चतुर्थ स्थान में हो तो माता व पिता का सुख मिलता है, बहुत भाई होते हैं, कामुकता, सुन्दरता तथा गुण प्राप्त होते हैं । यवनजातक–सुखगते तनुपे तनुते सुखं विविधभक्ष्यविलाससुपूजितम् । नृपतिपूज्यतमं जननीसुखं गजरथाश्वसुखं सुरसाशिनम् ।। चतुर्थ में लग्नेश होने पर सुख, तरह तरह के खाद्यपदार्थ, आराम के साधन, राजमान्यता, माता का सुख, हाथी, घोडे, रथ आदि (वाहनों) का सुख, उत्तम स्वादिष्ट पदार्थों का भोजन तथा आदर मिलता है । गर्गजातक–लग्नेशस्तुर्यगतो नृपप्रियं प्रचुरजीवितं कुरुते । लब्धियुत बहुमित्रं पित्रोर्बहुभक्ति भाजनं कुरुते ।। यह दीर्घायु, राजमान्य, बहुत लाभ तथा बहुत मित्र पानेवाला, माता-पिता पर भक्ति रखनेवाला होता है । मानसागरी–इसकी पहली पंक्ति गर्ग के समान है । दूसरी में संलब्धपितर पित्रोर्भक्तमबहुभोजनं कुरुते ऐसा पाठ है जिस का हिन्दी टीकाकार ने यह अर्थ बतलाया है–यह बडी आजीविका वाला, पिता से अधिक लाभवाला, मातापिता का भक्त और थोडा भोजन करनेवाला होता है । नवाथेजी–यह सुख व ऐश्वर्य प्राप्त करता है घर, खेत आदि मिलते हैं, माता का सुख मिलता है, वाहनसुख मिलता है ।

हमारे विचार–लग्नेश कौनसा ग्रह है इस के अनुसार इन फलों का वर्गीकरण करना चाहिए– रवि–पिता का सुख; चन्द्र–सुन्दरता व कामुकता; मंगल–वाहन, भोजन, घर, जायदाद आदि का सुख (यह अनुभव मेष लग्न पर अधिक आता है) ; बुध–सुख, विविध लाभ; गुरु–कामुकता भोजनसुख; शुक्र-बहुत भाई, जायदाद, घरबार मिलना, बहुत मित्र होना; शनि–माता का सुख, राजमान्यता, जायदाद मिलना, दीर्घायु (यह अनुभव मकर लग्न पर अधिक आता है) ।

लग्नेश पंचम में

लोमेशसंहिता—लग्नेशे पंचमे मानी सुतैः सौख्यंच मध्यमम्। प्रथमापत्यनाशः स्यात् क्रोधी राजप्रवेशिकः॥ लग्नेश पंचम में हो तो वह मनुष्य क्रोधी होता है, इसे राजदरबार में प्रवेश मिलता है पुत्रों का सुख मध्यम मिलता है, पहली सन्तान की मृत्यु होती है, यह अभिमानी होता है। यवनजातक—तनुपतिः सुतगस्तनुते सुतान् विनयधर्मयुतान् बहुजीवितान्। विदितमिश्रखलः शुभकर्मणां भवति गानकलासु रतो नरः॥ इसे बहुत से पुत्र होते हैं जो विनम्र, धार्मिक तथा दीर्घायु होते हैं। यह गायन तथा कलाओं में रुचि लेता है। यह लग्नेश जैसे ग्रहों से युक्त हो वैसा फल देता है। गर्गजातक-पंचमगो लग्नपतिः ससुतं सत्यागमीश्वरं विदितम्। बहुजीवितं सुशीलं सुकर्मविरतं नरं तनुते॥ यह अधिकारी, उदार, प्रसिद्ध, दीर्घायु, सदाचारी, अच्छे काम करनेवाला तथा पुत्रों से युक्त होता है। मानसागरी-पचमगे लग्नपतौ ससुतं सत्यागमीश्वरं विदितम्। बहुजीवतिं सुगीतं सुकर्मनिरतं जनं कुरुते॥ यह गर्गजातक जैसा ही वर्णन है, केवल सुशील के स्थान पर सुगीत—अच्छा गायक— इतना भिन्न शब्द है। नवाथेजी—यह धनवान, बुद्धिमान, विद्वान, उपासक तथा सन्तति पर प्रेम करनेवाला होता है।

हमारे विचार—लोमेश के फल रवि तथा मंगल लग्नेश हो तो अनुभव में आते हैं। अन्य फल अन्य ग्रह लग्नेश होने पर अनुभव में आते हैं।

लग्नेश षष्ठ में

लोमेशसंहिता—लग्नेश तृतीय स्थानमें होने के जो फल बतलाये हैं वही षष्ठ में होने के फल भी हैं यह ऊपर बता चुके हैं। यवनजातक—रिपुगतस्तनुपः सरिपुं नरं सहजमायुसुतं सुखमातुलम्। पशुकृतं जननीसुखसंभृतं कृपणमेव धनै-र्विविधैर्युतम्॥ इसे शत्रु बहुत होते हैं, दीर्घायु होता है, पुत्र व मामा का सुख मिलता है, पशु मिलते है, माता का सुख मिलता है, यह धनवान किन्तु कंजूस होता है। गर्गजातक—रिपुभवने

लग्नेशे निरोगं भूमिलाभयुतं सबलम् । कृपणं धनिनमरिघ्नं सुकर्मपक्षान्वितं कुरुते ।। यह निरोग, जमीन प्राप्त करनेवाला, बलवान, कंजूस, धनवान, शत्रु का नाश करनेवाला, अच्छे काम करनेवाला होता है । मानसागरी–इसमें गर्गजैसाही वर्णन है । नवाथेजी–यह दुबला, हमेशा रोगी रहनेवाला शत्रु से पीडित, दुर्दैवी, असफल होता है, इसे अच्छे नौकर नही मिलते।

हमारे विचार–ऊपर बताये हुए फलों में नवाथेजी ने जो अशुभ, फल बताये हैं वे केवल कर्क लग्न हो (अर्थात चन्द्र षष्ठ में धनु राशि में) तो अनुभव में आते हैं । अन्य ग्रन्थों में जो शुभ फल बताये हैं, वे रवि मंगल व शनि लग्नेश होकर षष्ठ में हो तो अनुभव में आते हैं । इसमें मामा का सुख नही मिलता । अन्य ग्रह लग्नेश हो कर षष्ठ में हो तो सर्वसाधारण फल मिलते हैं ।

लग्नेश सप्तम में

लोमेशसंहिता–लग्नेशः सप्तमे यस्य भार्या तस्य न जीवति । विरक्तो वा प्रवासी च दरिद्रो वा नृपोपि वा ।। लग्नेश सप्तम में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है. यह विरक्त, दरिद्र, प्रवासी होता है, कभी राजा भी हो सकता है । गर्गजातक–प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शीलवान् भवेत् पुरुषः। तद्भार्यापि सुशीला ज्ञेया कलिता सुरूपा च ।। यह मनुष्य तेजस्वी तथा सदाचारीं होगा तथा उसकी पत्नी सुन्दर, सदाचारी व कलाओं में निपुण होगी । यवनजातक–प्रथमलग्नपतिर्मनुजः स्त्रियां सुखधनैः शुभशील-विलासिनम् । सविनयं वनितोपयुतं च हि सकलरूपयुतं कुरुते सदा ।। यह सुखी, धनवान, विलासी, सदाचारी, विनम्र, स्त्री से रहित तथा सुन्दर होता है । मानसागरी–गर्गजातक जैसा वर्णन है । नवाथेजी–यह विवाद करनेवाला प्रवासी, अदालती मामलों में उलझनेवाला, बहुत कामुक तथा व्यवसाय करनेवाला होता है । मोघेजी–पत्नी को कष्ट होते हैं ।

हमारे विचार–लोमेश द्वारा बताये गये अशुभ फल गुरु वा शुक्र लग्नेश होकर सप्तम में हो तो अनुभव में आते हैं (अर्थात वृषभ, तुला, धनु या मीन लग्न होने पर लग्नेश सप्तम में अशुभ फल देता है) । मोघे

व नवाथेजी ने जो साधारण अशुभ फल बतलाये हैं वे मेष वा वृश्चिक लग्न हो तथा मंगल सप्तम में हो तो सही सिद्ध होते हैं। मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर या कुम्भ लग्न हो तथा लग्नेश रवि, चन्द्र, बुध या शनि सप्तम में हो तो गर्ग व यवनजातक द्वारा बताये गये शुभ फलों का अनुभव आता है।

लग्नेश अष्टम में

लोमेशसंहिता–लग्नेश व्ययगे चाष्टे शिल्पविद्याविशारदः द्यूती चौरो महाक्रोधी परभार्यातिभोगकृत्॥ लग्नेश अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो वह मनुष्य शिल्प विद्या में निपुण, जुआरी, चोर, बहुत क्रोधी, परस्त्रियों में बहुत आसक्त होता है। यवनजातक–प्रथमभावपति–र्मृतिगो मृतिं विदधते कृपणं धनवंचकम्। विविधकष्टयुतं शुभदृष्टितो भवति मानवः सुकृतीवान् सुधीः॥ इसकी मृत्यु होती है (अल्प आयु में)। यह कंजूस, पैसे के मामलों में धोखा देनेवाला, बहुत कष्टों से युक्त होता है। इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह बुद्धिमान होकर अच्छे कार्य करता है। गर्गजातक–लग्नपतौ त्वष्टमगे कृपणो धनसंचयी सुदीर्घायुः। क्रूरे खचरे क्रूरः सौम्ये वपुषा भवेत् सौम्यः॥ यह कंजूस, धन का संग्रह करनेवाला, दीर्घायु होता है, लग्नेश क्रूर हो तो यह क्रूर होता है तथा लग्नेश सौम्य हो तो सौम्य होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–इसे शरीरसुख कम मिलता है, कष्ट होते हैं, सट्टा, जुआ, गडा धन आदि के पीछे लगता है। मोघेजी–यह बुरे काम करता है।

हमारे विचार–लोमेश के फलों में परस्त्रीभोग जुआरी, शिल्पकार होना ये फल लग्नेश शुक्र हो तथा वह अष्टम में हो तो अनुभव में आते हैं। चोर व क्रोधी होना मंगल का फल है। यवनजातक के वर्णन में मृत्यु शीघ्र होने का फल रवि, चन्द्र का है, कंजूस व धोखा देनेवाला होना यह गुरु का फल है, त्रिविधकष्ट यह शनि का फल है। गर्ग के वर्णन में दीर्घायु यह फल है यह शनि व गुरु का है। नवाथेजी के वर्णन में कष्ट यह चन्द्र का, जुआ आदि के पीछे लगे रहना यह गुरु या शुक्र

का तथा मोघेजी का वर्णन अर्थात बुरे काम यह शुक्र का फल है। इस प्रकार अष्टममें लग्नेश के फलों का अनुभव आता है।

लग्नेश नवम में

लोमेशसंहिता–लग्नेशे नवमे पुंसां भाग्यवान जनवल्लभः। विष्णु-भक्तो पटुर्वाग्मी पुत्रदारधनैर्युतः॥ लग्नेश नवम में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान, लोकप्रिय, ईश्वरभक्त, चतुर, बोलने में कुशल, तथा पुत्र, स्त्री धन आदि से संपन्न होता है। यवनजातक–तनुपतिस्तनुते तपसायुतं सहजमित्रवदान्यविदेशकृत्। सुखसुशीलनरंकयशोनिधिर्नृपतिपूज्यतमो मनुजो नृणाम्॥ यह मनुष्य तपस्वी, मित्र व बन्धुओं से युक्त, उदार, विदेशयात्रा करनेवाला, सुखी सदाचारी, कीर्तिमान, राजा द्वारा सम्मानित होता है। गर्गजातक–मूर्तिपतिर्यदि नवमे तदा भवेत् प्रचुरबान्धवः सुकृतिः। समचित्तश्च सुशीलः सुकृतिख्यातश्च तेजस्वी॥ यह बहुत बन्धुओं से युक्त, अच्छे काम करनेवाला, प्रसिद्ध, सदाचारी, तेजस्वी तथा मन में समता रखनेवाला होता है। मानसागरी–इसमें गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–यह परोपकारी, दैवी बुद्धिवाला, भाग्यवान, कीर्ति-मान तथा ईश्वरभक्ति, सत्संग, यात्रा व पुण्यकार्य करके अपनी मृत्यु के बाद भी लोगों में स्मरण किया जानेवाला होता है।

हमारे विचार–ये सब शुभ फल रवि, चन्द्र, मगल, बुध, गुरु व शुक्र लग्नेश हो कर नवम में हो तो अनुभव में आते हैं। किन्तु शनि लग्नेश हो कर नवम में हो तो इनमें से बहुतसे शुभ फलों का अनुभव नही आता।

लग्नेश दशम में–

लोमेशसंहिता–लग्नेश चतुर्थ में होने के फल पहले बताये हैं उसी में लग्नेश दशम में होने के फल भी वैसे ही बताये हैं। यवनजातक–दशमधामगते तनुनायके जनकमातृसुखं नृपतेःसमम्। सकलभोगसुखं शुभ-कर्मणां कविवरं गुरुपूजनकं वरम्॥ इसे माता-पिता का सुख मिलता

है, राजा के समान सब उपभोगों का सुख मिलता है, यह अच्छे काम करनेवाला, कवि, गुरु की पूजा करनेवाला, श्रेष्ठ होता है।

गर्गजातक-प्रथमेशे दशमस्थे नृपमित्रः पण्डितः सुशीलश्च। गुरुमातृ॰ पूजनमतिर्नृपतिसमृद्धः पुमान् भवति ॥ यह राजा का मित्र, विद्वान, सदाचारी, बडे लोगों व माता का सम्मान करनेवाला व राजा जैसा संपन्न होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-यह सतत उद्योग करनेवाला, अभिमानी, पिता से अधिक तरक्की करनेवाला, अधिकारी, समाज में जानामाना तथा राजनीति में प्रमुख कार्यकर्ता होता है।

हमारे विचार-ये सब शुभ फल मेष, सिंह, धनु, मकर, कुम्भ या मीन लग्न होने पर लग्नेश दशम में हो तो अनुभव में आते हैं। अन्य लग्न होने पर इन फलों का अनुभव नही आता।

लग्नेश लाभ में

लोमेश संहिता-लग्नेश द्वितीय स्थान में होने के फलों में ही लग्नेश लाभस्थान में होने के फल भी बता दिये हैं। यवनजातक-सुबहुजीवित आयगते नरस्तनुपतौ शुभभावसमन्विते। गजरथाश्वसकोशनृपात् सुखं विविधकीर्तिविवेकविचारणः ॥ लग्नेश लाभ स्थान में शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह मनुष्य दीर्घायु होता है। हाथी, रथ, घोडे, खजाना आदि का सुख राजा से प्राप्त होता है, कीर्ति मिलती है, विवेकपूर्वक विचार करनेवाला होता है।

गर्गजातक-एकादशगस्तनुपः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम् तेजः-कलितं कुरुते पुरुषं बलिनं न सीदतिचेत् ॥ लग्नेश लाभ में हो तथा निर्बल न हो तो वह पुरुष दीर्घायु, प्रसिद्ध, तेजस्वी, बलवान एवं पुत्रों से युक्त होता है।

मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है, केवल न सीदति चेत् के स्थान पर वाहनसंयुतं इतना अन्तर किया है।

नवाथेजी–इसे मित्र अच्छे मिलते हैं, धन व अन्य अनेक प्रकार के लाभ हमेशा होते रहते हैं।

हमारे विचार–उपर्युक्त सब शुभ फल लग्नेश गुरु लाभ में हो तो अनुभव में नही आते, अन्य ग्रहों के विषय में अनुभव में आते हैं।

लग्नेश व्ययस्थानमें

लोमेशसंहिता–लग्नेश अष्टम स्थान में होने के फल पहले बताये हैं उसीमें व्ययस्थान में होने के फल भी वैसे ही बताये हैं। मानसागरी–द्वादशगे मूर्तिपतौ कटुकवत्कर्मपरोऽशुभो नीचः। मानो सहगोत्रीभिर्विदेशगो दत्तभूक्तनरः ॥ यह बुरे काम करनेवाला, अशुभ, नीच, अभिमानी, संबंधियोंके साथ विदेश जानेवाला तथा दत्तक पुत्र के रूप में उपभोग करनेवाला होता है।

गर्गजातक––द्वादशगे लग्नपतौ पटुवाग् वाचं करोति कर्णहितम्। सहगोत्रकैरमिलितं विदेशगं वित्तभोक्तारम्। यह बोलने में चतुर, सुनने में हितकारी बातें बोलनेवाला, संबंधियों से न मिलनेवाला, विदेश जानेवाला तथा धनका उपभोग करनेवाला होता है।

नवाथेजी–इसके सब व्यवहार उलझे होते हैं, धन हाथ में नही रहता, कर्ज चुकाना मुश्किल होता है, कई प्रकार के संकट आते हैं। मोघेजी–यह जुआरी तथा बुरे मार्ग पर जानेवाला होता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त अशुभ फल चन्द्र, बुध व गुरु लग्नेश होकर व्यय में रहे तो अनुभवमें आते हैं। रवि व शनि के ऐसे फल नही मिलते। नवाथेजी का मत सिर्फ मंगल के लिए सही सिद्ध होता है।

प्रकरण ४

धन–भावेश के फल

धनेश लग्न में

लोमेश–धनेशे च तनौपुत्रे स्वकुटुम्बस्य पालकः। धनवान् निष्ठुरः कामी परकार्येषु तत्परः ॥ धनेश लग्न में या पंचम में हो तो वह मनुष्य

अपने परिवार का पालन करनेवाला, धनवान, कठोर, कामुक किन्तु दूसरों के काम करनेके लिए तैयार रहता है। यवनजातक-द्रव्याधिपे लग्नगते धनी स्यात् व्यापारवृत्तिः कृपणोऽतिभोगी। सुखान्वितो भूपतिसत्कृतो भवेत् सुकर्मकृत् सुन्दरनेत्रपत्नी ॥ यह धनवान, व्यापारी, कंजूस, उपभोग प्राप्त करनेवाला सुखी, राजा द्वारा सम्मानित, अच्छे काम करनेवाला होता है। इसकी पत्नी तथा आंखें सुन्दर होती हैं। मानसागरी-द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम्। धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगयुतम् ॥ यह कजूस, व्यापारी, अच्छे काम करनेवाला, धनवान, श्रीमानों में प्रसिद्ध तथा बहुत उपभोग प्राप्त करनेवाला होता है। गर्गजातक-मानसागरी जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-इसे धन व परिवार की चिन्ता रहती है, मानसिक सुख नही मिलता, धनप्राप्ति के लिए बहुत प्रयत्न करने पर भी मन की इच्छानुसार प्राप्ति नही होती। मोघेजी-धनेश शुभग्रह हो तथा लग्न में हो तथा वह मनुष्य धनवान होता है।

हमारे विचार-गुरु, शुक्र, बुध व चन्द्र धनेश होकर लग्न में हो तथा शनि धनु लग्न में हो तो उपर्युक्त शुभ फलों का अनुभव आता है, अन्य ग्रहों का ऐसा अनुभव नही आता।

धनेश धनस्थान में

लोमेश संहिता-धनेशे धनभे सोऽथ धनवान् गर्वसंयुतः। भार्याद्वयं त्रयं चापि सुतहीनोऽपि जायते ॥ धनेश धन स्थान में हो तो वह मनुष्य धनवान, गर्वीला होता है, उसके दो या तीन विवाह होते हैं, पुत्र नही होता। गर्गजातक-धनपो धनभावस्थो धनवन्तं धर्मकर्मनिरतं च। लाभाधिकं सलोभं कुरुते पुरुषं सदादानम् ॥ यह धनवान, धार्मिक कार्य करनेवाला होता है, इसे बहुत लाभ होता है किन्तु यह लोभी होता है, कभी दान नही देता। यवनजातक-द्रव्याधिपे द्रव्यगते धनी स्यात् पुमान् भवेल्लाभयुतोऽपि मन्त्री। कुटुम्बयुक्तो मणिरत्नभोगी विभूषितो भोगयुतो जितेन्द्रियः ॥ यह धनवान, लाभ प्राप्त करनेवाला, मन्त्री, परिवार से

युक्त, हीरे–जवाहरात प्राप्त करनेवाला, अलंकारों से युक्त, उपभोग से युक्त तथा जितेन्द्रिय होता है। मानसागरी–व्यवसायी च सुलाभी उत्पन्नभुगलिककारको नीचः। अलीककृद् विदितः पूर्णोद्वेगी धनपतौ धनगे ।। यह व्यापारी लाभ प्राप्त करनेवाला, जो मिले उतना भोग करनेवाला, झूठे काम करनेवाला, नीच, प्रसिद्ध घबरानेवाला होता है। नवाथेजी इसे पिता द्वारा कमाये हुए या अन्य किसी से बिना मेहनत के प्राप्त हुए धन की प्राप्ति होती है, व्याज तथा व्यापार से धन मिलता है, बहुत मनुष्यों को यह आश्रय देता है, अच्छा अन्न खाता है तथा इसे कुटुम्ब का सुख मिलता है। मोघेजी–धनेश धनस्थान में होने से द्विभार्यायोग होता है।

हमारे विचार–लोमेश व मोघे द्वारा बताये गये फल धनेश पापग्रह हो (शनि के अतिरिक्त) तथा धनस्थान में हो तो अनुभव में आते हैं। अन्य लोगों के वर्णन का अनुभव गुरु को छोडकर अन्य शुभ ग्रह धनस्थान में स्वगृह में हो तो आता है।

धनेश तृतीय में

लोमेशसंहिता–धनेशे तृतीये तुर्ये विक्रमी मतिमान् गुणी। परदाराभिगामी च निश्चलो देवभक्तियुक् ।। धनेश तृतीय या चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, गुणवान, बुद्धिमान, स्थिर, ईश्वरभक्त किन्तु परस्त्रियों से संबंध रखनेवाला होता है। गर्गजातक–सहजगते तु धनेशे व्यवसायी कलिकरो कलाहीनः। चौरश्चंचलवित्तो भवति नरो विनयनयरहितः ।। धनेश तृतीय में हो तो वह मनुष्य व्यापारी, झगडालू, कला न जाननेवाला, चोर, धन में स्थिरता न रहनेवाला, उद्धत तथा अन्यायी होता है। यवनजातक–धनाधिपे भ्रातृगते खलः स्यात् सोद्वेगयुग् भ्रातृसुखेन हीनः। सूर्योद्भवे भ्रातृगते विरोधी चौरः कुजे चार्कसुते विबंधुः ।। यह दुष्ट, घबरानेवाला, भाइयों के सुख से रहित होता है, इस स्थान में सूर्य हो तो भाइयों से विरोध होता है, मंगल हो तो वह चोर होता है तथा शनि हो तो बन्धुरहित होता है। मानसागरी–धनपे

सहजगते बन्धोभंदो न वर्जिते क्रूरे। सौम्ये राजविरोधो भूतनये तस्करः पुरुषः ॥ धनेश क्रूर ग्रह हो तथा वह तृतीय में हो तो बन्धुओं से विरोध नही होता, यह शुभ ग्रह हो तो राजा से विरोध होता है तथा मंगल हो तो वह मनुष्य चोर होता है। नवाथेजी-यह अपने परिश्रम से धन कमाता है, परिवार के पालन का बोझ उठाता है, धनप्राप्ति के लिए बहुत मेहनत करता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों में पराक्रमी, गुणवान, झगडालू तथा भाइयों से सुख न मिलना ये फल धनेश पापग्रह हो और तृतीय में हो तो अनुभव में आते हैं। नवाथेजी का मत भी पापग्रह के विषय में सही सिद्ध होता है। अन्य लोगों ने जो अशुभ फल बतलाये हैं वे यदि धनेश शुभग्रह होकर तृतीय में हो तो अनुभव में आते हैं।

धनेश चतुर्थ में

लोमशसंहिता-इस का मत ऊपर धनेश तृतीय में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-धनाधिपे तुर्यगते धनी स्यात् मातुर्गुरोर्लब्ध-धनः सुतेजाः। आयुष्यवान् सौम्यखगैः सदैव क्रूरैर्दरिद्रो बहुरोगभाक् स्यात् ॥ यह धनवान, माता तथा अन्य बडे संबंधियों से धन प्राप्त करनेवाला, तेजस्वी, दीर्घायु होता है। ये फल यदि यह शुभ ग्रह से युक्त हो तो मिलेंगे। पापग्रह से युक्त होने पर यह दरिद्र एवं बहुत रोगों से पीडित होता है। गर्गजातक-तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभश्चा-परैः। सहोपायः दीर्घायुः क्रूरे ह्यपि अथवा मरणं विनिर्देश्यम् ॥ इसे पिता से लाभ होता है, दूसरों से मिलकर व्यवसाय करता है, दीर्घायु होता है किन्तु यह पापग्रह होने पर मृत्यु हो सकती है। नवाथेजी-यह धन का उपभोग प्राप्त करता है, बडी बिल्डिगें, खेती बगीचे, गाडी-घोडे आदि संपत्ति का सुख प्राप्त करता है। मोघेजी-यह परस्त्रियों में आसक्त, लोभी, नास्तिक होता है।

हमारे विचार-लोमेश के वर्णन में निश्चयी, ईश्वरभक्त, बुद्धिमान, गुणवान होना यह फल गुरु, शुक्र, बुध धनेश होकर चतुर्थ में हो तो अनुभव में आता है। यह पापग्रह हो तो पराक्रमी व परस्त्री में आसक्त होना इस फल का अनुभव आता है। मोघेजी का मत भी यह पापग्रह हो तो सही सिद्ध होता है। बाकी शुभ फल धनेश शुभ ग्रह होकर चतुर्थ में हो तो सही सिद्ध होते हैं।

धनेश पंचम में

लोमेशसंहिता-इस का मत ऊपर धनेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-धनाधिपे पंचमगे सुतानां सौख्यं भवेल्ला-भसमन्वितं च। सौम्यैरुदारः कृपणः खलैश्च दुःखान्वितं दुष्टसुतं विद-ध्यात् ॥ यह शुभग्रह हो तो पुत्रसुख मिलता है, लाभ होते हैं, उदारता होती है; पापग्रह हो तो कंजूस होता है, दुःखी होता है, इस के पुत्र दुष्ट होते हैं। गर्गजातक-शश्वद्विलसन्नयनं कर्मणि कष्टे रतं प्रसिद्धं च। कृपण दुःखविघातं तनयगतो द्रव्यपः कुरुते ॥ इस की आखें विलास-युक्त दिखती हैं, यह काम मेहनत से करनेवाला, प्रसिद्ध, कंजूस तथा दुःखों को दूर करनेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवार्थेर्जा-यह बहुत धनवान तथा धन का उपयोग परोपकार एवं ज्ञानप्राप्ति के लिए करनेवाला होता है, पुत्र भी इस के धन का उपभोग करते हैं।

हमारे विचार-लोमेश व यवनजातक के आधे (शुभ) फल तथा गर्ग के फल यदि धनेश गुरु, शुक्र या बुध होकर पंचम में हो तो अनुभव में आते हैं। कंजूस व दुष्ट होना यह शनि का फल है। प्रसिद्ध व सुंदर आंखें होना आदि अन्य फल शुभ ग्रहों के हैं।

धनेश षष्ठ में

लोमेशसंहिता-धनेशे रिपुगे शत्रोर्धनप्राप्तिर्भवेद् ध्रुवम्। शत्रुतो नाशवित्तस्य गुदे चास्य भवेद्रुजा ॥ धनेश षष्ठ में हो शत्रु से धन प्राप्त

होता है, शत्रु के धन का नाश होता है, इस के गुदस्थान में रोग होता है। गर्गजातक-षष्ठगते द्रविणपतौ धनसंग्रहतत्परं कृतघ्नं च। भूस्वामिनं च खचरे पापे धनवर्जितः सदा पुरुषः यह धन इकठ्ठा करने में तत्पर, कृतघ्न, जमीन का स्वामी होता है। यदि धनेश पापग्रह हो तो यह धनहीन होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। यवनजातक-धनाधिपे षष्ठगृहे रिपूनः सदा नरः संचयकारकश्च। बलाभिभूतैः खचरैः शुभैश्च पापैर्दरिद्रः सरिपुः खलः स्यात्॥ धनेश बलवान तथा शुभग्रह से युक्त हो तो उसे शत्रु नही होते तथा वह धन का संग्रह करता है, धनेश पापग्रह से युक्त हो तो दरिद्री, दुष्ट तथा शत्रुओं से पीडित होता है। नवाथेजो-शत्रु इसका धन छीनेंगे, धन कमाने में बहुत अडचने आयेंगी। नौकर धन बरबाद करेंगे। मूल धन कम होगा। मोघेजी-शत्रु से पीडा होगी, गुप्त रोग होंगे।

हमारे विचार-धनेश शुभग्रह हो तथा षष्ठ में हो तो लोमेश, नवाथे व मोघे द्वारा वर्णित अनुभव में आते हैं। पापग्रह हो तो अन्य फलों का अनुभव आता है।

धनेश सप्तम में

लोमेशसंहिता-धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगामिनः। जाया तस्य भवेद् वेश्या माता च व्यभिचारिणी॥ धनेश सप्तम में हो तो वह वैद्य होता है। यह परस्त्री से संबंध रखता है। इस की माता तथा पत्नी भी दुराचारिणी होती है। यवनजातक-धनाधिपे सप्तमगे सुरूपः चिन्तान्वितः संग्रहणी धनी स्यात्। भार्याविलासेन युतः सुताढ्यः क्रूरान्विते हीनसुतो नरः स्यात्॥ यह सुन्दर, चिन्ता करनेवाला, धन का संग्रह करनेवाला, पत्नी का सुख प्राप्त करनेवाला, पुत्रों से युक्त होता है किन्तु धनेश के साथ पापग्रह होने पर पुत्रों से रहित होता है। गर्गजातक-धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठांगनाविलासभाग् भवति। धनसंग्रहणी भार्या क्रूरे खचरे भवेद् वन्ध्या॥ इसे श्रेष्ठ स्त्रियों का उपभोग मिलता है, पत्नी धन का संग्रह करती है, धनेश पापग्रह हो तो पत्नी वन्ध्या होती है। मानसागरी-

गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह स्त्रीसुख के लिए बहुत पैसा खर्च करता है तथा स्त्रीसुख प्राप्त भी करता है, इसकी पैतृक संपत्ति के बारे में अदालत में झगडा चलता है। मोघेजी–सप्तम स्थान में धनेश स्त्रीसुख नष्ट करता है।

हमारे विचार–लोमेश द्वारा वर्णित भयंकर अशुभ फल का अनुभव किसी भी ग्रह के विषय में नही आता। यवनजातक, गर्ग, मानसागरी व नवाथे द्वारा वर्णित फल धनेश शुभग्रह हो तो अनुभव में आते हैं। मोघे द्वारा वर्णित फल रवि, मंगल व शुक्र के विषय में सही सिद्ध होता है।

धनेश अष्टम में

लोमेश संहिता–धनेशे मृत्युगेहस्थे भूमिद्रव्यं लभेद् ध्रुवम्। जाया-सौख्यं भवेदल्पं ज्येष्ठभ्रातृसुखं न हि ॥ धनेश अष्टम में हो तो जमीन में गडा धन मिलता है; पत्नी का सुख कम मिलता है तथा बडे भाई का सुख बिलकुल नही मिलता। यवनजातक–धनाधिपो मृत्युगतः करोति मनाक् कलिं घातकरं स्वदेहे। उत्पन्नभुग् भोगयुतं सुरूपं धनाधिपं भावयुतं पुमांसम् ॥ यह झगडालू, अपने ही शरीर पर आघात करनेवाला, अपने मेहनत की कमाई खानेवाला, सुन्दर, धनवान, भावुक होता है। गर्गजातक–धनपे चाष्टमभावे स्वल्पकलिश्चात्मघातकः पुरुषः। उत्पन्न-भुग् विलासी परहिंसकः सदैव दैवपरः ॥ इसमें पहली पंक्ति यवनजातक जैसी है। दूसरी के अनुसार यह मनुष्य हिंसक तथा दैव पर भरोसा रखनेवाला होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है, सिर्फ अष्टकपाली यह शब्द अधिक है जिसका अनुवादक ने पाखंडी यह अर्थ बताया है। नवाथेजी–इसे जमीन में गडा धन या सट्टा, लाटरी, रेस, हुंडी आदि के द्वारा आकस्मिक धन का साधारणतः लाभ होता है।

हमारे विचार–लोमेश का वर्णन शनि, रवि, गुरु धनेश होकर अष्टम में हो तो अनुभव में आता है। अन्य फल अन्य ग्रहों के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

धनेश नवम में

लोमेश सहिता–धनेशे नवमे लाभे धनवान् धार्मिकः पटुः। बाल्ये रोगी सुखी पश्चात् यावदायुः समाप्यते ॥ धनेश नवम या एकादश स्थान में होने पर वह मनुष्य धनवान, धार्मिक, चतुर, बालक अवस्था में रोगी किन्तु बाद में जीवन भर सुखी रहता है। यवनजातक–धर्माश्रिते द्रव्यपतौ वदान्यः प्रसिद्धभाग्यः सबलो व्रती स्यात्। पुण्ये रतिः सौम्ययुते श्वलेन हीनो दरिद्रः कृपणः खलः स्यात् ॥ धनेश नवम में शुभग्रहसहित हो तो वह मनुष्य उदार, प्रसिद्ध, भाग्यवान, बलवान, व्रत पालनेवाला, तथा पुण्य प्राप्त करनेवाला होता है। धनेश पापग्रहसहित हो तो वह नीच, दरिद्र, कंजूस, दुष्ट होगा। गर्गजातक–धनपे धर्मगृहगे सौम्ये दानप्रसिद्धिभाग भवति। क्रूरे दरिद्रभिक्षुर्विडम्बवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ शुभ ग्रह धनेश हो कर नवम में हो तो वह उदार, प्रसिद्ध होता है, पापग्रह हो तो दरिद्र, भिखारी, लोगों को धोखा देकर जीविका चलानेवाला होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजो–यह धनवान, पुण्यकार्यों में धन खर्च करनेवाला, मंदिर, अन्नसत्र, प्याऊ आदि चलानेवाला होता है। शादियों में बहुत खर्च से यह कुछ कम धनी होता है। भोघंजी–यह श्रीमान तथा उद्योगी होता है।

हमारे विचार–लोमेश का वर्णन रवि, शनि, मंगल के बारे में अनुभव में आता है। अन्य वर्णन बाकी ग्रहों के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

धनेश दशम में

लोमेशसहिता–धनेशो दशमे यस्य कामिनी चात्र पंडिता। बहुदारधनैर्युक्तो सुतहीनोपि जायते ॥ धनेश दशम में हो तो उस मनुष्य की पत्नी पंडित होती है। इसे बहुत स्त्रियों की तथा धन की प्राप्ति होती है किन्तु पुत्र नही होते। गर्गजातक–दशमस्थे च धनेशे नरेन्द्रमान्यो भवेच्च नरपालः। सौम्यग्रहे च मातुःपितुश्च परिपालकः पुरुषः ॥ यह राजा द्वारा सम्मानित और राजा (के समान वैभवशाली) होता है,

यदि धनेश शुभ ग्रह हो तो यह माता-पिता की देखभाल करता है। यवनजातक–द्रव्याधिनाथो दशमे यदि स्यात् नरेन्द्रमान्यः सुभगो यशस्वी। मातुः पितुर्भक्तियुतः सुभोगी खलेन्यथा स्यात् पितृमातृवैरी ।। यह राजा द्वारा सम्मानित, सुन्दर, यशस्वी, माता-पिता पर भक्ति रखनेवाला तथा उपभोग प्राप्त करनेवाला होता है। किन्तु धनेश पापग्रह हो तो यह माता-पिता का विरोधी होता है। मानसागरी–ऊपर जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–यह भाग्यवान, कीर्तिमान, अभिमानी बडा व्यापारी या साहूकार, पिता के समान पराक्रमी तथा राजकार्य में चतुर होता है। मोघेजी–यह पंडित, अभिमानी तथा कामुक होता है, इसे सन्तान कम होती है।

हमारे विचार–उपर्युक्त फलों का अनुभव धनेश पापग्रह होकर दशम में हो तो आता है, शुभग्रह हो तो नही आता। माता-पिता की भक्ति का अनुभव शनि को छोड कर सब ग्रहों में मिलता है।

धनेश लाभ में

लोमेशसंहिता–इस का मत ऊपर धनेश नवम स्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–लाभाश्रितो द्रव्यपतिः श्रियःपतिर्मन्त्री नृपस्य व्यवहारदक्षः। व्यापारयुक्तः पुरुषो यशस्वी लाभान्वितो भोगपरः सुखीच ।। यह धनवान, राजा का मंत्री, व्यवहार में चतुर, व्यापारी, यशस्वी, लाभ और भोग प्राप्त करनेवाला तथा सुखी होता है। गर्गजातक–यवनजातक जैसा ही वर्णन है, केवल ख्यातं प्रतिपालकंच लोके सततं कुरुते नरं जातम् अर्थात यह मनुष्य प्रसिद्ध एवं बहुत लोगों का पालन करनेवाला होता है इतना अधिक बतलाया है। मानसागरी–इसमें गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–इसे बहुत धन तथा मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त होती हैं, यह मित्रों को मदद करता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त सब फलों का अनुभव रवि व शनि को छोडकर अन्य ग्रह धनेश होकर लाभ स्थान में हो तो आता है।

धनेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता—धनेशे व्ययगे मानी साहसी धनवर्जितः। विक्रमी नृपमेधावी ज्येष्ठपुत्रसुखं न हि॥ धनेश व्यय स्थान में हो तो वह मनुष्य अभिमानी, साहसी, पराक्रमी, राजनीति में चतुर किन्तु निर्धन होता है तथा इसे ज्येष्ठ पुत्र का सुख नहीं मिलता। यवनजातक—विदेशगो दुष्टमना व्ययाश्रितो द्रव्याधिपः पापरतो जडात्मा। कापालिको म्लेच्छजनाभिसक्तः क्रूरोतिचौरो बलवान् नरः स्यात्॥ यह विदेश जानेवाला, दुष्ट, मूर्ख कापालिक (जो देवी-देवताओं को नरबलि देते हों), म्लेच्छ लोगों से मेलजोल रखनेवाला, निर्दय, चोर, बलवान होता है। गर्गजातक—द्वादशगे द्रविणपतावष्टकपाली विदेसऋद्धिश्च। दुष्कर्मा क्रूरग्रहे सौम्यग्रहे संग्रामिकः पुरुषः॥ धनेश पापग्रह हो तो यह बुरे काम करनेवाला, पाखंडी, विदेश में धन कमानेवाला होता है, धनेश शुभग्रह हो तो यह लडाई में निपुण होता है। मानसागरी—द्रविणपती व्ययलीने पुरुषः कृपणो धनवर्जितः क्रूरे। सौम्ये लाभालाभख्यातो नरो भवेज्जातः॥ धनेश पापग्रह होकर व्यय में हो तो वह मनुष्य कंजूस व निर्धन होता है, शुभग्रह हो तो इसे कुछ फायदा व कुछ नुकसान होता है तथा कीर्ति मिलती है। नवाथेजी—इसका पैसा ऐश-आराम व बुरे कामों में खर्च होता है, चाचा इसके धन का अपहरण करते हैं, राजा द्वारा दण्ड, धोखेबाजी या बुरी आदतों से धन नष्ट होता है।

हमारे विचार—लोमेश के वर्णन का अनुभव रवि अथवा शनि धनेश होने पर आता है। यवनजातक, गर्ग, मानसागरी इनके वर्णनों का अनुभव शुभग्रह धनेश हो तो आता है। नवाथेजी का वर्णन दोनों शुभ ग्रहों के बारे में सही सिद्ध होता है।

प्रकरण ५

तृतीय भावेश के फल

तृतीयेश लग्न में

लोमेशसंहिता-तृतीयेशे तनौ लाभे स्वभुजार्जितवित्तवान्। सुखी कृशो महाक्रोधी साहसी जनसेवकः ॥ तृतीयेश लग्न या लाभ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी मेहनत से धनवान होता है। सुखी, दुबला, बहुत क्रोधी, साहसी लोगों की सेवा करनेवाला होता है। यवनजातक—सहजपतौ लग्नगते स्त्रीस्वादलम्पटः स्वजनभेदः। सेवां करोति मित्रे भवेत् कटुकरः पण्डितः पुरुषः ॥ तृतीयेश लग्न में हो तो वह मनुष्य कामुक, खाद्यपदार्थों का लालची, अपने लोगों में फूट डालनेवाला, नौकरी करनेवाला, मित्रों से कडवी बातें कहनेवाला तथा विद्वान होता है। गर्गजातक—सहजपतौ लग्नगते वाग्वादी लम्पटः स्वजनभेदी सेवापरः कुमित्रः क्रूरो वा भवति पुरुषश्च ॥ यह वादविवाद करनेवाला, कामुक, अपने लोगों मे फूट डालनेवाला, नौकरी करनेवाला, क्रूर, बूरे मित्रों से युक्त होता है। मानसागरी—गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी—यह साहसी, झगडालू, महत्त्वाकांक्षी व बडा उद्योगपति होता है। मोघेजी—यह पराक्रमी तथा स्वच्छन्द प्रवृत्ति का होता है।

हमारे विचार—लोमेश, नवथे व मोघे द्वारा बताये गये फल रवि व मंगल के बारे में सही सिद्ध होने हैं। यवनजातक व गर्ग के वर्णन शनि, गुरु व शुक्र के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

तृतीयेश धनस्थान में

लोमेशसहिता—गुदाभंजनिकः स्थूलो परभार्याधने रुचिः। स्वल्पारंभी सुखी न स्यात् तृतीयेशे धने गते ॥ यह मोटा, थोडा काम करनेवाला, परस्त्री तथा परधन में रुचि लेनेवाला होता है, इसकी गुदा में कष्ट रहता है, यह सुखी नही होता। यवनजातक—यदि धनगे सहजेशे भिक्षुर्धनाल्पजीवितः पुरुषः। बन्धुविरोधी क्रूरः सौम्यैः पुनरीश्वरः

खचरैः ॥ तृतीयेश पापग्रह हो कर धनस्थान में हो तो वह मनुष्य भिखारी, निर्धन, अल्प आयुवाला तथा बन्धु से विरोध करनेवाला होता है, शुभग्रह हो तो वह अधिकारी बनता है। मानसागरी में यही वर्णन है। गर्गजातक में भी यही वर्णन है, सिर्फ सबलः अर्थात यह बलवान होता है इतना अधिक बतलाया है। नवाथेजो-परिवार में झगडे होते हैं, भाइयों के लिए धन खर्च होता है, धन का संग्रह नहीं हो पाता। मोघेजो-इसे काफी कष्ट होता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल अधिकांश अशुभ हैं जो पापग्रह तृतीयेश हो कर धनस्थान में हो तो सही सिद्ध होते हैं।

तृतीयेश तृतीय में

लोमेशसंहिता-तृतीयेशे तृतीयस्थे विक्रमीभृत्यसंयुतः। धनयुक्तो महादृष्टो भुनक्ति सुखमद्भुतम् ॥ तृतीयेश तृतीय में हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, नौकरों से युक्त धनवान, अद्भत सुख प्राप्त करनेवाला होता है। यवनजातक-सहजगते सहजपतौ नृपमन्त्री सौहृदेतिनिपुणश्च। गुरु-पूजननिरतो वै नृपतौ लाभं परं नरं कुरुते ॥ यह राजा का मंत्री, मित्रता जोडने में कुशल, बडे लोगों का आदर करनेवाला तथा राजा से लाभ प्राप्त करनेवाला होता है। गर्गजातक तथा मानसागरी भी यही श्लोक देते हैं। नवाथेजो-यह साहसी, पराक्रमी, आग्रही, सिपाही जैसी प्रवृत्तिवाला, उद्योगी, स्वतन्त्र वृत्ति का, स्वतन्त्र व्यवसाय करनेवाला तथा कुल की इज्जत बढानेवाला होता है। मोघेजो-यह पराक्रमी व धनवान होता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त सब फल तृतीयेश पापग्रह हो तथा तृतीय में हो तो सही सिद्ध होते हैं।

तृतीयेश चतुर्थ में

लोमेशसंहिता-तृनीयेशे सुखे कर्मे पचमे वा सुखं सदा। अतिक्रूरा भवेद् भार्या धनाढ्यो मतिमान् भवेत् ॥ तृतीयेश चतुर्थ, पंचम अथवा

दशम में होने पर वह मनुष्य सदा सुखी, धनवान व बुद्धिमान होता है, इसकी पत्नी क्रूर होती है। यवनजातक-भ्रातृपतौ तुर्यगते पितृमोदसुख-मुदयकृत् तेषाम्। मातुर्वैरकरश्चपापे पित्रर्थभक्षक: पुरुषः ॥ यह माता-पिता को आनंद देनेवाला, उनको तरक्की करानेवाला होता है किन्तु यह तृतीयेश पापग्रह हो तो माता से वैर होता है तथा पिता का धन खाता है। गर्गजातक-यही श्लोक दिया है। मानसागरी-यही श्लोक है, सिर्फ पितृवन्धुसहोदरेषु सुखभोगी अर्थात पिता व भाई बन्धुओं से सुख मिलता है इतना अधिक बतलाया है। नवाथेजी-अपने प्रयत्न से संपत्ति का संग्रह करता है, घरबार, खेतीवाडी आदि में धन लगाता है, माता-पिता व रिश्तेदारों को मदद करता है तथा ऐश्वर्य का उपभोग करता है। मोघेजी-यह सुखी होता है।

हमारे विचार-रवि, मंगल, गुरु, शुक्र, चंद्र व बुध तृतीयेश हो कर चतुर्थ में हो तो उपर्युक्त फलों का अनुभव आता है। शनि का अनुभव क्वचित आता है।

तृतीयेश पंचम में

लोमेशसंहिता-इस का मत तृतीयेश चतुर्थ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-सहजपे सुतगे बहुवान्धवैः सुतसहोदरपालधनी सुखी। विषयभुक् परकार्यपरः क्षमी ललितमूर्तिरसौ चिरजीवितः ॥ यह दीर्घायु, सुन्दर, क्षमा करनेवाला, दूसरों को मदद करनेवाला, उपभोग प्राप्त करनेवाला, सुखी, भाई व पुत्रों का पालन करनेवाला तथा बहुत भाइयों से युक्त होता है। मानसागरी व गर्गजातक में यही वर्णन है। नवाथेजी-यह ईश्वर की भक्ति बहुत करता है, बुद्धि के बल से प्रसिद्ध होता है, इस के पुत्र भी पराक्रमी होते हैं। मोघेजी-इस की बुद्धि अच्छी होती है।

हमारे विचार-उपर्युक्त सब फलों का अनु व चन्द्र, गुरु, शुक्र व रवि तृतीयेश होकर पंचम में हो तो आता है।

तृतीयेश षष्ठ में

लोमेशसंहिता-तुतीयेशो रिपौयस्य भ्राता शत्रुर्महाधनी। मातुलानां सुखं न स्यान्मातुल्यां भोगमिच्छति ॥ तृतीयेश षष्ठ में हो तो भाई से शत्रुता होती है, मामा का सुख नही मिलता, मामी से भोग करना चाहता है, बहुत धनवान होता है। यवनजातक-रिपुगते सहजाधिपतौ भवेन्नयनरोगयुतो रिपुमान् भवेत्। सहजसज्जनतोपि च दुष्टता क्रमयुतोऽथ रुजा परिपोडितः ॥ इस की आंखों में रोग होते हैं, शत्रु बहुत होते हैं; स्वाभाविक सज्जन (भाई) लोगों से भी दुष्टता होती है, खरीदविक्री के व्यवहार करता है; रोगी होता है। गर्ग व मानसागरी-यही वर्णन है, सिर्फ भूलाभी इतना शब्द आधिक है। नवाथेजी-इसका शत्रुओं से झगडा होता है, प्रयत्न सफल नही होते।

हमारे विचार-लोमेश का मत गुरु व शनि तृतीयेश होकर षष्ठ में हो तो सही सिद्ध होता है। शेष लोगों के वर्णन शुभ ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

तृतीयेश सप्तम में

लोमेशसहिता-तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिर्भवेत्। चौरो वा परगामी वा वाल्ये कष्टं दिने दिने ॥ तृतीयेश सप्तम या अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य चोर, व्यभिचारी होता है, इसे बचपन में बहुत कष्ट होते हैं, राजा के द्वार पर मौत होती है। यवनजातक-युवतिवैरकृदल्पपराक्रमी सहजभावपतौ मदगे नरः। सुभगसुन्दररूपवती सती युवति पापग्रहेषु रतो भवेत् ॥ तृतीयेश सप्तम में हो तो वह मनुष्य स्त्री से शत्रुता करता है, पराक्रम थोडा होता है, पत्नी सुन्दर होती है, तृतीयेश पापग्रह हो तो यह बहुत कामुक होता है। गर्गजातक-यही वर्णन है केवल पापग्रह हो तो पत्नी देवर के घर जाती है-क्रूरे देवागृहे याति-इतना अधिक बतलाया है। मानसागरी-यही वर्णन है। नवाथेजी-विवाद व लडाई में जीत होती है, प्रवास बहुत होता है, विवाह अपने प्रयत्न से होता है। मोघेजी-यह दुखी होता है।

हमारे विचार–लोमेश का आधा वर्णन शनि व मंगल के बारे में सही सिद्ध होता है। यवनजातक के फल शुभग्रहों के विषय में अनुभव में आते हैं। गर्ग का वर्णन गुरु, शुक्र व चन्द्र के बारे में सही सिद्ध होता है। नवाथे व मोघे द्वारा वर्णित फल मिश्र ग्रहों के हैं।

तृतीयेश अष्टम में

लोमेशसंहिता–इस का मत तृतीयेश सप्तम में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–सहजपेऽष्टमगे सरुषो नरो मृतसहोदरमित्रजनः खलैः। शुभखगैः शुभता धनयुग्भवेत् स्वयमपि प्रचुरामयवान् भवेत्॥ तृतीयेश पापग्रह होकर अष्टम में हो तो वह मनुष्य क्रोधी होता है तथा इसके भाई और मित्रों की मृत्यु होती है, शुभग्रह हो तो सब शुभ होता है, धन मिलता है, किन्तु रोग बहुत होते हैं। गर्गजातक–यवनजातक जैसा ही वर्णन है किन्तु क्रूरे बाहुव्यंगं जीवति यद्यष्टवर्षाणि अर्थात पापग्रह हो तो आठ वर्ष तक यदि जीवित रहे तो बाहु में व्यंग होता है इतना अधिक बतलाया है। मानसागरी–गर्गजैसाही वर्णन है। नवाथेजी–इसे भाई–बहिनों का सुख नही मिलता, कष्ट बहुत होते हैं। मोघेजी–यह–दुराचारी होता है।

हमारे विचार–ये सब फल रवि, चन्द्र, बुध को छोडकर अन्य ग्रहों के तृतीयेश होकर अष्टम में होने पर अनुभव में आते हैं।

तृतीयेश नवम में

लोमेशसंहिता–तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयोभवेत्। पिता तस्य महाचोरो सुसेवी दुःखदा सती॥ तृतीयेश नवम या व्यय में हो तो स्त्रियों से भाग्योदय होता है, इस का पिता चोर तथा पत्नी दुःख देनेवाली होती है। यवनजातक–सहजभावपतौ नवमस्थिते सहजवर्गरतोपि जनाश्रयः। भवति बालयुतोथ पराक्रमी शुभमतिः खलखेटगृहेन्यथा॥ यह भाई–बहिनों से स्नेह करता है, लोगों को सहारा देता है, पुत्रों से युक्त, अच्छी बुद्धिवाला तथा पराक्रमी होता है। तृतायेश पापग्रह हो तो

सब फल इसके उलटे होते हैं। गर्गजातक-धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बन्धुजितस्तथा सौम्ये। सद्बान्धवश्च सुकृतिः सोदरभक्तो भवेन्मनुजः॥ तृतीयेश पापग्रह हो तो यह भाइयों से पराजित होता है, शुभ ग्रह हो तो अच्छे काम करता है, बन्धु अच्छे होते हैं तथा उन पर भक्ति रहती है। मानसागरी-गर्ग जैसाही वर्णन है। नवाथेजी-यह प्रवास, तीर्थयात्रा, अच्छे काम करता है, मृत्यु के बाद भी लोग इस की तारीफ करते हैं। मोघेजी-इसे स्त्रियों से धन मिलता है; पिता बुरे काम करनेवाला तथा दीन होता है।

हमारे विचार-तृतीयेश पापग्रह होकर नवम में हो तो उपर्युक्त फलों में से बहुतसे सही सिद्ध होते हैं। पिता दुराचारी होना इस फल का अनुभव किसी भी ग्रह क बारे में नहीं आता।

तृतीयेश दशम में

लोमेशसंहिता-इसका मत तृतीयेश चतुर्थस्थान में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक-सहजपे दशमे च नृपात् सुखं पितृजनैः कुलवृद्धजनाश्रयः। बहुसुभाग्ययुतो नयनोत्सवो भवति मित्रयुतोऽतितरां शुचिः॥ इसे राजा व पिता आदि से सुख मिलता है, यह घर के वृद्ध लोगों को सहारा देता है, भाग्यवान, मित्रों से युक्त, शुद्ध तथा सुन्दर होता है। गर्गजातक-दुश्चिक्येशे दशमे नृपपूज्यो मातृबन्धुपरिभक्तः। उत्तमबन्धुसुमान्यो विनिश्चितो जायते मनुजः॥ यह राजा द्वारा सम्मानित, माता तथा बन्धु पर भक्ति रखनेवाला, अच्छे सम्बन्धियों द्वारा सम्मानित होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-यह अपने पराक्रम से प्रगति करता है, बडे बडे व्यवसाय शुरू करता है, सम्मान तथा राजदरबार में प्रमुख पद प्राप्त करता है। मोघेजी-यह धनवान तथा पराक्रमी होता है।

हमारे विचार-राजा से मान्यता मिलना यह संमिश्र फल है। अन्य फल सब ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

तृतीयेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत तृतीयेश लग्न में होने के फलों में वता चुके हैं। यवनजातक–सहजपे शुभलाभपराक्रमी भवगते सुतवन्धुभिरन्वितः। नृपतिनाभिमतो विजयी नरो बहुलभोगयुतो निपुणः सदा ।। यह अच्छे लाभ प्राप्त करनेवाला, पराक्रमी, पुत्र व बन्धुओं सहित, राजा द्वारा सम्मानित, विजयी तथा बहुत भोगों से युक्त होता है। गर्गजातक–लाभस्थः सहजेशः सुबान्धवं राजप्रियं नरं कुरुते। पुरुषवन्धुषु पूज्यं सेवाभिधायिनं भोगनिरतंच ।। इसके बन्धु अच्छे होते हैं, उनसे सम्मान मिलता है, यह राजा को प्रिय, लोगों से सेवा करानेवाला तथा उपभोगों से युक्त होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह व्यापार में बहुत धन कमाता है, श्रीमान होता है तथा मित्रों का सुख प्राप्त करता है। मोघेजी–यह धनवान तथा पराक्रमी होता है।

हमारे विचार–इस योग के फल सब ग्रहोंके बारेमें सही सिद्ध होते हैं।

तृतीयेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत तृतीयेश सप्तम में होने के फलों में वता चुके हैं। यवनजातक–व्ययगते सहजे व्ययवान् शुचिर्निजसुहृद्रिपुरल्पपराक्रमी। शुभसमागमतोऽपि शुभं भवेत् खलखगैर्जननीनृपतेर्भयम् ।। यह खर्चीला, शुद्ध, अपने सम्बन्धियों से शत्रुता करनेवाला, थोडा पराक्रमी होता है, तृतीयेश के साथ शुभग्रह हो तो शुभ फल मिलते हैं, पापग्रह हो तो माता को कष्ट तथा राजा से भय होता है। गर्गजातक–व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधी सुबन्धुसन्तापी। दूरे वासितबन्धुर्विदेशशीलं नर कुरुते ।। यह मित्रों से विरोध कर सम्बन्धियों को कष्ट देता है, स्वजनों से दूर विदेशों में रहता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह ऐश–आराम करनेवाला तथा खर्चीला होता है, व्यवसाय में इसका धन नष्ट होता है। मोघेजी–यह निर्धन होता है।

हमारे विचार–लोमेश, गर्ग, नवाथे, मोघे के वर्णन पापग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं। यवनजातक के फलों में खर्चीला होना, अपने सम्बन्धियों से शत्रुता, माता को कष्ट, राजा से भय ये फल भी पापग्रहों के ही हैं। शेष फल शुभग्रहों के हैं।

प्रकरण ६

चतुर्थ भावेश के फल

चतुर्थेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता–सुखेशे सप्तमे लग्ने बहुविद्यासमन्वितः। पित्रार्जित-धनत्यागी सभायां मूकवद् भवेत् ॥ चतुर्थेश लग्न में या सप्तम में हो तो वह मनुष्य बहुत विद्वान, पिता के धन को गंवानेवाला और सभाओं में चुप बैठनेवाला होता है। यवनजातक–सुखपतौ सुखवाहनभोगवांस्तनुगते तनुते धवलं यशः। जनकमातृसुखौघकरं परं सुभगलाभयुतं निरुजवपुः ॥ चतुर्थेश लग्न में हो तो वह मनुष्य सुखी, वाहन और उपभोगों से युक्त, कीर्तिमान, सुन्दर, नीरोग तथा माता-पिता के सुख से युक्त होता है, इसे बहुत लाभ होता है। गर्गजातक-तुर्यपतौ लग्नगते पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते। पितृपक्षवैरिकलितं पितृनाम्ना सुप्रसिद्ध च ॥ पिता व पुत्र में स्नेह रहता है पिता के नाम से यह सुप्रसिद्ध होता है किन्तु चाचा आदि पिता के सम्बन्धियों से शत्रुता होती है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह सुखी, धनवान, जायदाद व वाहनों का सुख प्राप्त करनेवाला होता है।

हमारे विचार–लोमेश का मत गुरु, रवि, चन्द्र, व बुध के बारे में अनुभव में आता है। गर्ग व यवनजातक का मत गुरु, शुक्र, बुध व रवि के बारे में तथा नवाथेजो का मत सिर्फ शुक्र के बारे में सही सिद्ध होता है।

चतुर्थेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता–सर्वसम्पद्युतो मानी साहसो कु (भूमि) सुखान्वित:। कुटुम्बै: संयुतो भोगी सुखेशे च द्वितीयगे ।। चतुर्थेश धनस्थान में हो तो वह मनुष्य सब सम्पत्ति से युक्त, अभिमानी, साहसी, जमीन–जायदाद के सुख से युक्त, परिवार से युक्त तथा उपभोग प्राप्त करनेवाला होता है। यवनजातक–सुखपतौ धनगे खलखेचरै: पितृविरोधकर: कृपण: शुचि:। शुभ खगै: पितृभक्तिधनाश्रय: शुभयुत: श्रुतिशास्त्रविशारद: ।। चतुर्थेश पापग्रह धनस्थान में हो तो पिता से विरोध होता है, कंजूस तथा शुद्ध रहता है, शुभ ग्रह हो तो पिता का भक्त, धनवान तथा इसके साथ शुभग्रह हो तो वेदशास्त्रों का पंडित होता है। गर्गजातक–पातालपे धनस्थे क्रूरखगै: पितृविरोधकृच्च शुभै:। पितृपालक: प्रसिद्ध: पिता लभेन्नैव तल्लक्ष्मीम् ।। चतुर्थेश पापग्रह हो तो पिता से विरोध होता है, शुभग्रह हो तो पिता का पालन करता है किन्तु पिता को इस का धन नही मिलता। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–कुटुम्ब व सम्बन्धियों का सुख अच्छा मिलता है, साहूकार होता है, धन का संग्रह करता है। मोघेजी–कुटुम्ब व धन से युक्त होता है।

हमारे विचार–लोमेश का मत मंगल के बारे में विशेष रूप से अनुभव में आता है। नवाथे व मोघे द्वारा वर्णित फल गुरु व शनि के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

चतुर्थेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता–सुखेशे तृतीयेलाभे नित्यरोगी धनी भवेत्। उदारो गुणवान् दाता स्वभुजार्जित वित्तवान् ।। चतुर्थेश तृतीय या लाभस्थान में हो तो वह मनुष्य हमेशा रोगी रहता है, धनवान, उदार, गुणवान, अपने प्रयत्न से धन कमानेवाला होता है। यवनजातक–सुखपतौ सहजालयगे क्षमी पितृसुहृज्जननीकलिकारक: । रथमहीवृषभादिसुखान्वित: शुभखगैर्बहुमित्रयुतो नर: ।। यह माता–पिता तथा मित्रों से झगडा करता है, जमीन व वाहनों का सुख प्राप्त करता है, क्षमाशील होता है, चतुर्थेश

शुभग्रह से युक्त हो तो इसे बहुतसे मित्र मिलते हैं। गर्गजातक–तुर्येशे सहजगते पितृमातृच्छेदकं विदितपितरम्। पित्रा सहकलहकरं पितृबान्धवपालकं विदितम्॥ इस का पिता प्रसिद्ध होता है किन्तु यह पिता से झगडा करता है, माता पिता का नाश करता है, फिर भी पिता के सबन्धियों का पालन करता है तथा प्रसिद्ध होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह अपने पराक्रम से धन कमाता है तथा घर–जायदाद में उसे खर्च करता है, इस के पास पैसा नही बचता, मोघेजी–यह असफल व चिन्तित रहता है।

हमारे विचार–लोमेश व यवनजातक के फल मंगल, शनि व रवि के बारे में अनुभव में आते हैं। नवाथेजी का मत मंगल व रवि के बारे में तथा मोघेजी का मत शुभग्रहों के बारे में सही सिद्ध होता हैं।

चतुर्थेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता–तुर्येशे तुर्यगे मन्त्री भवेत्सर्वजनाधिपः। चतुरः शीलवान् मानी धनाढ्यः स्त्री प्रियः सुखी॥ चतुर्थेश चतुर्थ में हो तो वह मनुष्य राजा अथवा मन्त्री, चतुर, शीलवान, अभिमानी, धनवान, सुखी तथा स्त्रीप्रिय होता है। यवनजातक–सुखपतौ सुखगे सुखसन्निधौ नृपसमो धनवान् बहुसेवकः। पितृसुखं बहुलं जनमान्यता रथगजाश्च शुभैः सुखभाग् नरः॥ यह सुखी, राजा जैसा धनवान, बहुत नौकरों से युक्त, लोगों द्वारा सम्मानित, हाथी, रथ आदि वाहनों से युक्त होता है, इसे पिता का सुख अच्छा मिलता है। गर्गजातक–तुर्यगते तुर्यपतौ पितरि क्षितिपाधिनाथमानरतम्। पितृलाभपरो भवति स्वधर्मनिरतः सुखी भवति॥ यह पिता, राजा, मालिक का आदर करता है, पिता से इसे लाभ होता है. अपने धर्म का पालन करता है तथा सुखी होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–सुख–चैन से जीवन बीतता है, खेती–बगीचे–घरबार आदि में मन लगा रहता है, आप्तवर्ग तथा माता का सुख अच्छा मिलता है।

हमारे विचार–इस योग के फल थोडे थोडे सब ग्रहों के मिलते हैं। शनि से पिता का सुख कम मिलता है, गुरु से माता का सुख कम मिलता है, मंगल से भाईबहिनों का सुख कम मिलता है। उन कारक व्यक्तियों (माता–पिता–भाई) का सुख न मिला तो अन्य (खेती, घरबार, वाहन आदि) सुख अच्छा मिलता है। व्यक्तियों का सुख मिला तो अन्य सुख कम मिलता है, इस प्रकार मिश्र फल मिलता है।

चतुर्थेश पंचम स्थान में

लोमेशसहिता–तुर्येशे पंचमे भाग्ये सुखी सर्वजनप्रियः। विष्णुभक्तिरतो मानी स्वभुजार्तिविनाशकृत्॥ चतुर्थेश पंचम या भाग्य में हो तो वह मनुष्य सुखी, लोकप्रिय, ईश्वरभक्त, अभिमानी, अपने प्रयत्न से कष्ट दूर करनेवाला होता है। यवनजातक–सुखपतौ बहुजीवितवान् नरः सुतगते सुतयुक्तसुधीर्नरः। शुभवशात् सुखभोगधनान्वितः श्रुतिधरोऽतिपवित्रविलेखकः॥ यह दीर्घायु, बुद्धिमान, पुत्रों से युक्त, शुभग्रह हो तो सुखी, धनवान, उपभोगों से सपन्न, शास्त्रों का पंडित, पवित्र तथा लेखक होता है। गर्गजातक–सुतगे तुर्यगृहेशे पितृलाभाद्भोगवान्मनुजः। दीर्घायुर्भवतिनरां क्षितिपतिमित्रस्तु लाभदो भवति॥ पिता की कमाई से इसे उपभोग मिलते हैं, दीर्घायु होता है तथा राजा से मित्रता कर लाभ प्राप्त करता है। मानसागरी–पहली पंक्ति गर्ग जैसी है, दूसरी में ससुतः सुतपालकश्चैव अर्थात यह पुत्रों से युक्त व पुत्रों का पालन करनेवाला होता है इतना भिन्न है। नवाथेजी–यह माता का भक्त, श्रीमान, पुत्रों के लिए जायदाद छोड जानेवाला होता है।

हमारे विचार–माता की भक्ति के सिवाय सब फल शनि के बारे में, धनवान होने के सिवाय सब फल गुरु के बारे में, पुत्रयुक्त होने के सिवाय सब फल रवि के बारे में अनुभव में आते हैं। शेष फल शुभ ग्रहों के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

चतुर्थेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता-सुखेशे शत्रुगेहस्थे तदा स्याद् बहुमातृक:। क्रोधी वैरी व्यभिचारी दुष्टचित्तो मनस्व्यपि ॥ चतुर्थेश षष्ठ में हो तो वह मनुष्य क्रोधी, व्यभिचारी, वैरी, अभिमानी होता है, इस की माताएं अधिक होती हैं। यवनजातक-भवति मातृपतौ रिपुगेहगे रिपुयुतोऽपि अनर्थविनाशक:। खलखगोऽपि कलंकितमातुलो भवति सौम्यखगैर्धन-संचयी ॥ यह शत्रुओं से युक्त किन्तु संकट दूर करनेवाला होता है, चतुर्थेश पापग्रह हो तो इसका मामा कलंकयुक्त होता है, शुभग्रह हो तो यह धनवान होता है। गर्गजातक-हिबुकपतौ रिपुसंस्थे पितृद्रव्यविनाशको पितरि वैरी। पितृदोषकर: क्रूरे सौम्ये धनसंचयस्तनय: ॥ यह पिता से झगडा कर पिता के धन को नष्ट करता है, पापग्रह हो तो पिता दोषयुक्त होता है, शुभ ग्रह हो तो धन का संग्रह होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है, सिर्फ मातुरर्थविनाशक: अर्थात माता का धन नष्ट करता है इतना अधिक है। नवाथेजी-यह घर-जायदाद प्राप्त करना चाहता है किन्तु उस की इच्छा पूरी नही होती, पशु भी नही मिलते, माता व सम्बन्धियों से शत्रुता होती है। मोघेजी-यह दुराचारी होता है, इस के सौतेली माँ होती है।

हमारे विचार-लोमेश, नवाथे व मोघे द्वारा वर्णित फल मंगल के बारे में अनुभव में आते हैं। शेप फल अन्य ग्रहों के बारे में नही सिद्ध होते हैं।

चतुर्थेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता-चतुर्थेश लग्न में होने के फलोंमें इसका मत बता चुके हैं। यवनजातक-मदनगेम्बुपतौ च सुराकृतिर्धनयुतो युवतीजनवल्लभ:। स्मरयुत: सुभग: शुभखेचरै: खलखगेऽतिखल: कठिन: पुमान् ॥ चतुर्थेश शुभग्रह सप्तम में हो तो वह मनुष्य देव जैसा सुन्दर, धनवान, स्त्रियों को प्रिय, कामुक होता है, पापग्रह हो तो बहुत दुष्ट व कठोर होता है, गर्गजातक-अम्बुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं सुखान्न पालयति। सौम्ये

पालयति पुमान् बलयुक्तः कुलपतिं कुरुते ॥ चतुर्थेश पापग्रह सप्तम में हो तो ससुर से अनबन होती है, शुभग्रह हो तो अच्छे सम्बन्ध रहते हैं, बलवान तथा कुल में प्रमुख होता है। मानसागरी-अम्बुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं स्नुषा न पालयति। सौम्ये पालयति पुमान् बलयुक्तः कुलवतीं कुरुते ॥ चतुर्थेश पापग्रह सप्तम में हो तो पुत्रवधू ससुर से झगडती है, शुभ ग्रह हो तो अच्छे सम्बन्ध रहते हैं (हिन्दी टीकाकार बन्सीधर पांडे के अनुसार इस श्लोक में कुलवती का अर्थ कुलटा-व्यभिचारिणी है, शुक्र व मंगल का यह फल बताया है)। नवाथेजी-यह अनाज व फल आदि का उत्पादन स्वयं खेत में परिश्रम करके करता है। मोघेजी-यह विद्वान तथा उदार होता है।

हमारे विचार-लोमेश व मोघे द्वारा बताये गये फल शनि व रवि के बारे में अनुभव में आते हैं। गर्ग, मानसागरी व यवनजातक में शुभ व अशुभ ग्रहों के फल अलग अलग बताये ही हैं। उन के फल मुख्यतः गुरु, शुक्र, बुध व चन्द्र के बारे में अनुभव में आते है।

चतुर्थेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-सुखेशे व्ययरन्ध्रस्थे सुखहीनो भवेन्नरः। पितृसौख्यं भवेदल्पं दीर्घायुर्जायते ध्रुवम् ॥ चतुर्थेश अष्टम या व्यय में हो तो उस मनुष्य को सुख नही मिलता, पिता का सौख्य कम मिलता है, यह दीर्घायु होता है। यवनजातक-मृतिगते सरुजोम्बुपतौ नरः सुखयुतः पितृमातृसुखाल्पकः भवति वाहननाशकरः शुभे खलखगेतिसमागमनाशकः ॥ इसे माता-पिता का सुख कम मिलता है, वाहनों का सुख नष्ट होता है, यह रोगी होता है, चतुर्थेश पापग्रह हो तो स्त्री या मित्रों से वियोग होता है। गर्गजातक-छिद्रगते तुर्यपतौ क्रूरं रोगान्वितं दरिद्रं वा। दुष्कर्मपरं मृत्युप्रिय मथवा मानवं कुरुते ॥ यह क्रूर, रोगी, दरिद्र, दुराचारी आत्मघात करनेवाला होता है। मानसागरी-यही वर्णन है। नवाथेजी-इसे भूमि में गड़ा धन मिलता है, आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है, माता व

सम्बन्धियों का सुख कम मिलता है, स्वास्थ्य ठीक नही रहता। मोघेजी-यह नपुसंक तथा दुखी होता है, इसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है।

हमारे विचार-नवाथेजी के वर्णन में आर्थिक स्थिति अच्छी होने का अनुभव केवल शुक्र के बारे में आता है। मोघेजी के वर्णन में स्त्री व्यभिचारिणी होने का अनुभव भी शुक्र के बारे में आता है। नपुंसक होने का फल किसी ग्रह के बारे में अनुभव में नही आता। शेष फल प्रायः अकेले शनि के बारे में सही सिद्ध होते हैं।

चतुर्थेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत चतुर्थेश पंचम में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-नवमगे सुखपे बहुभाग्यवान् पितृधनार्थसुहृन्मनुजाधिपः। भवति तीर्थकरो व्रतवान् क्षमी सुनयनः परदेशसुखी नरः॥ यह बहुत भाग्यवान होता है, पिता का धन प्राप्त करता है, मित्रों व अन्य लोगों पर अधिकार चलाता है, तीर्थयात्रा तथा व्रत आदि करता है, क्षमावान. सुन्दर आंखोंवाला तथा विदेश में सुख प्राप्त करनेवाला होता है। गर्गजातक-सुकृते तुर्तपतावतिसत्संगी समस्तविद्यावान्। पितृधर्मसंग्रहकृत् पितृधर्मापेक्षको मनुजः॥ यह अच्छे लोगों की संगति में रहता है, विद्वान होता है, पिताका अनुसरण करता है। पिता को ही तीर्थ मानता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है, सिर्फ अन्त में पितृनिरपेक्षः अर्थात पिता की अपेक्षा न रखना इतना भिन्न है। नवाथेजी-यह माता-पिता से विरोध करता है, जायदाद की खरीद विक्री में लाभ नही होता। मोघेजी-यह अपने प्रयत्न से धन कमाता है तथा सुखों का उपभोग करता है।

हमारे विचार-प्रायः ये सब फल रवि, गुरु बुध, शुक्र व चन्द्र के बारे में अनुभव में आते हैं।

चतुर्थेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-सुखेशो दशमे यस्य मातृसौख्येन संयुतः। धनधान्यसमायुक्तो धर्मे प्रीतिश्च जायते॥ इसे माता का सुख मिलता है, धन-

धान्य मिलता है तथा धर्म में रुचि रहती है। यवनजातक-गगनगे सुखपे गृहिणीसुखं जनकमातृकरो धनभुक् क्षमी। सुनयनः परतो नृपसम्मतः खलखगैर्विपरीतफलं वदेत् ॥ इसे पत्नी का सुख मिलता है, मातापिता से धन मिलता है, क्षमावान, सुन्दर आंखोंवाला, राजाद्वारा सम्मानित होता है, किन्तु चतुर्थेश पापग्रह हो तो सब फल उलटे बताने चाहिये। गर्गजातक-पातालेशेम्बरगे पापे सुतो मातरं त्यजति। कन्यादयितः सौम्यैः पुनरन्यसेवाकरः पुरुषः ॥ चतुर्थेश पापग्रह हो तो पुत्र माता को छोड देता है तथा उसकी पत्नी को कन्याएं ही होती हैं, शुभग्रह हो तो यह दूसरों की सेवा करता है। मानसागरी-पातालपेम्बरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः। सृजते त्वन्यां दयितां सौम्ये पुनरन्यसेवकः पुरुषः ॥ चतुर्थेश पापग्रह हो तो यह अपने पुत्र व उसकी माता (अपनी पत्नी) को छोड कर दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता है, शुभग्रह हो तो दूसरों की सेवा करता है। नवाथेजी-यह सम्मान व अधिकार पाता है, राजा को प्रिय होता है, पिता से स्नेह करता है, तथा धनवान होता है। मोघेजी-यह राजा द्वारा सम्मानित तथा सुखों का उपभोग करनेवाला होता है।

हमारे विचार-ऊपर जो फल बताये हैं उनमें अशुभ फल शनि के बारे में तथा शुभ फल अन्य ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

चतुर्थेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत चतुर्थेश तृतीय में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक-भगवतीन्दुपतौ पितृपालको विविधलब्धियुतः शुभकृत्सदा। पितरि मातरि भक्तियुतो नरः प्रचुरजीवितरोगविवर्जितः ॥ यह माता-पिता पर भक्ति रख कर उनका पालन करता है, विविध लाभ प्राप्त करता है, अच्छे काम करता है तथा दीर्घायु व नीरोग होता है। गर्गजातक-लाभगते तुर्यपतौ पितृपालको विदेशगो चाढ्यः। पापे तत्पतिखेटे त्वन्यपितुर्जन्म निर्देश्यम् ॥ यह पिता का पालन करता है, विदेश यात्रा करता है, धनवान होता है, चतुर्थेश पापग्रह हो तो इसका जन्म

व्यभिचार से हुआ समझना चाहिए। मानसागरी–एकादशे तुर्यपतौ धर्मी पितृपालकः सुकर्मा च। पितृभक्तो भवति पुनः प्रचुरायुर्व्याधिरहितश्च॥ इसका वर्णन यवनजातक जैसा है। नवाथेजी–यह अकस्मात धन प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयत्न करता है किन्तु सफल नही होता। मोघेजी–यह रोगी होता हैं।

हमारे विचार–उपर्युक्त प्रायः सब फल रवि, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं। गर्गने जो चतुर्थेश पापग्रह लाभ में होने का फल व्यभिचार से जन्म होना लिखा है यह इस अकेले योग में किसी भी ग्रह के बारे में अनुभव में आना कठिन है, ऐसा फल बतलाना संभव नही है।

चतुर्थेश व्ययस्थान में

लोमेशसंहिता–चतुर्थेश अष्टम में होने के फलों में इसका मत बता चुके हैं। यवनजातक–व्ययगते सुखपे पितृनाशको यदि विदेशगतो जनको भवेत्। भवति दुष्टखगैर्युतजातकः शुभखगैः पितृसौख्यकरः सदा॥ इसके पिता का नाश होता है अथवा वह जीवित रहा हो तो विदेश में रहता है, यह पापग्रह का फल है, शुभग्रह हो तो पिता का सुख मिलता है। गर्गजातक–द्वादशगे तुर्यपतौ मृतपितृको वा विदेशगो भवति। इस के पिता की मृत्यु होती है या इसे विदेश में रहना पडता है, पापग्रह हो तो व्यभिचारी सन्तति होती है। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–यह घरबार, खेतीबाडी में बहुत धन खर्च करता है। मोघेजी–यह कष्ट भोगता है।

हमारे विचार–प्रायः उपर्युक्त सब फल रवि व शनि के बारे में आते हैं। गर्ग का व्यभिचारी सन्तति का फल ठीक नही प्रतीत होता।

प्रकरण ७

पंचम भावेश के फल

पंचमेश लग्न में

लोमेशसंहिता-सुतेशे लग्नसहजे मायावी पिशुनो महान् । दोषोपि दत्तवान्तव कच्चिद् द्रव्यस्य का कथा ।। पंचमेश लग्न या तृतीय में हो तो वह मनुष्य कपटी, चुगलखोर, दूसरों के कुछ कहने की परवाह न करनेवाला, पैसे के मामलों में भी निन्दा की फिक्र न करनेवाला होता है, यवनजातक-लग्ने गते सन्ततिपे सुतानां सुख सुविद्यारतिमन्त्रसिद्धिः । शास्त्राणि जानाति सुकर्मकारिरागांगयुक्तः खलु विष्णुभक्तः ।। यह ईश्वर भक्त अच्छे काम करनेवाला, शास्त्रज्ञ, विद्वान, मंत्रों की साधना में सफल तथा पुत्रसुख प्राप्त करनेवाला होता है। गर्ग व मानसागरी में यही वर्णन है। नवाथेजी-यह विद्याप्रिय, बुद्धिमान तथा सूझबूझवाला होता है। मोघेजी-यह कपटी व लोभी होता है।

हमारे विचार-लोमेश व मोघेजी के मत का अनुभव शनि व मंगल के बारे में तथा अन्य फलों का अनुभव शेष ग्रहों के बारे में आता है।

पंचमेश धनस्थान में

लोमेशसंहिता-सुतेशे चायुषि वित्ते बहुमैत्रो न संशयः । उदरव्याधिसंयुक्तः क्रोधयुक्तो धनान्वितः ।। पचमेश धन या अष्टम स्थान में हो तो बहुत मित्र मिलते हैं, पेट की बीमारी होती हैं, क्रोधी तथा धनी होता है। यवनजातक-सुतेशे गते द्रव्यभावे नरः स्यात् कुलेशाप्तवित्तः कुटुम्बे विरोधी। भवेद्धानिकारी जनो भोगसक्तः शुभैर्जीवपुत्रो भवेद् द्रव्यनाथ ।। इसे पिता से संपत्ति मिलती है किन्तु कुटुम्ब से विरोध तथा उसकी हानि करता है, उपभोगों में आसक्त होता है, शुभग्रह युक्त हो तो पुत्र होते हैं, धनवान होता है। गर्गजातक-पंचमपतिर्धनस्थः क्रूरः खचरो धनोज्झितं कुरुते। गीतादिकाव्यकलितं कष्टभुजं स्थान प्रचुरं च ।। पंचमेश पापग्रह धनस्थान में हो तो वह निर्धन होता है, कवि या गायक होता

है, दुःख सहन करना पडता है तथा अपने स्थान में बडे प्रयत्न से स्थिरता मिलती है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है, टीकाकारने स्थान प्रचुर का अर्थ अपने स्थान में प्रसिद्ध होना बताया है। नवाथेजी-यह विद्वान तथा हमेशा ज्ञानप्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है, बुद्धि-जीवी होकर कीर्ति प्राप्त करता है।

हमारे विचार-लोमेश का वर्णन शनि के बारे में ठीक प्रतीत होता है। नवाथेजी का वर्णन रवि, बुध, शुक्र के बारे में सही मालूम पडता है। अन्य लेखकोंने स्वयं ही शुभ-अशुभ ग्रहों के फल अलग अलग बताये हैं।

पंचमेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत पंचमेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-सुतेशे गते विक्रमे विक्रमी स्यात् सुहृच्छान्तियुक्तो वचोमाधुरीयुक्। शुभे खेट युक्ते शुभ प्राप्तिकारी मनःकार्यसिद्धिः सुखी शान्तनम्रः ॥ यह पराक्रमी होता है, मित्रों से युक्त होता है, शान्त, मीठा बोलनेवाला होता है, शुभग्रह युक्त हो तो सब शुभ फल मिलते हैं, मन में सोचे हुए काम सफल होते हैं, सुख-शान्ति मिलती है नम्र होता है। गर्गजातक-तनयपतिः सहजगतः समधुरवाचं सुबन्धुजनविदितम्। कुरुते सुतांस्तदीयान् तनयापरिपालितान् बन्धून् ॥ यह मीठा बोलनेवाला, रिश्तेदारों में प्रसिद्ध होता है, इसकी कन्या पिता व भाइयों को मदद करती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह विशिष्ट बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करता रहता है, ईश्वर भक्त, परोपकारी, पुण्यकार्य करनेवाला होता हैं। मोघेजी-यह लोभी होता है।

हमारे विचार-लोमेश व मोघेजी का मत शनि के बारे में ठीक मालूम होता है। नवाथेजी का मत रवि, बुध, गुरु, शुक्र के बारे में सही प्रतीत होता है। गर्ग का वर्णन आधे भाग में ठीक प्रतीत होता है।

पंचमेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता-सुतेशे मातृभवने चिरं मातृसुखं भवेत्। लक्ष्मीयुक्तो सुबुद्धिश्च सचिवश्च गुरुस्तथा ॥ इसे माता का सुख अच्छा मिलता है, यह धनवान, बुद्धिमान मंत्री या गुरु होता है। यवनजातक-सुतपतिः कुरुते सुखभावगो जनकभक्तिकरं कुशलं नरम्। तदनुपूर्वज कर्मकरं सदा कविजने वसुवस्त्रनिरूपणम् ॥ यह मातापिता का भक्त, कुशल, पूर्वजों का अनुकरण करनेवाला, कवियों को धन व वस्त्र देनेवाला होता है। गर्ग-जातक-पाताले पंचमपो गुरुभक्तिरतं पितृकर्मनिरतंच। पुरुषं जननीभक्तं कुरुते क्रूरस्तु विपरीतम् ॥ यह गुरु का भक्त, पिता का काम करनेवाला, माता का भक्त होता है किन्तु यह पापग्रह होने पर विरुद्ध फल मिलते हैं। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-यह श्रीमान होता है।

हमारे विचार-लोमेश व नवाथेजी के मत रवि, गुरु, बुध, शुक्र, चन्द्र व कभी कभी मंगल के बारे में सही मालूम पडते हैं। अन्य लेखकोंने शुभ-अशुभ ग्रहों के अलग अलग फल बताये ही हैं।

पंचमेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता-सुतेशः पंचमे यस्य तस्य पुत्रो न जीवति। क्षणिकः क्रूरभाषी च धार्मिको मतिमान् भवेत् ॥ इस के पुत्र जीवित नही रहते, वृत्ति चंचल, बोलना कठोर, बुद्धि अच्छी तथा धर्म में निष्ठा रहती है। यवनजातक-तनयभावपतिस्तनयस्थितो मतियुतं वचनं प्रबलं जनम्। बहुलमानयुतं पुरुषोत्तमं प्रवरलोकवरं कुरुते नरम् ॥ इस का बोलना बुद्धिपूर्ण होता है, लोगों में प्रबलता, उत्तमता तथा बहुत सम्मान मिलता है। गर्गजातक-तनयगतस्तनयपतिर्मतिमन्तं मानिनं वचनकुशलम्। सुत-कलितं प्रचुरधनं ख्यातियुतं मानवं कुरुते ॥ यह बुद्धिमान, अभिमानी, बोलने में चतुर, पुत्रयुक्त, बहुत धनवान तथा विख्यात होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह बुद्धिमान, विद्वान, धनवान, ईश्वरभक्त तथा पुत्रों के सुख से युक्त होता है।

हमारे विचार–पचमेश शुक्र स्वगृह में हो तो पुत्र सुख मिलता है। पापग्रह हो तो सुख नही मिलता। अन्य फल शेष सब ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

पंचमेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता–सुतेश षष्ठरि:फस्थे पुत्रशत्रुत्वमाप्नुयात्। मृत्युतो ग्राह्यपुत्रो वा धनपुत्रोथवा भवेत्॥ पंचमेश षष्ट या व्ययस्थान में हो तो पुत्र मर जाते हैं, दत्तक पुत्र लेना पडता है या कोई लडका खरीदकर पाला जाता है, या पुत्र से शत्रुता होती है। यवनजातक–रिपुगतस्तनयाधिपतिर्यदा रिपुजनाभिरतं कुरुते नरम्। स्थिततनुं बहुदोषयुतं सदा धनसुतैरहितं खलखेचरैः॥ यह शत्रु के अनुकूल आचरण करता है, दोषों से युक्त, स्थिर शरीरका तथा पचमेश पापग्रह हो तो निर्धन व पुत्रहीन होता है। गर्गजातक–पंचमपतिस्तुषष्ठे शस्त्रप्रियमात्मजैर्हीनम्। रोगयुतं धनरहितं क्रूरः खचरः करोति क्रूरतरम्॥ यह निर्धन, रोगी, पुत्रहीन तथा हथियारों में रुचि लेनेवाला होता है, पंचमेश पापग्रह हो तो इस से भी कठोर फल मिलते हैं। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है, केवल शत्रुयुतं अर्थात शत्रुओं से युक्त होना इतना शब्द अधिक है। नवाथेजी–इस की बुद्धि भ्रष्ट होती है, शिक्षा अधूरी रहती है, पढने में रुकावटें आती हैं, शत्रुता उत्पन्न होती है।

हमारे विचार–ये सब फल पापग्रहों के हैं। शुभ ग्रह हो तो इतने कठोर फल नही मिल सकते।

पंचमेश सप्तम स्थान में

मंत्रेश्वर–दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोथवाधीश्वरो द्यूने वा निधनेश्वरोपि कुरुते पत्नीविनाशं ध्रुवम्॥ सप्तमेश पंचम में या पंचमेश सप्तम में होने पर पत्नी की मृत्यु होती है, पुत्र नही होते। लोमेशसंहिता–सुतेशे कामगे मानी सर्वधर्मसमन्वितः। तुंगयष्टितनुःस्वामी भक्तियुक्तश्च तेजसा॥ पंचमेश सप्तम में होने पर वह मनुष्य अभिमानी

सब धर्मों को सम्मान देने वाला, ऊंचे कदका, अधिकारी, भक्त तथा तेजस्वी होता है। यवनजातक-मदनगस्तनयस्थलनायकः सुभगपुत्रवती दयिता भवेत्। स्वजनभक्तिरता प्रियवादिनी सुजनशीलवती तनुमध्यमा ॥ इस की पत्नी सुन्दर, पुत्रयुक्त, अपने सम्बन्धियों पर स्नेह रखनेवाली, मधुर बोलनेवाली, सदाचारी तथा मध्यम कद की होती है। गर्गजातक-तनयपतौ सप्तमगे सुप्रसूना सुभगाथ दैवरता। गुरुभक्ता प्रियवचना सच्छीला तस्य जायते दयिता ॥ इस की पत्नी सदाचारी, मधुर बोलने वाली, बडे लोगों पर स्नेह रखनेवाली, सुन्दर, भाग्यपर विश्वास रखने वाली तथा अच्छे पुत्रों से युक्त होती है। मानसागरी-तनयपतौ सप्तमगे स्वसुताः सुभगाश्च देवगुरुभक्ताः। प्रियवादिनी सुशीला नरस्य ननु जायते दयिता ॥ इस की पत्नी सदाचारी व मधुर बोलनेवाली तथा पुत्र सुन्दर एवं देव-गुरु-भक्त होते हैं। नवाथेजी-पत्नी बुद्धिमान मिलती है, ज्ञानचर्चा करता रहता है, पुत्रसुख मिलता है. व्यापार या वकालत में वृद्धि अच्छी रहती। मांथेजी-यह पराक्रमी व धनवान होता है।

हमारे विचार-मन्त्रेश्वर का मत रवि व गुरु के बारे में तथा शेष फल अन्य ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

पंचमेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत पचमेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-सुतपतौ निधनंस्थलगे नरः कुवचनाभिरतो विगतांगकः। भवति चंडरुचिश्चपलो नरो गतधनो विकलः शठतस्करः ॥ यह मनुष्य कठोर बोलनेवाला, व्यंग से युक्त, क्रूर, चंचल, निर्धन, चोर, बदमाश होता है। गर्गजातक-सुतपे निधनगृहस्थे कुत्सितवाङ्निरालम्बो मन्दः। नष्टा व्यंगास्तनयाः सहजा अपि संभवन्ति तथा ॥ यह कुत्सित बोलनेवाला, बेघरबार, मूर्ख होता है, इस के भाई तथा पुत्र नष्ट होते हैं या व्यंगयुक्त होते हैं। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, सिर्फ विधुर होना इतना अधिक फल बतलाया है। नवाथेजी-इस की शिक्षा अधूरी रहती

है तथा सन्तति सुख ठीक नही मिलता। मोघेजी-इस की छाती में रोग होते हैं।

हमारे विचार-ये सब अशुभ फल पंचमेश पापग्रह होकर अष्टम में हो तो अनुभव में आते हैं। शुभ ग्रह हो तो उलटे फलों का अनुभव आता है।

पंचमेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-सुतेशो नवमे कर्णे पुत्रो भूपसमो भवेत्। अथवा ग्रन्थकर्ता च विख्यातो कुलदीपकः॥ पंचमेश नवम या दशम में हो तो वह ग्रन्थकर्ता, प्रसिद्ध, कुल के लिए भूषण होता है, इस का पुत्र राजा जैसा भाग्यवान होता है। यवनजातक-सुकृतभावगतस्तनयाधिपः समवितर्क-विभाजनवल्लभः। सकलशास्त्रकलाकुशलो भवेत् नृपतिदत्तरथाश्वयुतो नरः॥ यह तर्कशास्त्र का ज्ञाता, समस्त शास्त्रों व कलाओं में कुशल हो कर राजा से रथ घोडे प्राप्त करता है। गर्गजातक-सुकृतस्थः तनयपतिः सुबोधविद्याढ्यगीतरतम्। नृपपूजितस्वरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते॥ यह अच्छा ज्ञानी, विद्वान, संगीत व नाटक में रुचि लेनेवाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह शिक्षक, तत्त्वज्ञ, ग्रन्थकर्ता होता है, धर्म के विषय में विशिष्ट मत होते हैं. धन अच्छा मिलता है।

हमारे विचार-शनि को छोड कर अन्य सब ग्रहों के बारे में उपर्युक्त फलों का अनुभव आता है।

पंचमेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत पंचमेश नवम स्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-दशमगः कुरुते सुतनायको नृपतिकर्मकरं वनितारतम्। विविधलाभयुतं प्रवरं नरं प्रवरकर्मकरं सुखसंयुतम्॥ यह राजकर्मचारी, स्त्रियों को प्रिय, विविध लाभ प्राप्त करनेवाला, श्रेष्ठ काम करनेवाला तथा सुखी होता है। गर्गजातक-तनयपतिर्नृपगृहगो

नृपकर्माणं नृपाकलितम् । सत्कर्मरतं प्रवरं जननीकृतमुखाशनं कुरुते ।। यह राजकार्य करनेवाला, राजा के आसपास रहनेवाला, अच्छे, काम करनेवाला, माता के सुख से युक्त होता है। मानसागरी—में गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी—यह राजनीतिज्ञ तथा नौकरी से उपजीविका चलानेवाला होता है। मोघेजी—यह तथा इस के पुत्र पढे लिखे होते हैं।

हमारे विचार—सभी ग्रहों के बारे में उपर्युक्त फलों का अनुभव आता है।

पंचमेश-लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता—सुतेशे लाभभवने पण्डितो जनवल्लभः। ग्रन्थकर्ता महादक्षो बहुपुत्रो धनान्वितः ।। यह पण्डित, लोकप्रिय, ग्रन्थकर्ता, चतुर बहुत पुत्रों से युक्त तथा धनवान होता है। यवनजातक—सुनपतिर्भवगः सुखसयुतं प्रकुरुते सुनमित्रयुतं नरम् प्रवरगानकलाप्रवरं विभुं नृपतितुल्यकुलं च सदैव हि ।। यह सुखी, पुत्र व मित्रों से युक्त, उत्तम संगीत में निपुण, अधिकारी, राजा जैसे घराने में उत्पन्न (या वैसी रहनसहन का) होता है। गर्गजातक—सुतनाथे लाभगते शूरः सुनवान् सुकृत्यकृद् भोगी। गीतादिकलाकलितोनृपलाभीजायते मनुजः ।। यह पुत्रों से युक्त, शूर, अच्छे काम करनेवाला, संगीत आदि कलाओं में कुशल, उपभोग तथा राजा से लाभ प्राप्त करनेवाला होता है। मानसागरी—गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी—यह बुद्धिमान, विद्वान, धनवान, पुत्रयुक्त होता है।

हमारे विचार—उपर्युक्त फलों का अनुभव कम अधिक सभी ग्रहों के बारे में मिलता है।

पंचमेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता—इस का मत पचमेश षष्ठ में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक—व्ययगतोऽन्यपकृत् सुतनायको विगतपुत्रसुखं खचरैः खलैः। सुतयुत च शुभैः कुरुते नरं स्वपरदेशगमागमनोत्सुकम् ।। यह पापग्रह हो तो पुत्रहीन तथा शुभग्रह हो तो पुत्रयुक्त होता है, इसे अपने

देश और विदेश में जाने आने की उत्सुकता रहती है। गर्गजातक–पंचमेशे द्वादशगे क्रूरे सुतरहितः शुभे ससुतः। सुतसंतापक्लृप्तो विदेशगमनोद्यतो मनुजः ॥ पापग्रह हो तो पुत्रहीन होता है, शुभ ग्रह हो तो पुत्रयुक्त होता है, पुत्रों के कष्ट से विदेश में जाना चाहता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–बुद्धि के दुरुपयोग से आपत्ति व दरिद्रता से कष्ट होता है।

हमारे विचार–गर्ग व यवनजातक में शुभ व अशुभ ग्रहों के फल अलग बताये ही हैं। शेष फल पापग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

प्रकरण ८

षष्ठ भावेश के फल

षष्ठेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता–षष्ठेशे सप्तमे लाभे लग्ने वा पशुमान् भवेत्। धनवान् गुणवान् मानी साहसी पुत्रवर्जितः ॥ षष्ठेश लग्न में, सप्तम में या लाभ में होने पर वह मनुष्य धनवान, गुणवान, अभिमानी, साहसी, पशु पालनेवाला, किन्तु पुत्रहीन होता है। यवनजातक–रिपुपतौ रिपुहा तनुगे यदा विगतवैरभयः सबलः सदा। स्वजनकष्टप्रदश्च पुमान् सदा बहुचतुष्पदवाहनभोगवान् ॥ यह शत्रुओं का नाश करता है, वैर का डर नही रहता, बलवान होता है, अपने लोगों को कष्ट देता है, बहुत पशु व वाहनों का उपभोग प्राप्त करता है। गर्गजातक–षष्ठेशे लग्नगते नीरुग् निरुत्साही कुटुम्बकष्टकरः। बहुपक्षो रिपुहन्ता भवति नरः स्वैरवचनघनः॥ यह निरोगी, निरुत्साही, कुटुम्ब को कष्ट देनेवाला, शत्रु का नाश करनेवाला, चाहे जो बोलनेवाला, घनी होता है। इसमें बहुपक्ष का अर्थ स्पस्ट नही है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह असफल, अभागा, बहुतों का शत्रु होता है, इसे शरीरसुख कम मिलता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल शनि, रवि, मंगल व गुरु के बारे में अनुभव में आते हैं।

षष्ठेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता-षष्ठेशे कर्मवित्तस्थ साहसी कुलविश्रुतः। परदेशी शुचिर्वक्ता स्वधर्मेष्वेकनिष्ठकः। षष्ठेश दशम वा धनस्थान में हो तो वह मनुष्य साहसी, घराने में प्रसिद्ध, विदेश जानेवाला, पवित्र, अच्छा बोलनेवाला, अपने धर्म में एकनिष्ठ होता है। यवनजातक-रिपुपतौ द्रविणे चतुरो नरः कठिनता धनसग्रहणक्षमः। निजपदप्रवरो विदितश्चलो गदयुतः कृशगात्रयुतो नरः॥ यह चतुर, धन का संग्रह करने में समर्थ, कठोर, अपने पद में ऊंचा, प्रसिद्ध, चंचल, रोगी, दुबला होता है। गर्गजातक-षष्ठपतौ द्रविणस्थे दुष्टश्चतुरो हि संग्रहवान्। स्थानप्रवरो विदितः व्याधिस्तनुजहृवित्तः॥ इसमें यवनजातक जैसा ही वर्णन है, पुत्रों द्वारा धन का हरण किया जाता है इतना अधिक है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, सुहृद्वित्तघ्न अर्थात मित्रों का धन नष्ट करनेवाला इतना अधिक है। नवाथेजी-यह कुटुम्ब में फूट डालता है, पैतृक संपत्ति के बारे मे झगडे होते हैं, अच्छा अन्न खाने का योग नही मिलता।

हमारे विचार-नवाथेजी का मत तथा अन्य वर्णनों में धनसबंधी फलों का अनुभव रवि, शनि, शुक्र, बुध व मंगलके बारे में आता है। रोगी होने का अनुभव चन्द्र के बारे में आता है।

षष्ठेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-षष्ठेशे तृतीये तुर्ये क्रोधेनारक्तलोचनः। मनस्वी पिशुनोऽधर्मी चलचित्तोऽतिवित्तवान्॥ षष्ठेश तृतीय या चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य गुस्से से लाल आंखों से युक्त, अभिमानी, चुगलखोर, अधार्मिक, चंचल मनवाला तथा बहुत धनवान होता है। यवनजातक-सहजगे रिपुभावपतौ क्षमी खलरतः कुरुते बहुकर्मकः। पितृभुजाप्तधनव्यय-कारको बहुलकोपभरः सहजोज्झितः॥ यह क्षमावान, दुष्टों का मित्र, बहुत काम करनेवाला, पिता की कमाई का धन खर्च करनेवाला, बहुत

क्रोधी तथा भाईबहिनों द्वारा परित्यक्त होता है। गर्गजातक–षष्ठपतिः सहजस्थः क्रूरः कुरुते स्वलोककष्टकरम्। जनकरमारमणमति त्वतिकष्टं ग्रामलोकस्य ॥ षष्ठेश पापग्रह तृतीय में हो तो अपने लोगों को कष्ट, पिता के धन पर मौज उडाना तथा गांव के लोगों को अतिशय कष्ट ये फल मिलते हैं। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है, केवल निजजनकमारण अर्थात अपने पिता के लिए मारक इतना अधिक बताया है। नवाथेजी–भाइयों में एकता नही रहती, जीवन दूसरों पर अवलम्बित रहता है। सोधेजी–यह शत्रुओं को पराजित करता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त सब फल प्राय: पापग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

षष्ठेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसहिता–षष्ठेश तृतीय में होने के फलों में इस का मत बता चुके हैं। यवनजातक–सुखगतेऽरिपतौ पितृपक्षपः कलहवान् वपुषाच रुजान्वितः। तंदनु तातधनेन युतो बली जननिसौख्ययुतश्चपलः स्मृतः ॥ यह पिता के संबंधियों का पालन करता है, झगडालू, रोगी, चंचल होता है, इसे माता का सुख मिलता है तथा पिता से धन मिलता है। गर्गजातक–षष्ठाधिपतिस्तुर्ये पितृतनयौ वैरिणौ मिथः कुरुते। संकरजसुतः पितृतो लक्ष्मीं लभते सुचिरतराम् ॥ पिता–पुत्र में शत्रुता होती है, पिता से धन मिलता है, यह संकर (मिश्र) जाति का होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा ही वर्णन है, सिर्फ संकरजसुतः के स्थान पर सरुक् पिता सोऽथ अर्थात पिता या स्वयं रोगी होता है इतना फल भिन्न बताया है। नवाथेजी–इसे जायदाद मिलना कठिन होता है, सम्बन्धियों का सुख नही मिलता, माता से कठोर वचन बोलता है, पशुपालन नही हो सकता, दुर्घटनाओं से कष्ट होता है।

हमारे विचार–लोमेश का वर्णन तथा गर्ग के वर्णन में संकरज होना यह फल किसी भी ग्रह के बारे में अनुभव में नही आता।

नवाथेजी का वर्णन रवि व शनि के बारे में तथा शेष वर्णन गुरु, शनि व चन्द्र के बारे में अनुभव में आता है।

षष्ठेश पंचम स्थान में

लोमेशसहिता-षष्ठेशः पंचमे यस्य चलं मित्रधनादिकम्। कफयुक्तः सुखी सौम्यः स्वकार्ये चतुरो महान्॥ इस के मित्र, धन आदि चंचल होते हैं, कफरोग होते हैं, सुखी, सौम्य, अपने काम में बहुत चतुर होता है। यवनजातक-रिपुपतौ तनयस्थलगे भवेत् पितृसुताद्यतिवादकरो नरः। मृतसुतश्च खलग्रहयोगतः शुभयुतोऽपि धनाद्युतएव सः॥ पिता और पुत्र में झगडा होता है, यह पापग्रहयुक्त हो तो पुत्र की मृत्यु होती है, शुभ-ग्रहयुक्त हो तो धन मिलता है। गर्गजातक-रिपुभवनपतौ सुतगे पितृ-सुतयोर्वैरितामतिक्रूरम्। क्रूरे शुभे च निर्धनः पदवीदुष्टश्च तत्फलति॥ षष्ठेश पापग्रह हो तो पिता-पुत्र में शत्रुता होती है, क्रूर होता है, शुभग्रह हो तो निर्धन, पद में दूषण लगानेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-पुत्रों से शत्रुता, दरिद्रता, बुद्धि नष्ट होना, ईश्वरचिंतन न होना ये फल मिलते हैं।

हमारे विचार-षष्ठेश पापग्रह होने पर उपर्युक्त फलों का अनुभव आता है, शुभग्रह हो तो उलटा अनुभव आता है।

षष्ठेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता-षष्ठेशे रिपुभावस्थे स्वजातिः शत्रुवद्भवेत्। परज्ञाति र्भवेन्मित्रं भूमौ न चलति ध्रुवम्॥ षष्ठेश षष्ठ में हो तो अपनी जाति के लोग शत्रु होते हैं, दूसरी जाति के लोग मित्र होते हैं। स्थावर जाय-दाद बनी रहती है। यवनजातक-निजगृहे रिपुभावपतौ नरो रिपुगतः कृपणश्च खलोज्झितः। सतु निजस्थललब्धसुखः सदा भवति जन्मरतः पशुयोषितः॥ यह शत्रु के पक्ष में मिलनेवाला, कंजूस, दुष्ट, लोगों द्वारा परित्यक्त होता है किन्तु इसे अपने स्थान में सुख मिलता है तथा यह स्त्री, पशु आदि की देखभाल में लगा रहता है। गर्गजातक-रिपुभवनपे

रिपुस्थे नीरुग्वैरी सुखी कृपणः। न हि जन्मतोपि सीदति स्थानकुवासी भवेन्मनुजः ॥ यह निरोगी, शत्रु, सुखी, कंजूस जन्म से कभी दुखी न होनेवाला, हमेशा अपने स्थान में रहनेवाला होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है, केवल स्थानकुवासी अर्थात बुरे स्थान में रहनेवाला इतना शब्द भिन्न है। नबाथेजी–यह शत्रु से लडकर विजयी होता है, रोगी होता है, जीवन में कष्ट रहता है।

हमारे विचार–लोमेश का मत पापग्रहों के बारे में, नवाथेजी का शुभ ग्रहों के बारे में यवनजातक का मत शनि, मंगल व बुध के बारे में तथा घरबार में आसक्ति का फल चन्द्र व शुक्र के बारे में अनुभव में आता है।

षष्ठेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत षष्ठेश लग्न में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक–अरिपतौ मदने खलसंयुते प्रवरकामभरा वनितायुतम्। बहुलवादकरो विषसेवकः शुभखगे बहुलाभसुतान्वितः ॥ षष्ठेश सप्तम में पापग्रहयुक्त हो तो पत्नी बहुत कामुक होती है। यह मनुष्य बहुत वाद करनेवाला तथा विष खानेवाला होता है, शुभग्रह हो तो बहुत लाभ तथा पुत्रों से युक्त होता है। गर्गजातक–अहितपतौ सप्तमगे क्रूरे भार्या विरोधिनी चण्डा। तापकरी त्वथ सौम्ये वन्ध्या वा गर्भपतनपरा ॥ षष्ठेश पापग्रह हो तो पत्नी विरोध करनेवाली, क्रूर, कष्ट देनेवाली होती है, शुभग्रह हो तो वह वन्ध्या होती है अथवा उसका गर्भपात होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–इसे विवाहसुख कम मिलता है, बडे विवाद, साझेदारी के झगडे आदि होते है, जीवनभर झगडे चलते रहते हैं।

हमारे विचार–लोमेश, गर्ग, मानसागरी, नवाथेजी द्वारा बताये गये फल रवि, गुरु, शुक्र, मंगल के बारे में अनुभव में आते हैं। यवनजातक में शुभ, अशुभ ग्रहों के फल अलग अलग बताये ही हैं।

षष्ठेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-षष्ठेशेऽष्टमरि:फस्थे रोगी शत्रुर्मनीषिणाम् । परजायाभिगामि च जीवहिंसासुतत्पर: ॥ षष्ठेश अष्टम या व्यय स्थान में हो तो वह मनुष्य रोगी, विद्वानों का शत्रु परस्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला, तथा प्राणियों की हिंसा करनेवाला होता है। यवनजातक-ग्रहणिरुग् रिपुनाथयुतेऽष्टमे विषधरान्मरणं विषतो वध: । मरणदो विधुरेव रविर्नृपाद् गुरुसितौ नयनेषु विपत्प्रदौ ॥ इसे ग्रहणी रोग (डायरिया) होता है, साप से मृत्यु होती है या अन्य विषबाधा होती है। चन्द्र वा सूर्य षष्ठेश अष्टम में हो तो राजा से मृत्यु होती है, शुक्र वा गुरु हो तो आंखों पर संकट आता है। गर्गजातक-रिपुपतिर्मृतिभे गृहिणीमृतिर्विषधराच्च कुजो विषतो बुध: । सपदि चन्द्र इनो नृपसिंहयो: कविगुरु रिपुलोचनयो रुजम् ॥ पत्नी की मृत्यु होती है, षष्ठेश मंगल अष्टम में हो तो सांप से, बुध हो तो विष से, चन्द्र या सूर्य हो तो राजा व शेर से, गुरु, शुक्र हो तो शत्रु व आंखों के रोग से पीडा होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, केवल गुरोरपि च दुष्ट: अर्थात गुरु से दुष्ट बुद्धि होता है इतना परिवर्तन किया है। नवाथेर्जा-यह अल्पायु होता है, बडी बीमारी होती है, मृत्युपत्र के विषय में झगडे होते हैं, गुप्त धन नही मिलता, उन्नति होना असंभव होता है।

हमारे विचार-लोमेश के फलों का अनुभव मंगल, शुक्र व शनि के बारे में तथा नवाथेजी के फलों का अनुभव रवि, चन्द्र, मंगल व शनि के बारे में आता है। गर्ग, यवनजातक व मानसागरी के फलों में भिन्न भिन्न ग्रहों के फल अलग अलग बताये ही हैं।

षष्ठेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-षष्ठेशो नवमे यस्य काष्ठपाषाणविक्रयी । व्यवहारे क्वचिद्धानि: क्वचिद् वृद्धिर्भवेत् किल ॥ षष्ठेश नवम में हो तो वह मनुष्य लकडी-पत्थर बेचने का काम करता है, धन्धे में कभी हानि और

कभी लाभ होता है। यवनजातक–नवमगेऽ रिपतौ खलसंयुते चरण-भंगकरः सुकृतोज्झितः। विविधवादकरश्च स वै प्रियो न च धनं न सुखं न सुतः सदा ॥ षष्ठेश नवम में पापग्रहसहित हो तो पैर टूटता है, अच्छे कार्य नही होते, तरह तरह के विवाद होते हैं, लोकप्रियता, धन सुख और पुत्र की प्राप्ति नही होती। गर्गजातक–शत्रुपतिर्यदि नवमे क्रूरः खचरस्तदा भ्रष्टः। विबुधविरोधी क्रूरो न मन्यते याचकं च गुरुम् ॥ षष्ठेश पापग्रह नवम में हो तो वह मनुष्य भ्रष्टाचारी, देवधर्म का विरोधक क्रूर तथा याचक व बडे लोगों का अनादर करनेवाला होता है। मानसागरी–शत्रुपतिर्यदि नवमे क्रूरः खचरस्तदा भवेत् खंजः। बन्धुविरोधी शास्त्रं न मन्यते याचकः पुरुषः ॥ षष्ठेश पापग्रह नवम में हो तो वह मनुष्य लंगडा, भाइयों का विरोधी शास्त्र न माननेवाला तथा भिखारी होता है। नवाथेजी–यह अभागा, बदनाम, सब जगह फजीहत से दुखी होता है। हमारे विचार–लोमेश का मत नवम में मेष में शनि हो तो अनुभव में आता है। नवाथेजी का वर्णन चन्द्र के बारे में अनुभव में आता है। बाकी लेखकोंने अशुभ ग्रहों के फल अलग अलग बताये ही हैं।

षष्ठेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता–इसका मत षष्ठेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–अरिगृहाधिपतिर्दशमे यदा जननिवैरकरश्चपलः खलः। भवति पालकपुत्रयुतः शुभैर्जनकहा जगतीपरिपालकः ॥ यह माता से वैर करनेवाला, चंचल, दुष्ट होता है, षष्ठेश शुभ ग्रह हो तो पिता का घात होता है, पुत्र–पालन होता है भूमि का रक्षक होता है। गर्ग-जातक–अरिगृहपे दशमस्थे क्रूरे मातरि रिपुस्तदा दुष्टः। धर्मसुतपालक-मतिःपितृद्वेषी जायते मनुजः ॥ षष्ठेश पापग्रह हो तो माता का वैरी, पिता का द्वेष करनेवाला, दुष्ट, पाले हुए पुत्र का रक्षक होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–धन्धे में सफलता नही

मिलती, राजदरबार में वेइज्जती होती है, वरिष्ठ लोगों से झगड़े होते हैं।

हमारे विचार-लोमेश का मत शनि व मंगल के वारे में तथा नवाथेजी का मत मंगल के वारे में अनुभव में आता है। शेष लेखकोंने शुभ-अशुभ फल अलग अलग बतलाये ही है।

षष्ठेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत षष्ठेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-भवगतेऽरिपतौ खलसंगमो रिपुजनान्मरणं खलु जायते। नृपतिचौरजनाद्धनहानिकृत् शुभखगैः सततं शुभकृद् भवेत्॥ षष्ठेश पापग्रह लाभ में हो तो वह मनुष्य दुष्टों की संगति में रहता है, शत्रु से उसकी मृत्यु होती है, राजा तथा चोरों से धनहानि होती है, शुभग्रह हो तो हमेशा शुभ फल मिलता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ चतुष्पदाल्लाभवान् मनुजः अर्थात इस मनुष्य को चौपाये पशुओं से लाभ होता है इतना अधिक बतलाया है। नवाथेजी-इसे वडे लाभ नही होते, मित्रों से शत्रुता होती है।

हमारे विचार-लोमेश के मत का अनुभव चन्द्र, मंगल व शुक्र के वारे में तथा अन्य मतों का अनुभव शेष ग्रहों के वारे में आता है।

षष्ठेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत षष्ठेश अष्टम में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-व्ययगते च चतुष्पदवाजिनां रिपुपतौ धनधान्यसुखक्षयः। गमनवृद्धिनिरन्तरमेष यद्दिननिशं च धनाय कृतोद्यमः॥ चौपाये पशु, घोडे आदि तथा धनधान्य व सुख का नाश होता है, हमेशा घूमने की इच्छा रहती है। रातदिन धन कमाने का प्रयत्न करता है। गर्गजातक-षष्ठपत्तौ द्वादशगे चतुष्पदधनधान्ययुतः। चपलो मदान्धो लक्ष्याल्हादपरो नरो भवति॥ यह चंचल, घमंड से अंधा, धन और चैन में मग्न, चौपाये पशु तथा धनधान्य से युक्त होता है। मानसागरी-

षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पद द्रव्यहानिकरः। गमनागमने लक्ष्मीहानिर्देवपरो भवति॥ पशु व धन की हानि होती है, आने जाने में धनहानि होती है, यह देवभक्त होता है। नवाथेजी-राजा से दण्ड मिलता है, बहुत संकट आते है, वहुत धनहानि होती है।

हमारे विचार-लोमेश का वर्णन मंगल के बारे में, गर्ग का शनि के बारे में यवनजातक का गुरु, चन्द्र व रवि के बारे में तथा नवाथेजी का मत पापग्रहों के बारे में अनुभव में आता है।

प्रकरण ९

सप्तम भावेश के फल

सप्तमेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता-सप्तमेशे तनौ चास्ते परजायासु लम्पटः। निष्ठुरो वचसाधीरो वार्ता न स्थीयते हृदि॥ सप्तमेश लग्न में या सप्तम में हो तो वह मनुष्य परस्त्रीलम्पट, निष्ठुर बोलनेवाला, उतावला होता है, किसी बात को मन में नही रख सकता। यवनजातक-मदपतिस्तनुगः कुरुते नरं सकलभोगयुतं च गतव्ययम्। बहुकलत्र सुखी न हि मानुषो दलितवैरिजनः प्रमदोत्सुकः॥ यह सब उपभोग प्राप्त करता है, खर्च नही होता, अनेक पत्नियां होती हैं किन्तु सुख नही मिलता, शत्रु का नाश करनेवाला तथा कामुक होता है। गर्गजातक-दयितेशो लग्नगतः स्तोकं निःस्नेहमन्यतरभार्यम्। भोगभुजं रूपयुतं सुस्त्री जनप्रतिलोलचित्तम्॥ यह कुछ कम प्रेम करनेवाला, अन्य की पत्नी पर आसक्त, सुन्दर, भोग भोगनेवाला, सुन्दर पत्नी से युक्त, चंचल चित्तवाला होता है। मानसागरी-दयितेशो लग्नगतः शोकं निःस्नेहमन्यतरभार्यम्। भोगभुजं रूपयुतं जनयति दयितादलितचित्तम्॥ परस्त्री पर आसक्ति नही होती, शोक होता है, सुन्दर भोग भोगनेवाला होता है, पत्नी इस पर

नियन्त्रण रखती है। नवाथेजी–यह चंचल चित्तवाला, प्रवासी, कामुक, झगडालू व स्वतन्त्र प्रवृत्ति का होता है। मोघेजी–यह क्रूर होता है इसे मेद के रोग होते हैं।

हमारे विचार–उपर्युक्त फलों का अनुभव इस प्रकार आता हैं–लोमेश के फल गुरु, बुध व शुक्र के बारे में यवनजातक का मत गुरु के बारे में, गर्ग का मत मंगल के बारे में, मानसागरी का मत रवि, शुक्र व चन्द्र के बारे में नवाथेजी का मत चन्द्र व मंगल के बारे में तथा मोघेजी का मत गुरु व शनि के बारें में अनुभव में आता है।

सप्तमेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता–द्यूनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः। आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम्॥ सप्तमेश धनस्थान या नवम में हो तो वहुत स्त्रियों से सम्वध आता है, किसी भी काम को आरम्भ कर दीर्घसूत्री (लम्वी बाते सोचनेवाला) होता है, मन स्त्रियों में ही लगा रहता है। यवनजातक–मदपतौ धनगे वनिता खला भवति वित्तवती सुखवर्जिता। स्वपतिवाक्यविलोपकरी मदान्मतिमती स्वयमात्मजवर्जिता॥ इस की पत्नी दुष्ट, घमंड से पति के कहने के विरुद्ध कार्य करनेवाली, पुत्रहीन, दुखी किन्तु वुद्धिमान व धनवान होती है। गर्गजातक–जायापतौ धनस्थे पुष्टा दयिता सुतोज्झिता भवति। वित्तं च कलत्रकरे सततं दुःखानुषंगं च॥ पत्नी मोटी, पुत्रहीन होती हैं, पैसा पत्नी के हाथमें रहता है। हमेशा दुखी रहता है। मानसागरी–जायापतौ धनस्थे दुष्टा दयिता सुतेप्सिता भवति। वित्तंच कलत्रकरे सततं वसतौ विसंगश्च॥ पत्नी दुष्ट, पुत्रों को चाहनेवाली, पैसा हाथ में रखनेवाली होती है, यह घर में स्त्रीसग नही पाता। नवाथेजी–कुटुम्व पर स्नेह होता है, व्यापार में धन लगाया जाता है, पत्नी से धन मिलता है। मोघेजो–परस्त्री से सम्पर्क रहता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त सब फल शनि को छोड कर अन्य ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

सप्तमेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-द्यूनेशे सहजे लाभे मृतपुत्रोपि जायते। कदाचित् जीवति कन्या पश्चात् पुत्रोपि जीवति ॥ सप्तमेश तृतीय या लाभस्थान में हो तो पुत्र जन्मतेही मरते हैं, कदाचित्त कन्या जीवित रहती है, बादमें पुत्र भी जीवित रहते हैं। यवनजातक-मदपती सहजस्थलगे स्वयं बलयुतो निजबान्धववल्लभः। भवति देवरपक्षयुताबला स्मरमदा दयितागृहगे खले॥ यह बलवान तथा सम्बन्धियों में प्रिय होता है, सप्तमेश तृतीय में तथा सप्तम में पापग्रह हो तो पत्नी कामुक हो कर देवर से संपर्क रखती है। गर्गजातक-सप्तमपः सहजगतश्चात्मजवत्सलो दुःखी। देवररता सुरूपा गृहिणी क्रूरे तु तद्गृहे॥ यह पुत्रों पर स्नेह रखता है, दुखी होता है, सप्तम में पापग्रह हो तो इसकी पत्नी देवर से प्रेम करती है। मानसागरी-यवनजातक व गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-परिवार में झगडे होकर बटवारा होता है, पैतृक धन के बारे में झगडे होते हैं, अच्छा अन्न खाना भाग्य में नही होता।

हमारे विचार-लोमेश के मत का अनुभव पापग्रहों के बारे में अनुभव में आता हैं। यवनजातक, गर्ग व मानसागरी के मत मिश्रित रूप से शुभ व पापग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं। इनमें पत्नी का देवर से प्रेम होना यह विशिष्ट फल बतलाया है। इस का अनुभव कहां तक आता है यह देखना चाहिए। नवाथेजी का वर्णन रवि के बारे में अनुभव में आता है।

सप्तमेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता-द्यूनेशेदशमेतुर्ये तस्य जाया पतिव्रता। धर्मात्मा सत्य-संयुक्तः केवलं वातरोगवान्॥ सप्तमेश चतुर्थ या दशमस्थान में हो तो पत्नी पतिव्रता होती है, यह धर्मात्मा तथा सत्यप्रिय होता है, इसे वातरोग होते हैं। यवनजातक-स्मरपतिस्तनुते सुखभावगो विबलिनं पितृवैरकरं खलम्। भवति वादयिता परिपालकः स्वपतिवाक्ययुता महिला सदा॥ यह दुर्बल, पिता से शत्रुता करनेवाला, दुष्ट होता है, यह

पत्नी का पालन करता है तथा पत्नी इस की बात मानती है। गर्गजातक–जायेशे तुर्यस्थे लोल: पितृवैरसाधक: स्नेही । अस्य पिता दुर्वाक्यस्तद्भार्यां पालयेच्च पिता ।। यह चंचल, पिता से वैर करनेवाला, प्रेमी होता है, इस का पिता कठोर बोलनेवाला होता है तथा इसकी पत्नी का पालन पिता द्वारा होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–इस की पत्नी सद्गुणी होती है, सुख व ऐश–आराम मिलता है, खेत आदि सम्पत्ति मिलती है।

हमारे विचार–इन फलों का अनुभव प्राय: सब ग्रहों के बारे में आता है। गर्ग का वर्णन कुछ अस्पष्ट है।

सप्तमेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता–सर्वैर्गुणैर्युतो मानी भवेत् सर्वगुणाधिप: । सदैव हर्ष-संयुक्त: सप्तमेशे सुतस्थिते ।। सप्तमेश पंचम स्थान में हो तो वह मनुष्य सब गुणों से युक्त, अभिमानी, हमेशा खुश रहता है। यवनजातक–मदपतिस्तनये तनयप्रद: सुभगसौख्यकर: सुखसंयुत: भवति दुष्टवतस्तन-यैर्युत: खलखगैर्दयितापरिपालक: ।। इसे पुत्रसुख, सौभाग्य एवं शरीरसुख मिलता है, पत्नी का पालन करता है, सप्तमेश पापग्रहयुक्त हो तो पुत्र की मृत्यु होती है। गर्गजातक–सप्तमपती सुतस्थे सौभाग्ययुत: सुतान्वित: पुरुष: । प्रियसाहसदुष्टमतिस्तनय: पालयेद् दयिताम् ।। यह सौभाग्य-शाली, पुत्रयुक्त पत्नी का पालन करनेवाला होता है। इस के पुत्र दुष्ट बुद्धि के व साहसी होते हैं। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–पत्नी ईश्वरभक्त होती है, सन्तान का सुख मिलता है, संपत्तिसुख साधा-रण मिलता है। मोघेजी–यह धनी, शान्त व अभिमानी होता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त फलों का अनुभव शनि, चन्द्र, बुध व शुक्र के बारे में प्राय: आता है।

सप्तमेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता–जायेशे चाष्टमें षष्ठे सरोषा कामिनी भवेत् क्रोध-युक्तो भवेद्वापि न सुखं लभते क्वचित् ।। सप्तमेश षष्ठ या अष्टमस्थान

में हो तो पत्नी क्रोधी होती है, या यह स्वयं क्रोधी होता है. कहीं भी सुख नही मिलता। यवनजातक-गतवया विपदांतु निषेवको रिपुगते रुचिरं हिचिरं वपुः। मदपतौ दयितादयितः खलु क्षयगदेन युतः खल-खेचरैः ॥ यह अल्पायु, संकट भोगनेवाला होता है, शरीर से सुन्दर तथा स्त्री को प्रिय होता है, सप्तमेश के साथ पापग्रह हो तो इसे क्षयरोग होता है। गर्गजातक-रिपुगृहगः कान्तेशः प्रिययासह वैरिणं सरुग्भार्यम्। वनितासंगात् क्षयिणं क्रूरः कुरुते च मृत्युपदम् ॥ यह पत्नी के साथ शत्रुता करता है, पत्नी रोगी रहती है, पत्नी के संग से क्षयरोग होता है, सप्तमेश पापग्रह हो तो मृत्यु भी होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-स्त्री के सम्बन्ध में शत्रुता तथा धनहानि होती है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल प्रायः रवि व मंगल के बारे में अनुभव मे आते हैं। शुभग्रह होने पर उलटा अनुभव आता है।

सप्तमेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता-सप्तमेश लग्न में होने के फलों में इस का मत बता चुके हैं। यवनजातक-प्रमदभावपतौ निजमन्दिरे गतरुजं हि नरं परमायुषम्। परुषवाग्रहितो ह्यतिशीलवान् भवति कीर्तियुतः परदा-रगः ॥ सप्तमेश स्वगृह में हो तो वह मनुष्य नीरोग, पूर्ण आयु प्राप्त करनेवाला, कोमल बोलनेवाला, सदाचारी, कीर्तिमान किन्तु परस्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला होता है। गर्गजातक-सप्तमपे सप्तमगे परमायुः प्रीतवत्सलः पुरुषः। निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वी जायते सततम् ॥ यह दीर्घायु, स्नेहशील, सदाचारी व तेजस्वी होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-इसका विवाह जलदी होगा, स्त्रीसुख अच्छा मिलेगा, यह स्त्रीलम्पट होगा।

हमारे विचार-लोमेश के वर्णन का अनुभव गुरु, चन्द्र व मंगल के बारे में, तथा नवाथेजी का मत सर्वसाधारण सब ग्रहों के बारे में अनुभव में आता है। परस्त्रीसंबंध को छोडकर शेष जो फल यवनजातक व गर्ग ने बताये हैं उनका अनुभव शनि, रवि व शुक्र के बारे में आता है।

सप्तमेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत सप्तमेश षष्ठ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-निधनगे तु कलत्रपतो नरः कलहकृद् गृहिणी-सुखवर्जितः। दयितया निजया न समागमो यदि भवेदथवा मृतभार्यकः।। यह झगडालू होता है, पत्नी का सुख नही मिलता, अपनी पत्नी की मृत्यु होती है या उससे समागम नही होता। गर्गजातक-रमणीशे निधनगते गणिकासुरतपरो गृहे विरतः। विद्विद्दिवितियसक्तो न स्त्रीसेवाकरः पुरुषः ।। यह घर में उदास रह कर वेश्या में आसक्त होता है, पत्नी की सेवा नही करता (इसमें विद्वद् आदि शब्द का अर्थ स्पष्ट नही है। मानसागरी-सप्तमपति-निर्धनगतो गणिकासुरतः करग्रहरहितः। नित्यं चिन्तायुक्तो मनुजः किल जायते दुःखी ।। यह वेश्या में आसक्त, अविवाहित हमेशा चिन्तित व दुखी होता है। नवाथेजी-विवाह में बहुत खर्च होता है। मोघेजी- स्त्री के सम्बन्ध से दुःख होता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों का अनुभव शुक्र, चन्द्र व मंगल के बारे में आता है।

सप्तमेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत सप्तमेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-मदपतिर्नवमे यदि शीलवान् खलखगैर्कुरुते हि नपुंसकम्। तपसि तेजसि सुप्रथितो नरः प्रमदया निजया सह वैरकृत् ।। यह शीलवान, तपस्या और तेज के कारण प्रसिद्ध होता है, अपनी पत्नी से शत्रुता करता है, यदि पापग्रह हो तो नपुंसक होता है। गर्गजातक-सुकृतगते रमणीशे तेजस्वी शिल्पवान् स्त्रियाप्येवम् क्रूरे तु चण्डरूपा लग्नेश वीक्षिते तपःप्रबलः।। यह तथा इसकी पत्नी भी तेजस्वी शिल्प के जानकार होते हैं, पापग्रह हो तो स्त्री कठोर स्वभाव की होती है, सप्तमेश पर लग्नेश की दृष्टि हो तो यह प्रबल तपस्वी होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह लम्बी यात्राएं करता है, पत्नी सद्गुणी व

धार्मिक होती है तथा उसके सम्बन्धसे भाग्योदय होता है। मोघेजी-यह पत्नी का आदर करता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों का अनुभव रवि, गुरु, शनि व मंगल के बारे में आता है।

सप्तमेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत सप्तमेश चतुर्थ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-दशमगे मदपे नृपदोषदः कुवचनः कपटी चपलो नरः॥ श्वशुरदुष्टजनानुचरः खलैर्निजवधूजनयोर्नहि हर्षकृत्॥ यह राजा को दोष देनेवाला, बुरी बातें कहनेवाला, कपटी, चंचल होता है, पापग्रह हो तो ससुर व दुष्ट लोगों का अनुसरण करता है तथा पत्नी के सम्बन्धी संतुष्ट नही होते। गर्गजातक-गृहिणीपे दशमस्थे नृपदोषी लम्पटः पुमान् क्रूरः। क्रूरे दुष्टः श्वशुरः ख्यातश्च सर्वतो दिक्षु॥ यह राजा को दोष देनेवाला, कामुक, क्रूर होता है, पापग्रह हो तो ससुर दुष्ट व बहुत प्रसिद्ध होता है। मानसागरी-सप्तमपे दशमस्थे नृपदोषी लम्पटः कपटचित्तः। क्रूरे दुःखार्तः स्यात् श्वश्रूवर्गो भवेत् पुरुषः॥ यह राजा को दोष देनेवाला, कामुक, कपटी होता है, पापग्रह हो तो दुखी सास के पक्ष में रहता है। नवाथेजी-यह दीर्घ उद्योग करनेवाला तथा स्वतंत्र व्यवसाय करनेवाला होता है।

हमारे विचार-उपर्यक्त फलों का अनुभव रवि, मंगल व शनि के बारे में आता है।

सप्तमेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत सप्तमेश तृतीय में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-भवगते तु कलत्रपतौ सदा स्वदयिता प्रियकृच्च तथा सती। अनुचरी स्वधवस्य सुशीलिनी वसुमती कलना पितृसंशया॥ इस की पत्नी पति पर प्रेम करनेवाली, पति का कहना माननेवाली, सदाचारी, धनी, होती है, उसे पिता के विषय में संदेह रहता है।

गर्गजातक–लाभस्थे जायेशे भक्ता रूपान्विता सुशीला च । दयिता परिणीता स्याद् म्रियते सा च प्रसवसमये ।। इसकी पत्नी सुन्दर, सुशील, प्रिय, प्रेम करनेवाली होती है किन्तु प्रसूति में उसकी मृत्यु होती है । मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है । नवाथेजी–इसे धन, पुत्र तथा मित्रों का सुख अच्छा मिलता है । मोघेजी–सन्तति को कष्ट होता है ।

हमारे विचार–पिताके बारे में सशय होना तथा प्रसूति में मृत्यु होना इन फ़लों को छोड कर शेष वर्णनों का अनुभव थोडा थोडा सब ग्रहों के वारे में आता है ।

सप्तमेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता–द्वादशे सप्तमेशे तु दरिद्रः कृपणो महान् । चौरकन्या भवेद्भार्या वस्त्राजीवी च नीचधीः ।। सप्तमेश द्वादश स्थान में होने पर वह मनुष्य दरिद्र, कंजूस, नीच बुद्धिवाला तथा कपडे पर जीविका चलानेवाला होता है । इसे चोर की लडकी पत्नी रूप में मिलती है। यवनजातक–मदपतिर्व्ययगस्तनुते व्ययं स्वदयितागृहवन्धुविवर्जितः । भवति लौल्यवती खलवाक्यदा व्ययपरा गृहतस्करयुक्ततः ।। इसकी पत्नी लोभी, दुष्टतापूर्ण बातें कहनेवाली, खर्चीली होती है । इसे पत्नी, घर, सम्बन्धी नही मिलते, खर्च बहुत होता है, घर में चोरियां होती हैं। गर्गजातक–सप्तमपे द्वादशगे गृहवन्धूज्झितः भवेद् भार्या लोला सा दुष्टा च पुनरुच्चलितस्य पुरुषस्य ।। इसकी पत्नो दुष्ट, चंचल, लोभी होती है. उसे घर तथा सम्वन्धियों का सुख नही मिलता । मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है. सिर्फ अन्तिम भाग में दुष्टपुता दूरं चलति च तस्य पुरुषस्य च अर्थात पत्नी किसो दुष्ट के साथ दूर चली जातो है, इतना अन्तर है। नवाथेजी–इसे विवाह–सुख मिलेगा, स्त्रीसुख में धन खर्च होगा, वाद-विवाद में हार होगी, संकट आयेंगे । मोघेजी–यह निर्धन होगा ।

हमारे विचार–उपर्युक्त वर्णानों में पत्नी संवंधी फल रवि, मंगल, शनि व गुरु के बारे में तथा शेष फल शुभग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं ।

प्रकरण १०

अष्टम भावेश के फल

अष्टमेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता- अष्टमेशे तनौ कामे भार्याद्वयं समादिशेत्। विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणरोगः प्रजायते ।। अष्टमेश लग्न या सप्तम में हो तो दो विवाह होते हैं, यह ईश्वर का विरोधी तथा व्रण-रोग से पीडित होता है। यवनजातक-मृतिपतिस्तनुगो बहुदुःखकृद् भवति वा बहुरुष्टविवादकृत्। यदि नरो नृपतेर्लभते धन दद्रुयुतो बहु दुःखसमन्वितम् ।। यह बहुत दुखी, क्रोधी, विवाद करनेवाला, खुजली से पीडित होता है, इसे राजा से धनलाभ होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी-इसे शरीरसुख कम मिलता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि और मंगल के बारे में ही अनुभव में आते हैं, शेष ग्रहों के बारे में नही।

अष्टमेश धनस्थान में

लोमेशसंहिता-अष्टमेशे धने बन्धौ बलहीनः प्रजायते। धनं तस्य भवेत् स्वल्पं गतं वित्तं न लभ्यते ।। अष्टमेश धनस्थान या तृतीय स्थान में हो तो वह मनुष्य बलहीन होता है, इसे धन कम मिलता है तथा गया हुआ धन फिर नही मिलता। यवनजातक-निधनपे धनगे चलजीवितो बहुलशास्त्रयुतोपि च तस्करः। खलखगैश्च शुभैर्न गदान्वितो नृपतितो मरणं हि सुनिश्चितम् ।। यह हमेशा भ्रमण कर जीविका कमाता है, बहुत शास्त्र जानता है किन्तु चोर होता है, अष्टमेश पापग्रह हो तो रोगी होता है तथा राजा के दण्ड से मृत्यु निश्चित रूप से होती है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसे बिना वारिस का या गुप्त धन मिलता है, सट्टा, लाटरी तथा रिश्वत आदि से धन मिलता है। मोघेजी-यह निर्धन होता है।

हमारे विचार–लोमेश के मत का अनुभव रवि, मंगल व गुरु के बारे में, यवनजातक आदि के मत का रवि व शनि के बारे में, मोघेजी के मत का शुक्र के सिवाय सब ग्रहों के बारे में आता है, नवाथेजी का मत किसी ग्रह के बारे में सही सिद्ध नहीं होता।

अष्टमेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत अष्टमेश धनस्थान में होने के फलों में आचुका है। यवनजातक–सहजगेऽष्टमपे सहजैः स्वयं स च विरोधकरोऽथ सहृज्जनैः। कठिनवाक्यपरश्चपलः खलो भवति बन्धुजनविवर्जितः ॥ यह मित्रों से स्वयं विरोध करता है, कठोर शब्द बोलता है, चंचल, दुष्ट तथा बन्धुओं से रहित होता है। गर्गजातक–निधनपतिर्यदि सहजे बन्धुविरोधी सुहृद्विरोधी च। व्यगो दुर्बललोलः सोदररहितो भवत्यथ ॥ यह बन्धु व मित्रों का विरोध करता है शरीर का कोई अंग दूषित होता है, दुर्बल व चंचल होता है, इसे भाई नही होते। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह दूसरों पर अवलंबित रहेगा, कर्तव्य नही समझेगा, गलत कामों से पैसा कमाने का प्रयत्न करेगा। मोघेजी–इसे सन्तति का सुख कम मिलेगा।

हमारे विचार–नवाथेजी के मत का अनुभव शुभग्रहों के बारे में तथा अन्य लेखकों के मतों का अनुभव पापग्रहों के बारे में आता है।

अष्टमेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता–अष्टमेशे सुखे कर्मे पिशुनो बन्धुवर्जितः। मातापित्रोर्भवेन्मृत्युः स्वल्पकालेन भीतियुक् ॥ अष्टमेश चतुर्थ या दशम में हो तो वह मनुष्य चुगली करनेवाला, बन्धुओं से रहित होता है, इस के माता-पिता की मृत्यु जल्द होती है, थोडे थोडे समय से भय उत्पन्न होता है। यवनजातक–मृतिपतौ सुखभावगते नरो जनकसंचितवैभवनाशकृत्। गदयुतश्च सुते जनकेऽथवा कलह एव मिथश्च सदैव हि ॥ यह पिता द्वारा एकत्रित धन का नाश करता है, रोगी होता है, पुत्र या पिता से हमेशा

झगडता है। गर्गजातक–निधनेशे तुर्यगते पितृतोऽन्यायाल्लभेत तल्लक्ष्मीम्। पितृपुत्रयोश्च युद्धं पिता च रोगान्वितो भवति ॥ यह पिता का धन अन्याय से प्राप्त करता है, पिता-पुत्र में लडाई होती है. इस का पिता रोगी होता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–इसे गडा हुआ धन या लावारिस संपत्ति मिलती है, श्रीमान होकर उपभोग प्राप्त करता है, बिना मेहनत के धन मिलता है।

हमारे विचार-नवाथेजी का मत सिर्फ शुक्र के बारे में तथा अन्य लेखकों का मत शनि व क्वचित मंगल के बारे में अनुभव में आता है।

अष्टमेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता–अष्टमेशे सुते लाभे कृते वृद्धिः प्रजायते। द्रव्यं न स्थीयते गेहे स्थिरवृद्धिर्भवेच्च न ॥ अष्टमेश पंचम या लाभ में हो तो प्रगति होती है किन्तु उस में स्थिरता नही रहती, धन घर में टिकता नही। यवनजातक–मरणभावपतिस्तनये स्थितस्तनयनाशकरश्च सदैव हि। यदि खलैर शुभं स च धूर्तराट् शुभखगैश्च शुभं सुतवृद्धिभाक् ॥ अष्टमेश शुभग्रह हो कर पंचम में हो तो शुभ फल देता है, पुत्रों की वृद्धि होती है, अशुभ ग्रह हो पुत्रों का नाश होता है, यह मनुष्य बहुत धूर्त होता है। गर्गजातक–छिद्रपतौ तनयस्थे पापे सुतविरहितः शुभे ससुतः। जातोपि नैव जीवति जीवत्यपि कितवकर्मरतः ॥ अष्टमेश पापग्रह हो तो पुत्र नही रहते, शुभग्रह हो तो पुत्र होते हैं, पुत्र जीवित नही रहते, रहे भी तो जुआरी होते हैं। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह सट्टा तथा जुए में आसक्त रहता है, पुत्र दुर्गुणी होते हैं, एकदम बहुत धन कमाने की इच्छा रहती है।

हमारे विचार–संतति व धन के विषय के फल मंगल, रवि व गुरु के बारे में, धूर्त होना यह शनि के बारे में तथा नवाथेजी का मत मंगलके बारे में अनुभव में आता है।

अष्टमेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता—अष्टमेशे व्यये षष्ठे नित्यरोगी प्रजायते जलसर्पादिकाद् घातो भवेत् तस्यैव शैशवे ।। अष्टमेश षष्ठ या व्ययस्थान में हो तो वह मनुष्य हमेशा रोगी रहता है, उसे बचपन में पानी या सांप से घात होने का भय रहता है। यवनजातक—मृतिपती रिपुभावगतौ यदा रविमहीतनयौ च विरोधकृत् । विधुयुतश्च विरोधकरो बुधे भृगुशनी बहुरोगकरावुभौ ।। अष्टमेश रवि या मंगल षष्ठ में हो तो अथवा बुध चन्द्र से युक्त होतो विरोध होता है, शुक्र या शनि हो तो रोग होते हैं। गर्गजातक—छिद्रेशे रिपुसंस्थिते दिनकरे भूभृद्विरोधी गुरौ स्वांगे सीदति दुष्टिरोगकलितः शुक्रे सरोगो विधौ। भौमे कोपयुतो बुधे अहिभयं दुःखाभिभूतः शनौ कष्टं राहु बुधे हि तत्र शशभृत् सौम्येक्षिते नैव किम् ।। अष्टमेश रवि षष्ठ में होतो राजा से विरोध होता है, गुरु हो तो शरीरकष्ट होता है, शुक्र हो तो दृष्टि का रोग होता है, चन्द्र हो तो रोग होते हैं, मंगल हो तो क्रोध बहुत आता है, बुध हो तो सांप का भय रहता है, शनि हो तो दुःख तथा राहु व बुध हो तो कष्ट होता है, चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कोई कष्ट नही होता। मानसागरी—गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी—यह अल्पायु होता है अथवा हमेशा रोगी रहता है, आयु में कष्ट व दरिद्रता रहती है।

हमारे विचार—लोमेश व नवाथेजी के मत चन्द्र के बारे में विशेषतः सही मालूम पडते हैं। अन्य लेखकों ने भिन्न भिन्न ग्रहों के भिन्न भिन्न फल बताये ही हैं।

अष्टमेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता—इस का मत अष्टमेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक—मदनगेऽष्टमपेऽपि च गुह्यरुक् कृपणदुष्टकुशीलजनप्रियः। खलखगैर्बहुपापविरोधकृत् प्रमदया क्षितिजेन च शाम्यति ।। इसे गुप्त रोग होते हैं, यह कंजूस, दुष्ट, दुराचारी लोगों को प्रिय होता हैं, अष्टमेश पापग्रह हो तो बहुत पाप व विरोध होता है, मंगल हो तो

इस का मन स्त्री से शान्त होता है। गर्गजातक-मृत्युपती सप्तमगे दुष्ट कुलस्त्रीप्रियो गुदव्याधिः। क्रूरे भार्या द्वेषी कलत्रदोषात् मृतिं लभते ॥ यह दुष्ट कुल की स्त्री चाहता है, इसे गुद के रोग (ववासीर या भगंदर) होते हैं, अष्टमेश पापग्रह हो तो यह पत्नी का द्वेष करता है तथा स्त्री के दोष से (गुप्त रोग आदि से) इस की मृत्यु होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इस का धन विषयवासना पूरी करने में तथा गुप्त कामों में खर्च होता है।

हमारे विचार-लोमेश के मत का अनुभव गुरु व मंगल के बारे में, नवाथेजी के मत का अनुभव मंगल के बारे में तथा अन्य लेखकों के मत का अनुभव अन्य ग्रहों के बारे में आता है।

अष्टमेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-अष्टमेशेऽष्टमस्थाने भार्या पररता भवेत्। द्यूतश्चौरोन्यथावादी गुप्तनिन्दासु तत्परः ॥ अष्टमेश अष्टम में हो तो उस मनुष्य की पत्नी व्यभिचारी होती है, वह जुआरी, चोर, झूठ बोलनेवाला तथा गुप्त रूप से निन्दा करनेवाला होता है। यवनजातक-मृतिपती मृतिगे व्यवसायकृद् गदगणेन युतः शुभवाक् शुचिः। कितवकर्मकरः कपटी नरः कितवकर्मणि नाविदितः कुले ॥ यह व्यापारी, रोगी, शुभ बोलनेवाला, पवित्र, धूर्तता से काम करनेवाला, कपटी तथा घराने में प्रसिद्ध होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसे साधारण प्रयत्न से भी वहुत धन मिलता है, अचानक धन मिलता है, यह भोहरे या सुरंग वनाने में रुचि लेता है, लोग इस के पास धरोहर रखते हैं। मोघेजी-यह दुराचारी होता है तथा पत्नी की इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करता है।

हमारे विचार-लोमेश, यवन, गर्ग, मानसागरी व मोघेजी के मतों का अनुभव शनि व मंगल के बारे में आता है, नवाथेजी के मत का अनुभव बुध, शुक्र व चन्द्र के बारे में आता है।

अष्टमेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता–अष्टमेशे तपःस्थाने महापापी च नास्तिकः। सुताढ्या त्वथवा वन्ध्या परभार्याधने रुचिः॥ यह महापापी, नास्तिक, परस्त्री तथा परधन में रुचि रखनेवाला होता है, इसकी पत्नी वन्ध्या या पुत्रयुक्त होती है। यवनजातक–सुकृतगेऽष्टमभावपतौ जनो भवति पापरतः खलु हिंसकः। खलु सुहृन्मुख पूज्य इतस्ततो भवति मित्रगणेन विवर्जितः॥ यह पापी, हिंसक, मित्ररहित, यहां वहां आदर पानेवाला होता है। गर्गजातक–मृतिनाथे नवमस्थे निःसंगो जीवघातकः पापी। निर्बन्धुः निःस्नेही पूज्ये विमुखो भवेद् व्यंगः॥ यह निःसंग, जीवों का घात करनेवाला, पापी, मित्र व बन्धुओं से रहित, आदरणीय लोगों के विरुद्ध रहनेवाला होता है इसके चेहरे में कोई व्यंग रहता है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–किसी के मृत्युपत्र के अनुसार इस्टेट की व्यवस्था देखनी पडती है, लोग इसके पास धरोहर रखते हैं, इसके कहने पर पैसा देते हैं। मोघेजी–यह पापी, व्यभिचारी होता है, इसे सन्तति कम होती है।

हमारे विचार–नवाथेजी के मत का अनुभव गुरु व शुक्र के बारे में तथा शेष लेखकों के वर्णन का अनुभव पापग्रहों के बारे में आता है।

अष्टमेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता–इसका मत अष्टमेश चतुर्थ में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक–मृतिपतौ दशमस्थलमाश्रिते नृपतिकर्मकरोपि समः खलैः। भवति कर्मकरश्च नरः सदा प्रियजनै रहितः खलु दुःखितः॥ यह राजकर्मचारी होता है, पापग्रह हो तो नौकर, प्रिय लोगों से रहित, दुःखी होता है। गर्गजातक–कर्मस्थे निधनेशे नृपकर्मा नीचकर्म निरतश्च। अलसः क्रूरोऽन्यभवस्तनयवान्न जीवति माता॥ यह राजकर्मचारी, नीच काम करनेवाला, आलसी, क्रूर, व्यभिचार से उत्पन्न, पुत्रयुक्त होता है, इसकी माता अधिक काल जीवित नही रहती। मानसागरी–गर्ग जैसा

वर्णन है सिर्फ अन्यभव यह शब्द छोड दिया है। नवाथेजी-इसे राजा से पुरस्कार, वेतन, पद पर नियुक्ति आदि का लाभ मिलता है, जागीर या इनाम मिलता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों का अनुभव शनि, मंगल, रवि, गुरु व शुक्र के बारे में आता है।

अष्टमेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत अष्टमेश पंचम में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-भवगतोऽष्टमप खलु चाल्पतो भवति पुष्टियुतः परतः सुखी। शुभगैर्बहु जीवति युक् खलैर्भवति नीचजनैश्च समन्वितः ॥ शुभग्रह हो तो यह थोडे परिश्रम से संपन्न, दूसरों से सुख प्राप्त करनेवाला होता है, पापग्रह हो तो यह नीच लोगों से युक्त होता है। गर्ग-जातक-लाभस्ते चाष्टमपे बाल्ये दुःखी सुखी पश्चात्। दीर्घायुः सौम्यखगे पापेऽल्पायुर्नरो भवति ॥ यह बचपन में दुःख सहन कर बाद में सुखी होता है। शुभग्रह हो तो। दीर्घायु, पापग्रह हो तो अल्पायु होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसे एकदम बहुत धन मिलेगा, लोगों से पुरस्कार, मित्रों से धन की सहायता मिलेगी। मोघेजी-हमेशा धन का व्यय होता रहेगा।

हमारे विचार-नवाथेजी का मत शुभग्रहों के बारे में तथा शेष लेखकों का वर्णन पापग्रहों के बारे में अनुभव में आता है।

अष्टमेश व्ययस्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत अष्टमेश षष्ठ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-व्ययगते मृतिपे च कठोरवाग् भवति तस्कर-कर्मकरः शठः। विकल कर्मकरो निपुणः खलो मृतिमतिश्च मृगांगसुभ-क्षणात् ॥ यह कठोर बोलनेवाला, चोर, दुष्ट, बुरे काम करनेवाला, चतुर, आत्मघात करने की इच्छा रखनेवाला, कुछ अभक्ष्य खाने से मरनेवाला होता है। गर्गजातक-व्ययभवनगतेऽष्टमपे क्रूरो वा तस्करो

निकृष्टश्च । अनात्मगतिर्व्यंगवपुर्मृतस्तु काकादिभिर्भक्ष्यः ।। यह क्रूर, चोर, नीच होता है, अपना चालचलन इसके हाथ नहीं रहता, शरीर में व्यंग रहता है, मरने के बाद कौए आदि उसके शव को खाते हैं । मान-सागरी-गर्ग जैसा वर्णन है । नवाथेजी-यह विचित्र व्यवहार करता है, नाच-तमाशे में पैसा खर्च कर दीवालिया हो जाता है ।

हमारे विचार-उपर्युक्त अशुभ फलों का अनुभव रवि व मंगल के बारे में आता है ।

प्रकरण ११

नवम भावेश फल

नवमेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता-भाग्येशे सप्तमे लग्ने गुणवान् पशुमान् भवेत् । कदाचिन्नभवेत् सिद्धिर्यत् कार्यं कर्तुमिच्छति ।। नवमेश लग्न में या सप्तम में हो तो वह मनुष्य गुणवान होता है, पशुपालन करता है, कभी कभी वह जो कार्य करना चाहे वह सिद्ध नहीं होता । यवनजातक-तनुगते नवमाधिपतौ गुरोः सुरविनायक पूजनतत्परः । सुकृतवान् कृपणो नृप-कर्मकृत् स्मृतियुतो मितभुक् स नरः शुचिः ।। यह गुरु, देवता, गणेश आदि की पूजा करता है, अच्छे काम करता है, कंजूस होता है, राज-कर्मचारी होता है, इस की स्मृति अच्छी होती है, यह थोडा भोजन करता है तथा पवित्र रहता है । गर्गजातक-लग्नगते नवमपतौ देवगुरुन्म-न्यते शूरः । कृपणः क्षितिपति कर्मा स्वल्पग्राही भवति मतिमान् ।। यह बुद्धिमान, पराक्रमी, देव-गुरु का सम्मान करनेवाला, कंजूस, राज-कर्मचारी, थोडा संग्रह करनेवाला होता है । मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है । नवाथेजी-यह बहुत भाग्यवान होगा, रंक से राजा बनेगा, यशस्वी, धार्मिक, देवालय बनाने या जीर्णोद्धार करनेवाला, संस्थाओं को दान देनेवाला होगा ।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों का अनुभव शनि, चन्द्र व बुध को छोडकर अन्य ग्रहों के बारे में आता है।

नवमेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता-भाग्येशे सहजे वित्ते सदा भाग्यानुचिन्तकः। धनवान् गुणवान् कामी पण्डितो जनवल्लभः।। नवमेश धनस्थान या तृतीयस्थान में हो तो वह मनुष्य हमेशा अपने भाग्य के बारे में सोचता है, गुणवान, धनवान, कामुक, विद्वान तथा लोकप्रिय होता है। यवनजातक-नवमगे धनभावगते व्रती स तु सुशीलसुतश्च नरः शुचिः। गतियुतश्च चतुष्पद-पीडितो व्यययुतः शमसाधनतत्परः।। यह व्रत पालन करता है, इसके पुत्र सदाचारी होते हैं, यह पवित्र, प्रवास करनेवाला, चौपाये पशुओं से कष्ट पानेवाला, खर्च करनेवाला तथा शान्ति का साधक होता है। गर्गजातक-नवमाधिपे तु धनगे वृषलो विदितः सुशीलवान् सत्यः। सुकृ-तिर्वदने व्यंगः चतुष्पदोत्पन्नपीडश्च।। यह शूद्र जैसा व्यवहार करता है, प्रसिद्ध, सदाचारी, सच्चा, अच्छे काम करनेवाला होता है, चेहरे में कुछ व्यंग रहता है, इसे चौपायं पशु से कष्ट होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह परिवार की रक्षा अच्छी तरह कर धन का उपभोग प्राप्त करेगा।

हमारे विचार-गुरु के अतिरिक्त अन्य सब ग्रहों के बारे में उपर्युक्त फलों का अनुभव आता है।

नवमेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत नवमेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-सुकृतपे सहजस्थलगे तथा भवति रूपयुतो जनवल्लभः। स्वजनबन्धुजनप्रतिपालको विदितकर्मकरो यदि जीवितः।। यह जीवित रहे तो सुन्दर, लोकप्रिय, अपने सम्बन्धियों का पालन करने-वाला तथा प्रसिद्ध काम करनेवाला होता है। गर्गजातक-सहजगते सुकृत-पतौ रूपस्त्रीबन्धुवत्सलः पुरुषः। बन्धुस्त्रीरक्षणकृद् यदि जीवति बन्धुभिः सहितः।। यह जीवित रहे तो रूपवान होता है, पत्नी व भाइयों पर

स्नेह रखता है, उनका पालन करता है, बन्धुओं के साथ रहता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह अपने पराक्रम से भाइयों के साथ उन्नति करता है तथा लोगों में प्रसिद्ध होनेवाले कार्य करता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों में धनवान होना यह शुभग्रहों के बारे में तथा बन्धुसुख यह पापग्रह के बारे में अनुभव में नहीं आता। शेष फल सब ग्रहों के बारे में कम अधिक अनुभव में आते हैं।

नवमेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता-भाग्येशे दशमे तुर्ये मन्त्री सेनापतिर्भवेत्। पुण्यवान् पशुमांश्चापि साहसी क्रोधवर्जितः॥ नवमेश चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य मंत्री या सेनापति होता है, पुण्यवान्, पशुओं से युक्त, साहसी व क्रोधरहित होता है। यवनजातक-हिबुकभावगते सुकृतेश्वरे बुधसुहृत्पितृपूजनतत्परः। भवति तीर्थंकरः सुरभक्तिमान् निखिलमित्रपरः सुसमृद्धिमान्॥ यह पिता, मित्र तथा विद्वानों का आदर करता है, तीर्थयात्रा करता है, ईश्वरभक्त होता है, सबसे मित्रता रखता है व अच्छा संपन्न होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह धनवैभव का उपभोग प्राप्त करता है, बडी इमारतें बनवाता है, खेती व बगीचों से धनलाभ प्राप्त करता है। मोघेजी-यह वक्ता व संतोषी होता है।

हमारे विचार-लोमेश का मत रवि, शनि, मंगल के बारे में तथा शेष लेखकों का मत शुभग्रहों के बारे में अनुभव में आता है।

नवमेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता-भाग्येशे पंचमे लाभे भाग्यवान् जनवल्लभः। गुरुभक्तिरतो मानी धीरोदारगुणैर्युतः॥ नवमेश पंचम या लाभस्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्यवान, लोकप्रिय, बडे लोगों का आदर करनेवाला, मानी, धैर्य, उदारता आदि गुणों से युक्त होता है। यवनजातक-सुकृतपे तनयस्थलगे यदा सुरमहोसुरभावयुतोनरः। प्रकृतिसुन्दरतामतिमान् नरो

मधुरवाक् तनयाश्च भवन्ति हि ॥ यह देव ब्राह्मणों पर भक्ति रखनेवाला सुन्दर, बुद्धिमान, मधुर बोलनेवाला तथा पुत्रयुक्त होता है। गर्ग व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह भाग्यवान, ईश्वर-भक्त, विद्वान, ग्रन्थकर्ता होता है। Tom.

हमारे विचार-उपर्युक्त फल सभी ग्रहों के बारे में कम अधिक मात्रा में अनुभव में आते हैं।

नवमेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता-भाग्येशे मातुले रि:फे भाग्यहीनो भवेद् ध्रुवम्। मातुलस्य सुखं न स्यात् ज्येष्ठभ्रातुः सुखं तथा ॥ नवमेश षष्ठ या व्यय स्थान में हो तो वह मनुष्य भाग्यहीन होता है, उसे मामा तथा बडे भाई का सुख नहीं मिलता। यवनजातक-नवमपे रिपुगे रिपुसंयुतः प्रणयकृद् विकलः कथितः शुचिः। विकृतदर्शनभाक् स तथा खलो भवति निन्दित-कीर्तियुतो नरः ॥ यह शत्रुओं से युक्त, प्रेम करनेवाला, विव्हल, पवित्र, देखने में विकृत, दुष्ट, बदनाम होता है। गर्गजातक-शत्रुप्रणतिपरायण धर्माकलितं कलाविकलदेहम्। दर्शननिद्रानिरतं सुकृतपतिः षष्ठगः कुरुते ॥ यह शत्रुओं को शरण जानेवाला, धर्महीन, कलारहित, बहुत नींद लेनेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह अभागा होता है, कई तरह के कष्ट सहन करता है।

हमारे विचार-लोमेश व नवाथेजी का मत चन्द्र तथा पापग्रहों के बारे में एवं यवनजातक का मत शुभग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होता है।

नवमेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत नवमेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-नवमपे मदगे वनितासुखं वचनकृत् चतुरा धन-संयुता। भवति रागवति किल सुन्दरी सुकृतकर्मरता बहुशीलवान् ॥ यह सदाचारी होता है, स्त्रीसुख पाता है, पत्नी आज्ञा माननेवाली, चतुर, धनसंपन्न, प्रेम करनेवाली, सुन्दर, पुण्य कार्यों मे रुचि लेनेवाली होती

है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह लम्बी यात्राएं करेगा, स्त्री भाग्यवान होगी, विवाह के बाद भाग्योदय होगा। मोघेजी-यह असफल होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल कम अधिक मात्रा में सभी ग्रहों के बारे में अनुभव में आते हैं।

नवमेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस स्थान के फल नहीं बताये हैं। एक आचार्य-भाग्येशे मारकस्थे तु जातभाग्यं निरर्थकम्॥ नवमेश मारक स्थान में हो तो सब भाग्य निरर्थक होता है। यवनजातक-भवति दुष्टतनुर्जनवंचको मृतिगते सुकृताधिपतौ सदा। खलजनः सुकृतै रहितः शठो विटसखा च तथैव नपुंसकः॥ यह दूषित शरीरवाला, लोगों को धोखा देनेवाला, दुष्ट, पुण्यहीन, वदमाश, नीच लोगों का मित्र तथा नपुंसक होता है। गर्गजातक-दुष्टो जन्तुविघाती गृहबन्धुविवर्जितः सुकृतरहितः। नवमेशे मृत्युगते क्रूरः षण्ढस्तु विज्ञेयः॥ यह दुष्ट, प्राणियों का घात करनेवाला, घर तथा बन्धुओं से रहित, पुण्यहीन, क्रूर, नपुंसक होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह बदनाम, अभागा, दुखी होगा। मोघेजी-यह भाग्यहीन होगा।

हमारे विचार-मकर का शनि तथा बुध छोड कर अन्य ग्रहों के बारे में उपर्युक्त फल प्रायः ठीक प्रतीत होते हैं।

नवमेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-धनधान्ययुतो नित्यं गुणसौन्दर्यसंयुतः। बहुभ्रातृसुखैर्युक्तो भाग्येशे नवमे स्थिते॥ यह धनधान्य से संपन्न, गुणवान, सुंदर, बहुत भाइयों के सुख से युक्त होता है। यवनजातक-सुकृतभावपतिर्नवमे स्थितो भवति बन्धुजनैः सहितः शुचिः। अरुचितश्च विवादकरो जनो गुरुसुहृत्स्वजनेषु रतः सदा॥ यह बन्धुओं से युक्त, पवित्र, जिस में रुचि न हो ऐसे विवाद करनेवाला, गुरु, मित्र तथा सम्बन्धियों पर प्रेम

करनेवाला होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह भाग्यवान, कीर्तिमान, सफल, पुण्यकार्य करनेवाला तथा धर्मनिष्ठ होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फलों में बहुत भाई होना यह फल भाग्येश पापग्रह होकर पुरुष राशि में हो तो अनुभव में नहीं आता। अन्य फल शनि को छोड कर अन्य ग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

नवमेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत नवमेश चतुर्थ में होने के फलों में बता चुके हैं। यवनजातक-नृपतिकर्मकरो नृपवित्तयुक् सुकृतकर्मकरो जननीपरः। विदितकर्मकरः सुकृताधिपे गगनगे पुरुषो भवति ध्रुवम् ॥ यह राजा का कार्य करता है, राजा से धन प्राप्त करता है, अच्छे व प्रसिद्ध कार्य करता है, माता पर भक्ति रखता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह राजकीय सम्मान पायेगा, बडा अधिकारी होगा, राजकीय कामों से भाग्योदय होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, मंगल, गुरु व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

नवमेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत नवमेश पंचम में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-भवति कर्मकरो बहुनायकः सुकृतवान् बहुदानपरः पुमान्। धनपतिर्नृपतेर्बहुवित्तभुक् सुकृतपे भवगेहगते सदा ॥ यह बहुत लोगों का नेता, पुण्यवान, बहुत दान करनेवाला, धनी, राजा से धन प्राप्त करनेवाला तथा काम करनेवाला होता है। गर्गजातक-दीर्घायुर्धर्मपरो धनेश्वरः स्नेहलो नृपतिलाभी सुकृतैः ख्यातः सततं सुकृतपतौ लाभभवनस्थे ॥ यह दीर्घायु, धार्मिक, धनी, स्नेहशील, राजा से लाभ प्राप्त करनेवाला तथा अच्छे कार्यों से प्रसिद्ध होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, केवल ससुतः अर्थात् पुत्रयुक्त होता है इतना शब्द अधिक

बतलाया है। नवाथेजी—यह गरीब से अमीर होगा, हमेशा इसके पास संपत्ति का प्रवाह आता रहेगा।

हमारे विचार—कोई भी भावेश लाभ स्थान में होने से मनुष्य दानी, उदार नहीं होता। शेष फल रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

नवमेश व्यय स्थान में

लोमेशसहिता-इसका मत नवमेश षष्ठ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक—व्ययगतः सुकृताधिपतिर्यदा भवति मानयुतः परदेशगः। मतियुतः स च सुन्दरदेहयुग् यदि खलाच्च खगादिह धूर्तकः॥ यह अभिमानी, विदेश जानेवाला, बुद्धिमान, सुन्दर होता है, पापग्रह हो तो धूर्त होता है। गर्गजातक—यवनजातक जैसा वर्णन है, केवल मानी विद्यावान् कुमति अर्थात यह अभिमानी, विद्वान किन्तु दुर्बुद्धि होता है इतना अलग बतलाया है। मानसागरी—गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी—यह बदनाम व गरीब होगा।

हमारे विचार—उपर्युक्त फल शुभग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

प्रकरण १२

दशम भावेश फल

दशमेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता—दशमाधिपतौ लग्ने कवितागुणसंयुतः। बाल्ये रोगी सुखी पश्चादर्थवृद्धिर्दिने दिने॥ यह कवि होता है, बचपन में रोगी तथा बादमें सुखी रहता है, दिनों दिन इसका धन बढता है। यवनजातक—दशमपे तनुगे जननीसुखं पितरि भक्तिपरः सुखसंयुतः। खलखगैर्बहुदु खपरः खलो जनकवंचनकृच्च सुखान्वितः॥ यह सुखी, माता का सुख प्राप्त

करनेवाला, पिता पर भक्ति रखनेवाला होता है, किन्तु दशमेश पापग्रह हो तो बहुत दुखी, दुष्ट एवं पिता को धोखा देनेवाला होता है। गर्गजातक-गगनपतौ लग्नगते मातरि वैरी पितरि भक्तः। दुःखीगतोऽपि बाल्ये परपुरुषरता भवति माता ॥ यह पिता पर भक्ति रखता है किन्तु माता से वैर करता है, बचपन में दुखी होता है, इसकी माता व्यभिचारिणी होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, सिर्फ दुःखीगतोपि के स्थान में दुष्टगते च ताते इतना भिन्न है; जिस का तात्पर्य है-पिता की मृत्यु के बाद इसकी माता स्वैरिणी होती है। नवाथेजी-यह उद्योगी, महत्त्वाकांक्षी तथा अपने पराक्रम से उन्नति करनेवाला होता है।

हमारे विचार-इनमें से अधिकांश फल शुक्र, बुध व गुरु के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता-धने मदे च सहजे कर्मेशो यदि संस्थितः। मनस्वी गुणवान् कामी सत्यधर्मसमन्वितः ॥ दशमेश धन, तृतीय या सप्तम में हो तो वह मनुष्य अभिमानी, गुणवान, कामुक, सत्य और धर्म से युक्त होता है। यवनजातक-भवति वित्तगते गगनाधिपे जनकमातृसुखं शुभखेचरैः। कठिनदुष्टवचस्तनुभुग्नरः सुतनुकर्मकरो धनवान् भवेत् ॥ माता-पिता का सुख मिलता है, सुंदर, काम करनेवाला, धनवान किन्तु बोलने में कठोर होता है। गर्गजातक-वित्तस्थे गगनपतौ मात्रा पालितः सुतो भवति। लोभी मातरि दुष्टो स्वल्पग्रासः सुतनुकर्मा ॥ इसका माता द्वारा पालन किया जाता है किन्तु यह माता के साथ दुष्ट व लोभी का व्यवहार करता है, यह कम खाता है तथा सुंदर व अच्छे काम करनेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-राजकीय या साहुकारी नौकरी से धनलाभ होगा व परिवार का सुख मिलेगा। मोघेजी-यह वक्ता होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, गुरु, बुध व शुक्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत दशमेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-स्वजनमातृविरोधकरः सदा बहुलसेवककर्मकरो भवेत्। तदनु मातुलपुत्रसुखोल्पको नहि समर्थवपुः पृथुकर्मणि। यह माता तथा स्वजनों का विरोध करता है, सेवक का काम करता है, मामा के पुत्र से थोडा सुख मिलता है, बडे काम के योग्य शरीर में सामर्थ्य नही होता। गर्गजातक-यवनजातक जैसा ही वर्णन है, सिर्फ मामा के घर पालन होता है इतना अधिक बतलाया है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह दीर्घ उद्योग करेगा, स्वतन्त्र विचार रखेगा, महत्त्वाकांक्षी, साहसी, होगा, जीविका स्वतन्त्र रूप से कमायेगा तथा नौकरी का तिरस्कार करेगा। मोघेजी-यह स्वच्छंद प्रवृत्ति का होगा।

हमारे विचार-लोमेश, नवाथेजी व मोघेजी के फल पापग्रहों के बारे में तथा शेष फल शुभग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता-दशमेशे सुखे कर्मे ज्ञानवान् सहविक्रमी। गृह्यदेवार्चनरतो धर्मात्मा सत्यसंयुतः॥ दशमेश चतुर्थ या दशम में हो तो वह मनुष्य ज्ञानी, पराक्रमी, धर्मात्मा, सत्यपरायण, गुप्त रूप से किसी देवता की पूजा करनेवाला होता है। यवनजातक-दशमपेऽम्बुगते नितरां सुखी पितरि मातरि पोषणतत्परः। सकललोकदशामपि तापकृत् नृपतिसंभवलाभविभूषितः॥ यह सुखी, माता-पिता का पालन करनेवाला, लोगों से कष्ट सहन करनेवाला, राजा से लाभ प्राप्त करनेवाला होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक का ही वर्णन है, सिर्फ अपि तापकृत् की जगह अमृतायते इतना भिन्न शब्द दिया है। नवाथेजी-यह माता-पिता से सुख पायेगा, राजा जैसा वैभव मिलेगा, खेतो से जीविका प्राप्त होगी, सम्बन्धियों को प्रिय होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल अधिकतर शुभग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं, सिर्फ राजा से लाभ यह पापग्रहों का फल है।

दशमेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता–दशमेशे सुते लाभ धनवान् पुत्रवान् भवेत्। सर्वदा हर्षसंयुक्तः सत्यवादी सुखो नरः ॥ दशमेश पंचम या लाभ स्थान में हो तो वह मनुष्य धनी पुत्रयुक्त, हमेशा खुश, सच बोलनेवाला व सुखी होता है। यवनजातक–भवति सुन्दरकर्मकरो नरो नृपतिलाभयुतोऽप्यति-भोगवान्। विमलगानकलाकुशलः स्मृतो गगनपे सुतगेल्पसुखी नरः ॥ यह अच्छे काम करता है, राजा से लाभ होता है, बहुत उपभोग मिलते हैं, अच्छा संगीतकुशल होता है किन्तु सुख कम मिलता है। गर्गजातक व मानसागरी–यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ विडम्बी पालयति न तत्सुतं माता इतना भिन्न वर्णन है जिसका तात्पर्य है–यह नकल करता है, माता पुत्र का पालन नहीं कर पाता। नवाथेजी–यह विद्वान, कूटनीतिज्ञ, अच्छा शिक्षक होगा।

हमारे विचार–उपर्युक्त सब फल कम अधिक मात्रा में सब ग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता–कर्मेशोऽरिव्यये यस्य शत्रुभिः परिपीडितः। चातुर्य-गुणसंपन्नः कदाचिन्न सुखी भवेत् ॥ दशमेश षष्ठ या व्यय में हो तो वह मनुष्य शत्रुओं द्वारा पीडित, चतुर किन्तु कभी सुख न पानेवाला होता है। यवनजातक–रिपुगृहे दशमाधिपतौ गदी नृपतिवैरकरश्च विवादकृत्। प्रबलकामपरोऽथ भाग्यतो रिपुगणाद्यदि जीवति जीवति ॥ यह रोगी, राजा से शत्रुता करनेवाला, विवाद करनेवाला, बहुत कामुक होता है, शत्रुओं से बचा तो यह भाग्य से ही जीवित रहता है। गर्गजातक–अम्बरपे रिपुसंस्थे क्रूरे बाल्येतिकष्टभाग् भवति। पुरुषः पश्चादीशः परपुरुषरता तथा माता ॥ दशमेश पापग्रह होकर षष्ठ में हो तो बचपन में बहुत कष्ट होता है, बाद में अधिकारी होता है, इस की माता व्यभिचारी होती है। मानसागरी–अम्बरपे रिपुसंस्थे शत्रुभयात् कातरः कलहशीलः कृपणः कृपया हीनो नरो न रोगी भवति लोके ॥ यह शत्रु

के भय से व्याकुल, झगडालू, कंजूस, निर्दय, नीरोग होता है। नवाथेजी-इस के व्यवसाय में अनेक बाधाए आती हैं तथा शत्रुओं से कष्ट होता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल रवि, चन्द्र व मंगल के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश सप्तम स्थान में

लोमेशसहिता–इस का मत दशमेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–सुतवती बहुरूपसमन्विता रमणमातरि भक्तिसमन्विता। भवति तस्य जनस्य निरन्तरं प्रियतमाम्बरपे दयितागते॥ इस की पत्नी पुत्रवती, बहुत सुन्दर, सास पर भक्ति रखनेवाली होती है। गर्गजातक व मानसागरी–यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-व्यवसाय के लिए विदेशयात्रा होगी, दूरदूर के प्रदेशों से व्यापार होगा, कोर्ट के काम व साझेदारी के व्यवहार करेगा। मोघेजी–यह स्वच्छन्द होगा।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल रवि, शनि, चन्द्र व बुध के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश अष्टम स्थान में

लोमेशसहिता–कर्मेशश्चाष्टमे यस्य चिन्तायुक्तो भवेन्नरः। धनादिसुखमध्यं स्यात् शरीरे कष्टसंयुतः॥ यह चिन्तित, शरीर–कष्ट से युक्त तथा धन का सुख मध्यम पानेवाला होता है। यवनजातक–अतिखलोऽनृतवाक् कपटी नरस्तदनु चौरकलाकुशलः सदा। जननिपीडनतापकरः सदा दशमपे निधने लघुजीवितः॥ यह बहुत दुष्ट, झूठ बोलनेवाला, कपटी, चोरी में होशियार, माता को कष्ट देनेवाला, अल्पायु होता है। गर्गजातक व मानसागरी–यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी–यह बहुत कष्ट कर पेट भरता है, पिता का गुप्त धन मिलता है, मुफ्त का धन पाने के लिए सोचते रहता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल चन्द्र व मंगल के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-कर्मेशो नवमे यस्य धर्मकर्मसु तत्परः। देवद्विजेषु भक्तिश्च तीर्थयोगेषु तत्परः॥ यह धार्मिक कार्य, तीर्थयात्रा, देव व ब्राम्हणों की भक्ति करनेवाला होता है। यवनजातक-भवति ना सुभगस्तनुजः सदा शुभसहोदरमित्रपराक्रमी। दशमपे नवमस्थलगे नरः सततसत्यवचा वसुशालिनः॥ यह सुन्दर होता है, इसके भाई, मित्र अच्छे होते हैं, पराक्रमी होता है। हमेशा सच बोलता है, धनी होता है। गर्गजातक-शुभशीलः सद्बन्धुः सन्मित्रो दशमपे नवमलीने। तन्मातापि सुशीला सुकृतवती सत्यवचनरता॥ यह सदाचारी होता है, इस के भाई, मित्र अच्छे होते हैं, इसकी माता सुशील, अच्छे काम करनेवाली, सच बोलनेवाली होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-यह स्वतन्त्र व्यवसाय में प्रगति करता है, धार्मिक व पुण्यकार्य करनेवाला होता है। मोघेजी-यह भाग्यवान होता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु व शुक्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत दशमेश चतुर्थ में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-जननिसौख्यकरः शुभदः शुभो भवति मातृकुलेषु रतः सुधीः। अतिपटुः प्रबलो दशमाधिपे स्वगृहगे नृपमानधनान्वितः॥ यह माता को सुख देता है, शुभ कार्य करता है, माता के घराने पर प्रेम करता है, बुद्धिमान, कुशल, बलवान, तथा राजा से सम्मान व धन पानेवाला होता है। गर्गजातक-गगनपतिर्गगनगतो जनयति जननीसुखप्रदं पुरुषम्। जननीकुलविपुलसुखं प्रकटघटीनां पटीयांसम्॥ इसमें पहला भाग तो यवनजातक जैसा है। अन्तिम शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं है। मानसागरी-गर्ग व यवनजातक के ही शब्दों का मिश्रण दिया है।

नवाथेजी–यह बडे पद का अधिकारी होता है, सम्मान पाता है, लोगों में प्रसिद्ध व राजमान्य होता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल कम-अधिक मात्रा में सभी ग्रहों के बारे में ठीक है किन्तु राशि व ग्रह के अनुसार थोडा फरक होता है, मकर में शनि दशम में हो तो माता का सुख नहीं मिलता, स्वगृह में दशमेश गुरु हो तो पिता का सुख नहीं मिलता, राजा से मान व धन मिलता है। यवनजातक व नवाथेजी के वर्णन रवि, मंगल, गुरु व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

दशमेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता–इसका मत दशमेश पंचम स्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–विजयलाभयुतः प्रमदान्वितः परपराजयतो वसुलाभवान्। सुतसुतानुगतो भवगे गृहे दशमपे बहुभृत्ययुतो नरः॥ यह विजय व लाभ, स्त्री व पुत्र-पौत्र, बहुतसे नौकर तथा शत्रु-पराजय से धन प्राप्त करता है। गर्गजातक–मानोर्जितभर्तृका जननी तथा च सुतरक्षिणी भवेत् सुखिना। दीर्घायुर्मातृसुखः पुरुषो लाभाश्रितेम्बरपे॥ यह दीर्घायु होता है तथा माता का सुख प्राप्त करता है, इस की माता सुखी, पुत्र का रक्षण करनेवाली, सन्मानित पति की पत्नी होती है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–व्यवसाय या नौकरी से प्रचुर धन मिलेगा।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल प्रायः प्रत्येक ग्रह के बारे में थोडे-अधिक फरक से अनुभव में आते हैं।

दशमेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत दशमेश षष्ठ स्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–नृपतिकर्मकरो निजवीर्ययुग् जननिसौख्यविवर्जितवक्रधीः दशमपे व्ययगे परदेशवान् व्ययपरश्च तथा सुभगः स्वयम्॥ यह राजकर्मचारी, अपने बल से संपन्न, विदेश जानेवाला, सुन्दर, खर्चीला होता है, इसकी बुद्धि कुटिल होती है, माता का

सुख नहीं मिलता। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-व्यापार में धन नष्ट होगा, आर्थिक अडचन बनी रहेगी, राजा से दण्ड मिलेगा, अनेक संकट आयेंगे। मोघेजी-यह असफल व दुखी होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं, शुभग्रहों के बारे में नहीं।

प्रकरण १२

लाभ भावेश फल

लाभेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे संस्थिते लग्ने धनवान् सात्त्विको महान्। समदृष्टिर्महावक्ता कौतुकी च भवेत् सदा ॥ यह बहुत सात्त्विक प्रवृत्ति का, धनवान, समदृष्टि, बडा वक्ता, कौतुकयुक्त होता है। यवनजातक-भवति ना सुभगः स्वजनप्रियः कलित एव वदान्यकपुत्रवान्। भवपती तनुगे च सुकृत्तमो नृपतितो धनलाभकरः सदा ॥ यह सुन्दर, अपने सम्बन्धियों को प्रिय, उदार पुत्रों से युक्त, अच्छे कार्य करनेवाला, राजा से धन प्राप्त करनेवाला होता है। गर्गजातक-अल्पायुर्बहुकलितः शूरो दाता जनप्रियः सुभगः। लाभपती लग्नगते तृष्णादोषान्मृतिं लभते ॥ यह अल्पायु, बहुत कलाओं में प्रवीण, शूर, उदार, लोकप्रिय, सुन्दर होता है, तृष्णा से इसकी मृत्यु होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसका ध्यान धन की ओर रहेगा तथा इसे बहुत धन मिलेगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल बुध, गुरु, शुक्र व चन्द्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं। क्वचित रवि व मंगल के बारे में भी अनुभव में आते हैं।

लाभेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे द्वितीये पुत्रे नानासुखसमन्वितः। पुत्रवान् धार्मिकश्चैव सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ लाभेश धन या पंचम स्थान में हो

तो उस मनुष्य को बहुत प्रकार के सुख मिलते हैं, पुत्र होते हैं, सब सफलता मिलती है, वह धार्मिक होता है। यवनजातक-चपलजीवितमल्पसुखं तथा भवपतिर्धनभावगतो यदि। खलखगेत्वतितस्करतायुतः शुभखगे धनवानति जीवति ।। यह अल्पायु, अल्पसुख होता है, लाभेश पापग्रह हो तो यह चोर होता है, शुभग्रह हो तो धनवान व दीर्घायु होता है। गर्गजातक-वित्तगते लाभपतावुत्पन्नभुगल्पभाजनोल्पायुः। अष्टकपाली चौरः क्रूरे सौम्ये च धनकलितः ।। जितना मिले उतना खानेवाला होता है, इसके पास बरतन आदि कम होते हैं, पापग्रह हो तो चोर व शुभग्रह हो तो धनी होता है। मानसागरी-गर्ग के वर्णन में अल्पभोजन व रोगी इतने शब्द अधिक जोडे हैं। नवाथेजी-यह धन की रक्षा व वृद्धि करता है, साहूकार होता है। मोघेजी-यह सुखी होता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल शुक्र व शनि के वारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

लाभेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे सहजे चित्ते तीर्थेषु तत्परो भवेत्। कुशलः सर्वकार्येषु केवलं शूलरोगवान् ।। लाभेश तृतीय या चतुर्थ में हो तो वह तीर्थयात्रा करनेवाला, सब कामों में कुशल होता है, इसे शूल रोग होता है। यवनजातक-सहजवित्तयुतश्च सुबान्धवः सहजवत्सल एव नरः सदा। सहजगे भवभावपतौ शुचिः स्वजनमित्रजनादतिलाभदः ।। यह धनवान, अच्छे भाई-बन्धुओं से युक्त, उन पर स्नेह करनेवाला, पवित्र, अपने लोगों व मित्रों से लाभ पानेवाला होता है। गर्गजातक-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ पापग्रह हो तो बन्धुओं से शत्रुता होती है इतना अधिक कहा है। मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है, शत्रु का नाश करनेवाला इतना अधिक कहा है। नवाथेजी-यह अपने पराक्रम से धन कमायेगा, भाइयों को मदद करेगा तथा स्वावलम्बी होगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल शुभ ग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

लाभेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता—इसका मत लाभेश तृतीय में होने के फलों में बता चुके हैं। **यवनजातक**—अमितजीवनयुक् पितृपंक्तियुक् तनयकर्मरतः सुभगः शुभः। सुकृतकर्मवशादतिलाभवान् सुखगते भवभावपतौ भवेत्॥ यह दीर्घायु, पिता से युक्त, पुत्र के काम को पसंद करनेवाला, सुंदर, अच्छे कामों से बहुत लाभ पानेवाला होता है। **गर्गजातक**—यवनजातक जैसा ही वर्णन है, सिर्फ समबाप्तिकारणरतः अर्थात धनलाभ के कारणों में मन लगानेवाला इतना शब्द भिन्न है। **मानसागरी**—यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ स्वधर्मरतः इतना शब्द अधिक है। **नवाथेजी**—बडी जायदाद प्राप्त करेगा, बडी इमारतें बनवायेगा, मातृभक्त होगा, हाथी-घोडे-पालकी के वैभव से संपन्न बडा जमीनदार होगा।

हमारे विचार—शनि के अतिरिक्त सब ग्रहों के बारे में कम-अधिक मात्रा में उपर्युक्त फल ठीक प्रतीत होते हैं।

लाभेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता—इसका मत लाभेश द्वितीय में होने के फलों में आ चुका है। **यवनजातक**—जनकसंयुतमातृजनप्रियः सुतगते भवभावपतौ नरः। शुभखगैर्मितभुक् सुखसंयुतः खलखगैर्विपरीतफलं लभेत्॥ शुभग्रह हो तो पिता से युक्त, माता के सम्बन्धियों को प्रिय, थोडा भोजन करनेवाला, सुखी होता है, पापग्रह हो तो उलटा फल मिलेगा। **गर्गजातक**—तनयगतो लाभपतिः पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते। तुल्यगुणौ च परस्परमतृष्णजीवी च भवति सुतः॥ पिता और पुत्र में आपस में स्नेह होता है, दोनों समान गुणवाले होते हैं, इस श्लोक के अन्तिम भाग का अर्थ अस्पष्ट है। **मानसागरी**—लाभपतिः पुत्रगतः पितृपुत्रौ स्नेहलौ मिथः कुरुते। तुल्यगुणं च परस्परं स्वल्पायुर्जायते पुरुषः॥ यह अल्पायु होता है, शेष गर्गजातक जैसा वर्णन है। **नवाथेजी**—यह विद्या प्राप्त करेगा, सन्ततिसुख पायेगा तथा ईश्वरभक्त होगा।

हमारे विचार-लोमेश का मत गुरु, शुक्र, बुध के बारे में ठीक प्रतीत होता है। पिता-पुत्र में स्नेह, यह गुरु, शुक्र का तथा समान स्वभाव होना यह रवि, शनि का फल प्रतीत होता है। अल्पायु होना यह क्वचित चन्द्र के बारे में अनुभव में आता है।

लाभेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे षष्ठभवने नानारोगसमन्वितः। सर्वसुखं भवेत् तस्य प्रवासी परसेवकः॥ यह अनेक प्रकार के रोगों से पीडित, सुखी, प्रवासी, दूसरे की सेवा करनेवाला होता है। यवनजातक-रिपुयुतोपि हि दीर्घगदी कृशश्चतुरता चतुरैः सह सम्मतः। रिपुगते भवपे च विदेशगो मरणमेव च तस्करजं भयम्॥ यह शत्रुओं से युक्त, लम्बे रोगों से पीडित, दुबला, चतुर, चतुर लोगों से सम्मानित, विदेश जानेवाला, तथा वहीं मृत्यु पानेवाला या चोरों से पीडित होता है। गर्गजातक-लाभाधिपे षष्ठगते सुवैरं सुदीर्घरोगं चतुरंगसंग्रहम्। मृति समाप्नोति च चौरहस्तात् क्रूरेच देशान्तरसंगतो नरः॥ बहुत शत्रुता, लम्बे रोग इन से कष्ट होता है, यह चार प्रकार की सेना का संग्रह करता है. पापग्रह हो तो विदेश में चोरों के कारण मृत्यु होती है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवार्येजी-मिला हुआ लाभ भी नष्ट होगा, दरिद्रता रहेगी, मित्र भी शत्रु जैसे होंगे, मामा की मदद मिलेगी।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, चन्द्र, मंगल व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

लाभेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे सप्तमे रन्ध्रे भार्या तस्य स्वरूपवान्। उदरो धनवान् कामी भूसुरो भवति ध्रुवम्॥ लाभेश सप्तम या अष्टम में हो तो पत्नी सुन्दर होती है, यह मनुष्य उदार, धनवान, कामुक तथा पृथ्वी पर देवता जैसा होता है। यवनजातक-प्रकृतिजोग्रतनुर्बहुसपदो बहुलजीवयुतो बहुशीलयुक्। खलखगैर्बहुरोगयुतो नरः शुभखगैर्बहुसौख्य-

समन्वितः ।। दिखने में उग्र होता है, धनी, दीर्घायु व शीलवान होता है, लाभेश शुभग्रह हो तो बहुत सुख मिलता है, पापग्रह हो तो बहुत रोग होते हैं । गर्गजातक-सप्तमगे लाभेशे तेजस्वी शीलसंपदः पदवी । दीर्घायु-र्भवतिनरस्तथैकदयितापतिर्नियतम् ।। यह तेजस्वी, सदाचारी, धनी, दीर्घायु तथा एक ही स्त्री का पति होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-पत्नी से धन की मदद मिलेगी तथा उसीसे भाग्योदय होगा ।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल कम-अधिक मात्रा में रवि, गुरु व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं ।

लाभेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेश सप्तम में होने के फलों में इसका मत आ चुका है। यवनजातक-बहुलरोगयुतश्च तथा शुभः खचर एवमिदं ददते फलम् । भवपती मृतिगे रिपुवृन्दतो विपुलवैरकरश्च सदा नरः ।। शुभग्रह हो तो बहुत रोग होते हैं तथा शत्रुओं से बहुत वैर होता है। गर्गजातक व मानसागरी-रोगी होना इतनाही फल बताया है। नवाथेजी-इसे गुप्त धन, लावारिस जायदाद, बिना परिश्रम का मिला धन आदि लाभ होगा ।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल चन्द्र, मंगल, गुरु शुक्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं ।

लाभेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशं गगने धर्मे राजपुत्रो धनाधिपः । चतुरः सत्यवादी च निजधर्मसमन्वितः ।। लाभेश नवम या दशम में हो तो वह मनुष्य राजपुत्र होता है, धनी, चतुर, सच बोलनेवाला व अपने धर्म का पालन करनेवाला होता है। यवनजातक-एकादशेशः सुकृते स्थितश्चेद् बहुश्रुतः शास्त्रविशारदश्च । धर्मप्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बन्धुव्रज-वर्जितश्च ।। यह बहुश्रुत, शास्त्रों का ज्ञाता, धर्मकार्यों से प्रसिद्ध

होनेवाला, देव तथा गुरु का भक्त होता है, लाभेश पापग्रह हो तो भाई आदि नहीं होते । गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसे सौभाग्य से एकदम बहुत धन मिलता है।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, मंगल, गुरु व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं ।

लाभेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-इसका मत लाभेश नवम में होने के फलों में बता चुके हैं । यवनजातक-पितरि वैरयुतो जननीप्रियः बहुलसद्धनकीर्तियुतो नरः । जननिपालनकर्मरतः सदा भवपतिर्दशमस्थलगो यदा ॥ यह पिता से शत्रुता व माता पर प्रेम करता है, धनी व कीर्तिमान होता है, माता का पालन करता है । गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ दीर्घायु होना यह फल अधिक बतलाया है । नवाथेजी-व्यवसाय करके धनी होगा व दरिद्रता दूर करेगा ।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल सिर्फ रवि व गुरु के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं ।

लाभेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता-लाभेशे संस्थिते लाभे स वाग्मी जायते ध्रुवम् । पांडित्यं कविता चैव वर्धते च दिने दिने ॥ यह बोलने में निपुण होता है, इसका पांडित्य व कवित्व दिन दिन बढता है । यवनजातक-बहुलजीवित मुग्धजनान्वितः शुभवपुः खलु पुष्टियुतः सदा । अतिसुरूपसुवाहनवस्त्रयुक् स्वगृहगे भवभावपतौ नरः ॥ यह दीर्घायु, सुन्दर व बलिष्ठ, अच्छे लोगों व वाहनों-वस्त्रों से युक्त होता है । गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ बहुत पुत्र-पौत्र होना इतना फल अधिक बताया है । नवाथेजी-इसे निरन्तर लाभ होगा, श्रीमान होकर सुख पायेगा ।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल प्रायः सभी ग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं ।

लाभेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता-प्राप्तिस्थानाधिपे रि:फे म्लेच्छसंसर्गकारकः। कामुको बहुकान्तश्च क्षणिकः कामलम्पटः ॥ यह म्लेच्छ लोगों से (विदेशियों-विधर्मियों से) सम्पर्क रखता है, कामुक व चंचल होता है, बहुत स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। यवनजातक-भवपतौ व्ययगे च खलो नरश्चपल-जीवितवित्तयुत्तो नरः। भवति मानयुतो बहुकष्टदः स्थितधनो बहुदुष्ट-मतिः खलः ॥ यह दुष्ट, अल्पायु, धनी, सन्मानयुक्त, लोगों को कष्ट देनेवाला होता है। गर्गजातक-द्वादशगे लाभेशे उत्पन्नभुगस्थितो भवति भोगी। उत्पातरतो मानी दान्तो दुःखी सदा पुरुषः ॥ यह अपने परिश्रम की कमाई खाता है, उपभोग प्राप्त करता है, उत्पात करने में रुचि रहती है, अभिमानी जितेन्द्रिय, दुखी होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है, सिर्फ रोगी व दाता होना इतना फल अधिक बतलाया है। नवाथेजी-धन जितना मिलेगा उतना सब खर्च होगा, कुबेर जैसी संपत्ति भी समाप्त हो जायेगी।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, मंगल व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

प्रकरण १४

व्यय भावेश फल

व्ययेश लग्न स्थान में

लोमेशसंहिता-व्ययेशे मदने लग्ने जायासौख्यं भवेन्न हि। दुर्बलो कफरोगी च धनुर्विद्याविशारदः ॥ व्ययेश लग्न या सप्तम में हो तो स्त्रीसुख नहीं मिलता, वह मनुष्य दुर्बल, कफरोगी तथा धनुष चलाने में कुशल होता है। यवनजातक-तनुगते व्ययभावपतौ नरः सुवचनः शुभ-रूपविदेशगः। खलजनानुरतश्च विवादयुग् युवतिभिः सहितोपि नपुं-सकः ॥ यह सुंदर, अच्छा बोलनेवाला, विदेशयात्रा करनेवाला, दुष्टों की संगति में रहनेवाला, झगडालू, स्त्रियों से युक्त हो कर भी नपुंसक

होता है। गर्गजातक-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ कुमारोऽथवा खंजः अर्थात बचपन में लंगडा होता है इतना अधिक बताया है। मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-खर्चीला, विलासी, मूर्खता से खर्च करनेवाला तथा अपने आप पर मुसीबतें लानेवाला होता है।

हमारे विचार-धनुर्विद्या के अतिरिक्त सब फल शनि, शुक्र व चन्द्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

व्ययेश धन स्थान में

लोमेशसंहिता-व्ययेशे द्वितीये रन्ध्रे विष्णुभक्तिसमन्वितः। धार्मिकः प्रियवादी च गुणैस्सर्वैः समन्वितः॥ व्ययेश द्वितीय या अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य ईश्वरभक्त, धार्मिक, मीठा बोलनेवाला तथा सब गुणों से युक्त होता है। यवनजातक-कृपणता कटुवाग् धनभावगे व्ययपतौ विकलश्च विनष्टधीः। धरणिजे विधनं नृपतस्करादपि च पापकरश्च चतुष्पदे॥ यह कंजूस, कटु बोलनेवाला, दुर्बल, बुद्धिहीन होता है, व्ययेश मंगल धनस्थान में हो तो राजदण्ड या चोरी से धन नष्ट होता है, पशुओं के बारे में पापकर्म करता है। गर्गजातक-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ पटुवागनिष्टलाभलयः इतना शब्द अधिक है। मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ सौम्ये तु निर्धनः इतने शब्द अधिक हैं। नवाथेजी-परिवार के लिए बहुत खर्च होगा, कर्ज होगा तथा मृत्युपर्यन्त वह चुकाया नहीं जा सकेगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल रवि, चन्द्र व मंगल के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

व्ययेश तृतीय स्थान में

लोमेशसंहिता-भ्रातृद्वेषी गुरुद्वेषी प्रियद्वेषी भवेन्नरः। व्ययेशे सहजे धर्मे स्वशरीरस्य पोषकः॥ व्ययेश तृतीय या नवम में हो तो वह मनुष्य केवल अपने शरीर का पोषण करता है, बाकी सब प्रियजन, भाई, गुरु का द्वेष करता है। यवनजातक-विगतबन्धुजनः खलपूजितो व्ययपतौ

सहजस्थलगे सति। धनयुतोऽपि भवेन्मनुजः क्षितौ कृपणबन्धुजनानुरतः सदा ॥ इसे भाई-बहन नहीं होते, दुष्ट लोग इस का आदर करते हैं, यह धनी, कंजुस तथा रिश्तेदारों से मिलजुलकर रहनेवाला होता है। गर्गजातक-सहजगते द्वादशपे क्रूरे गतबान्धवः शुभे च धनी। तनुसोदरः कृपणश्च बन्धुषु दूरे सदा भवति ॥ पापग्रह व्ययेश तृतीय में हो तो भाई नहीं रहते, शुभग्रह हो तो धन मिलता है, कंजूस वृत्ति रहती है, भाइयों से दूर रहना होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-भाई-बहनों के लिए धन खर्च होगा, गलत तरीकों से धन प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा।

हमारे विचार-उपर्युक्त फल सिर्फ शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं। अन्य ग्रहों का ऐसा अनुभव नहीं आता।

व्ययेश चतुर्थ स्थान में

लोमेशसंहिता-व्ययेशो तुर्यगो यस्य पितृसौख्यं भवेन्न हि। बन्धुहीनः पुत्रहीनो द्विभार्यो मतिमान् सुखी ॥ पिता, बन्धु तथा पुत्र का सुख नहीं मिलता है, दो विवाह होते हैं, यह बुद्धिमान व सुखी होता है। यवनजातक-कठिनकर्मयुतः शुभकर्मकृत् व्ययपतौ सुखगे च सुखान्वितः। सुतजनान्मरणं च दृढव्रती दिविचरे स भवेदुपकारकः ॥ यह कठिन व अच्छे काम करता हैं, सुखी नियमों का दृढता से पालन करनेवाला, उपकार करनेवाला, प्रवास करनेवाला होता है, पुत्रसे मृत्यु होगा ऐसा फल कहा है उसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है। पुत्र पिता को हत्या करेगा यह फल इस योग पर कैसे बताया होगा यह समझना मुश्किल है। गर्गजातक-तुर्यगते व्ययनाथे कृपणो रोगोज्झितः सुकर्मा च। मृतिमाप्नोति हि सुततः सततं मनुजो महादुःखी ॥ यह कजूस, नीरोग, अच्छे काम करनेवाला, हमेशा दुखी व पुत्र से मृत्यु प्राप्त करनेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी-इसके रिश्तेदार धन का नाश करते हैं, भाई-घोड़ों के व्यापार में भी धननाश होता है।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल रवि, मंगल, शुक्र व शनि के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

व्ययेश पंचम स्थान में

लोमेशसंहिता–व्ययेशो पंचमे यस्य पितृवित्तं सुखं न हि। पत्नीपुत्र-विरोधी च न सुखं मातृगृहे तथा ॥ इसे पिता से धन नहीं मिलता, पत्नी तथा पुत्र विरोध करते हैं, माता के घर में सुख नहीं मिलता, यह सुखी नहीं होता। यवनजातक–तनयगेऽपि खलस्तनयो भवेत् व्ययपतौ तनुतेऽथ खलान्विते। शुभखगैऽतिशुभं पितृकं धनं भवति चापि समर्थ-तयान्वितः ॥ व्ययेश पंचम में पापग्रहयुक्त हो तो पुत्र दुष्ट होते हैं, शुभग्रह हो तो पिता का धन व शुभ फल प्राप्त होता है, सामर्थ्य प्राप्त होता है। गर्गजातक–यवनजातक जैसा वर्णन है सिर्फ अन्त में समर्थता-रहितः स पुरुषः यह उलटा फल बताया है। मानसागरी–यवनजातक जैसा वर्णन है तथा क्रूरे सुतवर्जितः शुभे ससुतः अर्थात पापग्रह होने पर पुत्रहीन व शुभग्रह हो तो पुत्रयुक्त होता है इतना अधिक बताया है। नवाथेजी–यह बुद्धि का दुरुपयोग करेगा, इसके पुत्र पैसा अनापशनाप खर्च करेंगे।

हमारे विचार–लोमेश व नवाथेजी का वर्णन पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होता है, शेष लेखकोंने शुभ व पाप ग्रहों का फल अलग बताया ही है।

व्ययेश षष्ठ स्थान में

लोमेशसंहिता–व्ययेशेऽरिव्यये पापी मातृमृत्युविचिन्तकः। क्रोधी सन्तानदुःखी च परजायासु लम्पटः ॥ व्ययेश षष्ठ या व्यय में हो तो वह मनुष्य पापी, क्रोधी, परस्त्रियों में आसक्त, सन्तान के कारण दुखी व माता की मृत्यु चाहनेवाला होता है। यवनजातक–व्ययपतौ रिपुगे कृपणः खलः खलखगे नियतं नयनामयम्। परगृहाश्रयिणो भृगुपुत्रतो गतसुतः शुभबुद्धियुतो भवेत् ॥ यह कंजूस, दुष्ट, आंखों के रोग से पीडित, दूसरे के घर रहनेवाला होता है, व्ययेश शुक्र हो तो बुद्धि अच्छी होती है किन्तु

पुत्र नहीं होते। गर्गजातक व मानसागरी–यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी–शत्रु, चोर व नौकरों से धन नष्ट हो कर दरिद्रता प्राप्त होती है।

हमारे विचार–लोमेश व नवाथेजी के मत पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं। शेष लेखकों ने शुभ व पाप ग्रहों के मत अलग बताया ही है।

व्ययेश सप्तम स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत व्ययेश लग्न में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–भवति दुष्टमतिश्च गृहाग्रणीः कपटदुष्टदुराचरणः खलः। खलखगे मदगे व्ययभावपे गणिकाधनवान् कुधीः॥ व्ययेश पापग्रह सप्तम में हो तो वह मनुष्य दुष्टबुद्धि व कपटपूर्ण दुष्ट आचरण करनेवाला होता है, यह घर में प्रमुख होता है तथा वेश्या से धन पाता है। गर्गजातक- द्वादशपे सप्तमगे दुष्टो दुश्चरितः कपटवचनः। क्रूरे स्त्रीरहितः स्यात् सौम्ये क्षयमेति गणिकातः॥ व्ययेश पापग्रह सप्तम में हो तो वह मनुष्य दुष्ट, दुराचारी, कपटपूर्ण बोलनेवाला एवं स्त्रीरहित होता है, शुभग्रह हो तो वेश्या से नाश होता है। मानसागरी–गर्गजातक जैसा वर्णन है सिर्फ अन्त में अपनी पत्नी से नाश होता है इतना वर्णन भिन्न है। नवाथेजी–कोर्ट-कचहरी के काम, वादविवाद, लडाई तथा कामुकता की पूर्ति में धन का व्यय होगा, पत्नी ऐश–आराम चाहनेवाली व खर्चीली होगी।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल मंगल गुरु व शुक्र के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं किन्तु केवल व्ययेश सप्तम में होने से इतने कटु फल नहीं मिलते, उस के साथ शनि या राहु दूषित करनेवाले हों तो ये फल मिलते हैं।

व्ययेश अष्टम स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत व्ययेश धनस्थान में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक–निधनगे व्ययपेऽष्टकपालकः सकलकार्यविवेक-

विवर्जितः। भवति निन्दित एव तथा शुभे दिविचरे धनसंग्रहतत्परः ।। यह आठ टुकडों पर पलनेवाला, सभी विचारों से हीन व निन्दित होता है, व्ययेश शुभग्रह हो तो यह धनसंग्रह करने में तत्पर होता है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक के समान वर्णन है। नवाथेजी-यह जुआरी होगा, अविचार से एकदम धन नष्ट होगा।

हमारेविचार-लोमेश का मत शुभग्रहों के बारे में तथा अन्य लेखकों का मत पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होता है।

व्ययेश नवम स्थान में

लोमेशसंहिता-इस का मत व्ययेश तृतीय में होने के फलों में आ चुका है। यवनजातक-सुकृतकृत् व्ययपे नवमाश्रिते वृषभगोमहिषीद्रविणः सुधीः। भवति तीर्थविचक्षणपुण्ययुक् खलखगेऽपि च पापरतो नरः ।। यह अच्छे काम करता है, गाय, बैल, भैंस यह धन इस के पास होता है, बुद्धि अच्छी होती है, तीर्थ यात्रा कर पुण्य प्राप्त करता है, किन्तु व्ययेश पापग्रह हो तो पापकार्यों में बुद्धि प्रवृत्त रहती है। गर्गजातक व मानसागरी-यवनजातक जैसा वर्णन है। नवाथेजी-परोपकार व कीर्ति प्राप्त करने में धन खर्च होगा, सब सपत्ति धर्मकार्यों में खर्च होगा।

हमारे विचार-लोमेश व नवाथेजी के वर्णन पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं। शेष लेखकों ने शुभ व अशुभ ग्रहों के फल अलग बताये ही हैं।

व्ययेश दशम स्थान में

लोमेशसंहिता-व्ययेशे दशमे लाभे पुत्रसौख्यं भवेन्नहि। मणिमाणिक्यमुक्ताभिर्धनं किंचित् समालभेत ।। व्ययेश दशम या लाभ में हो तो पुत्रसुख नहीं मिलता, हीरे, जवाहरात, मोती आदि के रूप में कुछ धन मिलता है। यवनजातक-सुतयुतो धनसंग्रहतत्परः परजनानुरतः परकार्यकृत्। व्ययपतौ दशमे जननीखलो भवति दुर्वचनानुरतः सदा ।। यह पुत्रयुक्त, धनसंग्रह में तत्पर, दूसरों का काम करनेवाला, दूसरों का अनुसरण

करनेवाला, माता से दुर्व्यवहार कर बुरे शब्द बोलनेवाला होता है। गर्गजातक–व्ययपे गगनगृहस्थे पररमणीपराङ्मुखः पवित्रांगः। सुतधन-संग्रहनिरतो दुर्वचनपरा भवति माता ॥ यह परस्त्री से दूर रहनेवाला, पवित्र, पुत्रयुक्त, धनसंग्रह करनेवाला होता है, माता दुर्वचन बोलती है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–व्यवसाय में पैसा खर्च होकर अडचन में फंसेगा।

हमारे विचार–लोमेश व नवाथेजी का वर्णन पापग्रहों के बारे में व शेष लेखकों का वर्णन शुभ ग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होता है।

व्ययेश लाभ स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत व्ययेश दशम में होने के फलों में बताया है। यवनजातक-धनयुतो बहुजीवितयुक् पुमान् न च खलः प्रमदश्च उदारधीः। व्ययपतौ भवगे सति सत्यवाक् सकलकार्यकरः प्रियवाग् भवेत् ॥ यह धनी, दीर्घायु, सदाचारी, खुशमिजाज उदारबुद्धि, सच बोलनेवाला, सब काम करनेवाला, मीठा बोलनेवाला होता है। गर्गजातक–यवनजातक जैसा वर्णन है, सिर्फ अपने स्थान में श्रेष्ठ व प्रसिद्ध होना इतना फल अधिक बताया है। मानसागरी–गर्ग जैसा वर्णन है। नवाथेजी–इसे बडे लाभ नहीं होते, मित्रों के कारण संकट आते हैं।

हमारे विचार–लोमेश व नवाथेजी के मत पापग्रहों के बारे में तथा शेष लेखकों के मत शुभग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं।

व्ययेश व्यय स्थान में

लोमेशसंहिता–इस का मत व्ययेश षष्ठ में होने के फलों में बताया है। यवनजातक–भवति बुद्धियुतः कृपणः खलः परनिवासरतः स्थिरकार्य-कृत्। पशुजनैश्च रतो बहुभोजनो व्ययपतौ व्ययगे सति मानवः ॥ यह बुद्धिमान, कंजूस, दुष्ट, दूसरों के घर रहनेवाला, पशुओं को चाहनेवाला, खूब खानेवाला होता है। गर्गजातक–विभूतिमान् ग्रामनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिः पशुसंग्रही च। चेज्जीवति ग्रामयुतः सदा स्यात् व्ययाधिनाथे

व्ययगेहलीने ॥ धनवान, गांव में रहना चाहनेवाला, कंजूस, पशुओं का संग्रह करनेवाला, जीवित रहा तो हमेशा गांव में रहनेवाला होता है। मानसागरी-गर्ग जैसा ही वर्णन है। नवाथेजी–स्त्रीसुख के लिए धन बहुत खर्च होगा, बुरी आदतों से या मूर्खता से दरिद्रता आयेगी।

हमारे विचार–उपर्युक्त फल पापग्रहों के बारे में ठीक प्रतीत होते हैं। कंजूस होना यह गुरु के बारे में ठीक मालूम होता है।

इस प्रकार पुरातन लेखकों के भावेश–फलों का वर्णन किया। इन में कई वर्णन विसंगत व परस्पर विरुद्ध भी हैं। अपने विवेक से पाठक इनमें से सही फल कौन से हैं यह देखें। प्रारंभ में ग्रहों के कारकत्व के आधार पर हमने इस प्रकार का कुछ विवेचन किया भी है। विस्तारभय से हमारे अनुभव का विवरण नहीं दिया है।

॥ इति ॥

हरएक ज्योतिषी और ज्योतिषी शास्त्रके अभ्यासकों के लिये अत्यंत उपयुक्त ग्रंथ । इन सब ग्रंथोंके बिना ज्योतिष-शास्त्रका ज्ञान अधूरा रहता है ।

सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष-ग्रंथ

लेखक—स्व. ज्योतिषी ह. ने. काटवे

रवि—विचार	२—००	गोचर—विचार	३—५०
चन्द्र—विचार	२—००	शुभाशुभ ग्रह—निर्णय	३—५०
मंगल—विचार	२—५०	योग—विचार १ ला	१—००
बुध—विचार	२—००	योग—विचार २ रा	३—५०
गुरु—विचार	२—५०	योग—विचार ३ रा	२—००
शुक्र—विचार	२—५०	योग—विचार ४ था	१—२५
शनि—विचार	२—५०	योग—विचार ५ वा	२—२५
राहू केतू—विचार	३—५०	योग—विचार ६ वा	३—००
भाव—विचार	३—५०	योग—विचार ७ वा	२—५०
भावेश—विचार	४—००	अध्यात्म-ज्यो.—विचार	१०—००

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर—१.